विमर्श

; आलेखसंग्रह द्ध

नन्दलाल भारती

।। जनतांत्रिक चेतना सामाजिक परिवर्तन का द्योतक ।।

लोकतान्त्रिक व्यवस्था का दुरूपयोग कर कुछ सफेदपोश भले ही अपना हित साधने में कामयाब हो रहे हो परन्तु इस व्यवस्था में समाज एवं समाज के नीचले तबके अर्थात शोपित/पीडित वर्ग और देश की सेवा का भाव केन्द्रित हैं । जननायक चाहे वह किसी भी पार्टी का प्रतिनिधित्व करता हो पर उसकी अर्न्तरात्मा में देश और जन सेवा का भाव होता हैं। यह भाव जनतान्त्रिक चेतना का ही जीवन्त उदाहरण है,कुछ अपवाद हो सकते हैं ।जननायक के माध्यम से समाज के उच्च वर्ग से लेकर अतिनिम्न वर्ग जनतान्त्रिक चेतना का संचार होता हैं और इसी जनतान्त्रिक चेतना के सोधेपन की छांव में देश और समाज तरक्की के सोपान चढता है । जनतान्त्रिक चेतना के कारण आवाम में आत्म विश्वास बढा है ।जनतान्त्रिक चेतना का असर आज हर क्षेत्र में दिखाई पड रहा है चाहे सामाजिक हो ,आर्थिक हो या राजनीतिक।जातीय भेद की दीवारे गिराकर मानवीय सम्बन्धों में जो अपनापन का भाव जागा है वहह जनतन्त्र की देन है । जनतान्त्रिक चेतना से होकर ही दुनिया की सारी तरक्कियों का रास्ता गुजरता है । जात –पात की मजदूर दीवारों में टूटन ,सामन्तवादी व्यवस्था का नाश बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के भाव का श्रेय जनतांत्रिक चेतना को ही जाता है ।

वर्तमान में राजनैतिज्ञ स्वार्थवस यह भावना आहत हुई है।इसके बाद भी जनतान्त्रिक चेतना सामाजिक परिवर्तन का कारण बन रही है ।जातीय वोट बैंक में टूटन,सवर्णो और अवर्णो के बीच रोटी – बेटी का रिश्ता जनतान्त्रिक चेतना की महान उपलब्धियों में गिना जाना चाहिये । जिस जातिवाद के अमानवीय भेद के कारण अश्पृश्यता जैसा व्यवहार होता था । आज निकटता आ रही है । सर्वसमानता एवं मानवता की बात होने लगी है ।जनतान्त्रिक चेतना सामाजिकं परिवर्तन के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हो रही है । जनतान्त्रिक चेतना का शंखनाद प्रिण्ट,इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं साहित्य बखूबी कर रहे है परन्तु अभी बहुत कुछ करनाश्शेप है । जनतान्त्रिक चेतना का प्रभाव गांव से लेकर शहर तक देखे जा सकते है । बांस और अधीनस्थों के बीच निकटता, मालिक मजदूरो के बीच सौहार्द पूण वातावरण एवं सामाजिक बुराईयों पर कुठराघात जनतान्त्रिक चेतना का ही प्रतिफल है । कुछ समय पूर्व जो लोग आपस में बैर भाव रखते थे वे अपने को बांटने का सुख भोग रहे हैं । मानवता को ही धर्म मानने लगे है । आत्मविश्वास और समझदारी से हर क्षेत्र में छोटे बडे साथ साथ चल रहे है ।
गांवों में आधुनिक सुविधायें प्राप्त हो रही है ।अस्पताल,कालेज/प्राद्यौगिक कालेज तक खुलने लगे है ।गांव गांव में सामुदायिक केन्द्रों का निर्माण आधुनिक कृपि यन्त्रों का उपयोग, छोटे बडे का एक साथ बैठना,छोटा परिवार सुखी परविार के भाव का उदय ,गरीबी उन्मूलन,बेरोजगारों को काम एवं बेरोजगारी भत्ता जनतान्त्रिक चेतना के कारण सम्भव हुआ है । जनतान्त्रिक चेतना का क्षेत्र बहुत विस्तुत हो गया है ।जरूरत है खुले एवं निश्पक्ष भाव से काम करने की तभी जनतन्त्र को मजबूत बनाया जा सकता है ।देश समाज के विकास को देखते हुए जनप्रतिनिधियों की जिम्मेदारी और बढ जाती है । देश और समाज को तरक्की के राह पर बहुत दूर तक जाना है अभी तो शुरूआती दौर है ।कई क्षेत्रो में हम बहुत पीछे है ।जरूरत है स्वार्थ से उपर उठकर काम करने की । जिन मनुप्यों का लोग मनुप्य नही समझते आज उन्हे समानता का एहसास होने लगा है पर अभी भी वे बहुत दूर है ।सच है जनतांत्रिक चेतना परिवर्तन का द्योतक है।जनतान्त्रिक चेतना से हर उत्थान सम्भव है परन्तु हमें दृढ प्रतिज्ञवान होना होगा ।
नन्दलाल भारती

।। अहंकार की कांट समाज की फांस ।।

आचरण और आन्तरिक चिन्तन व्यकितत्व का प्रकाशपुंज होता है। यही व्यक्ति को निर्भीक शक्तिशाली मानवतावादी और परमार्थी बनाता है तथा मन वचन और कर्म को उच्चता प्रदान कर देवत्व के करीब ला खडा कर देता है । सद्भाव से आदमियत गौरान्वित होती है ।दूसरी ओर अहंकार का भाव जीवन को अभिशापित

कर देता है । मैं ही बडा हूं । मैं ही श्रेप्ठ हूं । मेरे बिना देश और दीनहीन समाज का उध्दार नही हो सकता ।आदमी घमण्ड के बशीभूत होकर शोपण उत्पीडन पर उतारू हो जाता है । अपने लोगो का हित अपना हितएअपने इर्द गिर्द घुमने वालो और अपने सगे सम्बन्धियों को विशेप रियायत । दूसरें लोगो और कमजोर के श्शोपण,जुल्म और दमन आदि व्यवहार आदमी के व्यक्तित्व के पतन का पतन का परिचायक होता है ।अहंकार से व्यवहार और आत्मा की पवित्रता का भी विनाश हो जाता है ।अभिमान की कांट समानता की फांस देश और समाज दोनो के लिये हानिकारक है । विपरीत समय आने पर अभिमान काम नही आता है ।चाहे व्यक्ति कितने ही बडे ओहदे पर क्यों ना आसीन हो अथवा कितनो ही बडी जातीय श्रेप्ठता न हो ।वह अपने लोगो का कितना ही भला क्यों न किया हो शोपितो उपेक्षितो के साथ अन्याय कर । वास्तव में दीनहीन गरीबों के साथ अन्याय और अपना अथवा अपनों का भला अपराध है । जिस अपराध से व्यक्ति कभी भी नही बच सकता । इतिहास गवाह है अभिमान विनाश का सूचक साबित हुआ है । आज के विज्ञान के युग में भी अभिमान की वजह से कमजोर गरीब, सामाजिक पिछडो,कमजोर वर्ग के उच्चशिक्षितों का शोपण,जुल्म और अपने लोगो को विशेप सुविधा विशेप रियायत तक दी जा रही है । पद प्रतिप्ठा के अहंकार की वजह से व्यक्ति अपनों को आबाद और दीनहीनों को तबाह कर चैन कभी नही पा सकता । उसे अहंकार के श्शोले से जलाकर राख कर देगे । जब हिटलर जैसा व्यक्ति नही बच सका तो पद दौलत और जातीय श्रेप्ठता का अभिमान कहां बचा सकता है ।पौराणिक कथाओं के अनुसार रावण ,कंस और भी बहुत अभिमानी अंहकार के शिकार हुए जिसकी वजह से उनका नाम इतिहास के काले अक्षरों में लिखा गया हैं । जिनके नाम पर आज भी दुनिया थूकती है ।

कुछ श्रेप्ठता प्राप्त अहंकारी लोग अपनी तरक्की के रास्ते में आने वाले शख्स को उखाड फेंकना चाह रहे हैं और स्वार्थबस अपने से बडे अभिमानी की चरणवन्दना करने से भी नही चूकते । इसके लिये वे हर हथकण्डे अपनाते है और अपने मतलब की पूर्ति के लिये कुछ भी करने को तैयार रहते है । व्यक्ति यह जानता है कि अहंकार,छल,प्रपंच,शोपण,जुल्म आदि अमानवीय व्यवहार जीवन यात्रा के आधार नही है । इसके बाद भी वह दीनहीन सज्जन उच्च कद वाले व्यक्तिओं का दमन कर खुद को श्रेप्ठता के सिंहासन पर प्रतिप्ठित करने की अंधी दौड में है ।

बुरे वक्त में जब अहंकार की धूप हट जाती है तब उसे भान होता है कि जो उसने दमन किया है वह फलदायी नही है । विनाश होने अथवा विनाश की

कंगार पर पहुंचने पर अहंकारी व्यक्ति को भान होता है कि उसका अहंकारी भाव जिसकी बदौलत वह दीनहीनों का श्शोपण किया वही वास्तव में उसका दुश्मन है ।हमें गरीबों दीनहीनों के कल्याण का कार्य करना चाहिये था परन्तु जब वह कल्याण के कार्य करने का सामर्थ्य रखता था तब तक तो वह स्वार्थ के लिये दमन पर उतरा हुआ था ।उसके विचार से अहंकारी दम्भी पाखण्डी और श्रेप्ठता के नाम पर कमजोर के अरमानों का दहन और उनके हको पर कब्जा उसके जीवन का आधार था । समय के करवट बदलते ही लाचार हो जाता है । आदमियत विरोधी भाव ताज्य हो जाता है । वे मुखौटा बदलने में जुट तो जाता है पर उनके घिनौना पूर्व के मुखौटे के छवि धूमिल नही होती ।वर्तमान समय में कुछ लोग सफलश्शासक बनने के लिये क्रूरता का सहारा ले रहे है । वैभवशाली ढंग से जीवन के लिये लूट्खसोट,भ्रप्ट्राचार, अहंकार दम्भ पाखण्ड, दिखावा और श्रेप्ठता के नंगे प्रदर्शन को जरूरी मानने लगे है । वास्तव में ऐसे लोग श्रेप्ठता के पात्र नही घृणा के पात्र बनने की इबारते लिखते हैं भले ही वे पद पर रहते कितनो की झूठी प्रतिप्ठा का दम्भ भर लें ।

वातावरण कितना ही जहरीला क्यों न हो । विपरीत क्यों न हो । बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का भाव रखने वाला उच्च व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति हर परिस्थितियों को सहज पार कर जाता है । वाह्य जीवन की चकाचौध परोपकारी मनुप्य का रास्ता नही रोक सकती । आत्मबल उच्च व्यक्तित्व के बल पर व्यक्ति सामाजिक दुर्बलता का शिकार बचने से बच जाता है । अहंकारी स्वभाव का व्यक्ति समाज के लिये फांस साबित होता है । अहंकारी स्वार्थी और अपनों का भला करने वाले व्यक्ति यदि काल के गाल पर अपना सुनहरे अक्षरों में नाम अंकित करने का ख्वाब पर कभी पूरा नही होता । अभिमानी व्यक्ति समाज के लिये कांट साबित हुआ है । परोपकारी समानता का पुजारी व्यक्ति ही महानता का महारथ हासिल किया है और उसी महानता को ही जगत ने स्वीकार किया है ।

नन्दलाल भारती

ग्रामीण भारत एवं शहरी भारत के बीच दूरी कम करने में लेखकों एवं प्रकाशकों की भूमिका

ग्रामीण भारत अर्थात गांव,गांव का नाम आते ही हमारे सामने कई तरह के दृश्य उभर आते हैं जिन दृश्यों में शामिल होते है गोबर से लिपे संवरे सजे घर आंगन,माटी का सोधापन,हरे-भरे खेत खलिहान,खेतों में काम करते,बोझ ढोते

गरीब मजदूर,मैदानों में क्रिकेट/गिल्ली डण्डा खेलते बच्चे, साइकिल की रिमों अथवा लोहे की गडारी पगडण्डियों पर दौडाते बच्चे,महाजनी ब्यवस्था,गरीबी,भूमिहीनता,अंधविश्वास एवं अनेक बुराईया । दूसरी तरफ श्शहर का नाम आते ही मायानगरी का बोध होता है–गगनचुम्बी इमारतें, धुआं उगलते कल कारखाने आलिशान कोठियां / सुसज्जित दफ्तर चकाचौंध और भविष्य संवारने की उम्मीद अर्थात सम्पन्नता के हर इन्तजाम । सच मायने में यही दृश्य ग्रामीण भारत एवं शहरी भारत के बीच दूरी निर्मित करते आ रहे हैं ।इस दूरी को कम करने के लिये लेखक एवं प्रकाशक सदा से प्रयासरत् है । उनकी कोशिशे भी कामयाब हुई है । सामाजिक न्याय के क्षेत्र में दिये गये योगदान को प्रेमचन्द को सदा याद किया जाता रहेगा । सामाजिक कुरीतियों और नारी श्शोपण पर आधारित उनकी रचनायें कर्तव्यबोध, समाज को जोडने एवं सदभावनापूर्ण वातावरण निर्मित करने में अहम् भूमिका निभायी हैं चाहे वह ग्रामीण भारत रहा हो या शहरी ।

ग्रामीण भारत एवं शहरी भारत के बीच दूरी का मुख्य कारण रोजगार एवं विकास कहा जा सकता है । यही कारण है कि ग्रामीण भारत शहर की ओर आकर्पित हुआ है । ग्रमीण भारत आज भी कई सुविधाओं से वंचित है । इस बारे में चिन्तन का मुद्दा लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से शीर्प से लेकर आमजन तक को दिया है । परिणामस्वरूप दूरियां कम हुई है । आजादी के दिनों में जन जागरण के लिये लेखकों ने खूब लिखा और प्रकाशकों ने आतंक के साये में रहते हुए भी प्रकाशित किया । जिसके सुखद् परिणाम आये । जातीय श्रेप्ठता–निम्नता, गरीबी –अमीरी से उपजी सामाजिक पीडा के आक्रोश को कम करने के लिये भी खूब लिखा गया है परिणाम स्वरूप विकास का रथ ग्रामीण भारत की ओर भी रूख किया है ,जिससे ग्रामीण भारत और शहरी भारत के बीच दूरी जरूर कम हुई है । ग्रामीण भारत और शहरी भारत के बीच की दूरी कम करने के लिये बहुत कुछ लिखा जा चुका है और बहुत कुछ लिखा जा रहा है बहुत कुछ शेप है। आशा है कि लेखक/नवोदित लेखक लेखन का केन्द्र बिन्दु,–नैतिकता एवं रोजगारोन्मुखी शिक्षा /ग्रामीण स्तर सूचना एवं प्रादय्ोगिक केन्द्रो की स्थापना/कल कारखानों की स्थापना को प्रोत्साहन ।–सामाजिक एवं आर्थिक न्याय /सामाजिक बुराईयों एवं जातिवाद पर कुठराघात/भूमिहीन मजदूरों को रोजगार/स्वास्थ–भ्रूणहत्या एवं बालिका विकास /नारी अधिकार/ग्रमीण भारत में रोजगार के अवसर /विकास रथ गांव की ओर कैसे बढे एवं ग्रामीण भारत और शहरी भारत के भेद की मानसिकता में बदलाव आदि विपयों को बनाये तथा प्रकाशक प्राथमिकता के आधार पर प्रकाशित करें।

उपरोक्त मुद्दो पर लेखन ग्रामीण भारत और शहरी भारत के बीच की दूरी को कम कर सकता है । परन्तु समस्या यह है कि ये साहित्य ग्रामीण भारत और

शहरी भारत के श्शीर्प से आमजन तक पहुंचे कैसे । इसके लिये सरकार को आगे आना होगा । साहित्यकार के संघर्प को स्वीकार कर उचित मूल्यांकन और उचित सहयोग भी करना होगा । पाठको को भी इस महायज्ञ में पूर्णा आहुति भी डालनी होगी तभी यह यज्ञ पूरा हो सकता है । परिवर्तन तो वैचारिक क्रान्ति से आता है। वर्तमान दौर में अन्य साधनों की घुसपैठ की वजह से जनमानस किताबों से दूर होता जा रहा है । ऐसे दौर में आवश्यक हो गया है कि लेखको के विचार उनकी रचनायें गांव गांव एवंश्शहर श्शहर तक के पाठको तक पहुंचे और आवाम के बीच चर्चा हो। कृतियों के क्रय विक्रय की जिम्मेदारी सरकारी संस्थाओं को उठानी होगी । तभी लेखकों एंव प्रकाशकों का परिश्रम फलीभूत हो सकता है ।

यथार्थ के धरातल पर भारतीय अस्मिता जो हमारे देश के धर्म आध्यात्म,योग विज्ञान और साहित्य के रूप में विराजमान है उस पर अफसोस करने की बजाय गर्व करना चाहिये । अभी भी उम्मीदों का सोता सूखा नही है । आवश्यकता इस बात की है कि हम शिक्षा पध्दति में बदलाव,सामाजिक समानता,गरीबी उन्मूलन आदि मुद्दों पर कलम चलाये तो यकीनन देश और समाज को लाभ पहुंचेगा । अंधियारा चाहे जितना भी गहरा क्यों न हो वह सुबह जरूर आयेगी ।

दूरियां चाहे जैसी भी इन दूरियों को जन जागरण के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है । यह कार्य लेखक बखूबी करते आ रहे है । लेखक समय का पुत्र हैं ,सृजनकार हैं ,प्रकाशक मूर्तिकार है और पाठक प्राण प्रतिप्ठा करने वाला।

लेखक और प्रकाशक ग्रामीण भारत और शहरी भारत के बीच सेतु का काम करते आ रहे है और भविप्य में करते रहेंगे । बदलते समय में लेखको एवं प्रकाशको की भूमिका को और अधिक महत्व दिया जाना चाहिये।

दूरी आदमी आदमी के बीच हो, प्रान्त और प्रान्त के बीच हो या देश –देश के बीच है फलदायी तो नही हो सकती ।दूरी की अर्न्तरात्मा में कुण्ठा है। बाधा है। रूकावट है सामाजिक उत्थान की राह में आर्थिक उत्थान की राह में और नैतिक उत्थान की भी । स्वतन्त्रता परिपूर्ण बोध है । यह तभी सम्भव हो सकता है जब बाह्य एवं आन्तरिक एकरूपता हो, समानता हो। स्वतन्त्रता की अनेक सिसकियां आज भी जीवित है । यही दास्तान हमारी स्वतन्त्रता को मजबूती प्रदान कर रही है । कुछ ऐसी ही हैं ग्रामीण भारत और शहरी भारत के बीच की दूरियों की दास्तान है। इस दास्तान को भले ही कोई नही सुन रहा है परन्तु लेखक सुन रहा है । उन एहसासों में जी रहा है, तभी तो रचनाओं का संसार खडा कर रहा है । यकीनन वह अपने रचना संसार से देश समाज का भला कर रहा है। दूरियां वैचारिक क्रान्ति से कम की जा सकती है । इस वैचारिक क्रान्ति में सामाजिक न्याय और आर्थिक उत्थान की सद्भावना समाहित हो तो निश्चितरूप से ग्रामीण भारत और शहरी भारत के बीच दूरियां मिटेगी ।

लेखक एवं प्रकाशक सदा से देश –समाज की दूरियां कम करने का प्रयास करते रहे है । वर्तमान में ग्रामीण भारत और शहरी भारत के बीच निर्मित हो रही दीवारो को लेखक अपने लेखकीय धर्म और प्रकाशक अपने कर्म से मिटाने में कामयाब होगे । पाठको को भी अपने फर्ज से विमुख नही होना चाहिये ।

नन्दलाल भारती

।। गरीबी के लिये जिम्मेदार कौन।।

धनिखाहों की आमदनी में दिन दुनी रात चौगुनी बढोतरी और गरीबों की उसी गति से बढती दीनता को देखकर सवाल उठने लगा है कि आखिरकार गरीबों के पतन के लिये जिम्मेदार कौन है सरकार समाजिक असमानता ,खेत अथवा उद्योग धंधों के मालिक ।गरीब के घर पैदा होने वाले बच्चे को दो जुन की रूखी सूखी रोटी मय्यसर नही होती ।गरीब का बच्चा जैसे ही चलने फिरने की स्थिति में आता है तो वह भी मां बाप के साथ रोटी के लिये संघर्परत् हो जाता है ।दूसरी तरफ अमीर का बच्चा ऐश आराम में पलता है।पढ लिखकर गद्दी सम्भाल लेता है । गरीब और गरीब का परिवार दिन भर की हाडफोड मेहनत के बाद रोटी का इन्तजाम बडी मुश्किल से कर पाता है वही दूसरी ओर अमीर का बेटा दौलत का पहाड जोड लेता हैं। सफेदपोश तो और भी तीव्रगति से रिकार्ड बनाने लगे है ।ऐसी कौन सी मशीन इन पहाड खडा करने वालों के हाथ लग जाता है कि वे दौलत के पहाड पर खडा होकर मुस्कराते हैं । गरीब आमजन रोटी के लिये हाडफाड मेहनत के बाद तंगहाल बसर करने को मजबूर है । आज हमारे सामने चिन्तन एवं शोध का विपय हो गया है गरीब और भूख ।

आज के इस युग में समाज सेवा का भाव लुप्त हो रहा है । समाज सेवा का भाव वास्तव में महात्मा गांधी और डां अम्बेडकर में था । वे ही समाज सेवा के लिये जीये । बाबा साहेब ने तो सामाजिक अश्पृश्यता का जहर पीकर भी गरीबों दीन वंचितों के लिये ही जीये । उनका जीवन ही दीन वंचितों को समर्पित रहा । दुर्भाग्यबस देश और जनता की सेवा की कसम खाने वाले ही भ्रप्टाचार,घोटाला,कबूरबाजी जैसे घिनौने कार्य में लिप्त पाये जा रहे हैं ,क्षेत्रवाद फैला रहे है । एक राज्य से दूसरे राज्य में रोटी रोजी की तलाश पर रोक लगाने को उत्सुक है जबकि देश के निवासी को देश के किसी भूभाग पर बसने और रोटी रोजी कमाने का अधिकार होना चाहिये दूसरी ओर व्यापारी मिलावट ,नफाखोरी में लगा हुआ है उद्योगपति भी पीछे नही नजर आते ।दरिद्र की बढती

दरिद्रता और अमीर का खडा होता धन दौलत का खडा पहाड देखकर सवाल उठता है सही मायने में गरीबी के लिये जिम्मेदार कौन हैं और देश के गरीबों का उध्दार कैसे हो ।क्या लोकतन्त्र के पहरेदार ऐसे ही सफेद को काला करते रहेगे ।उद्योगपति,व्यापारी धन दौलत पहाड खडा करते रहेगे । सफेदपोश विदेशी बैंको में धन भरते रहेगे । क्या गरीबी को सरकार काबू में कर पायेगी ।क्या गरीबो का उध्दार प्रजातन्त्र के युग में हो पायेगा ।क्या लालफीताशाही गरीबों का साधन सम्पन्न बनाने में समर्थ होगी । क्या बेरोजगारी भत्ता और वजीफा भर से देश का युवा जीवन यापन कर पायेगा । सही मायने में गरीबी उन्मूलन में सामाजिक असमानता और आर्थिक/उद्योग/ व्यापार/धंधे का केन्द्रीकरण गरीबी को हवा देने में सहायक साबित हो रहा है । इस हवा का रूख सरकार बदल सकती है पर सरकार चलाने वाले अपने दायित्व का निर्वहन ईमानदारी के साथ देश और समाज के हित में करें ।

इन प्रश्नो पर गौर किया जाये तो उत्तर नकारात्मक मिलता है ।सच तो ये है कि गरीबी के लिये जिम्मेदार नीति ,नीति निर्धारक और सामाजिक कुव्यवस्था का मजबूत हाथ भी हैं ।गरीबी के चक्रव्यूह को सरकार तो तोड सकती है पर इस सरकार में श्शामिल लोग सबसे पहले अपना स्वार्थ देखते है ।जनता का ख्याल तो उन्हे सिर्फ चुनाव के वक्त आता है । सुक्ष्म चिन्तन किया जाये तो गरीबी के लिये हमारी सरकार काफी हद तक जिम्मेदार है क्योंकि वह भ्रप्टाचार,घोटाला,नफाखोरी मिलावट महंगाई को रोक नही पा रही है और ये आर्थिक अपराध गरीबी से उबरने नही दे रहे है । गरीब ही नही देश भी गरीबी कर्ज के दलदल में

फसता जा रहा है । सरकार को इस तरह के अपराधो पर शिकंजा कसना चाहिये । हर हाथ को रोजगार मिले ऐसे प्रावधान होने चाहिये । मालिको उद्योगपतियों को भी चाहिये कि वे गरीब मजदूरों की मदद करें । इस मदद से गरीब मजदूर का ही भला नही होगा, उद्योगपति और देश को भी लाभ होगा । मालिक लोग मजदूरो को चिकित्सा सुविधा दे,बीमा सुविधा दे। जो मजदूर अशिक्षित और खेत मालिकों के खेतो में काम कर रहे है उन्हे भी मूलभूत सुविधाये मिले और मालिक मजदूर के बीच खडी दीवार को तोडे । मजदूरों से सीधे संवाद स्थापित करे । इससे मानवीय रिश्ते को मजबूती मिलेगी और यह मजबूती उद्योग और उद्योगपति के लिये फायदेमंद साबित होगी और मजदूर अपने को अलग नही समझेगा ।वह लाभ /हानि के मुद्दो पर भी चिन्तन करेगा ।
सरकार भूमिहीन खेतिहर मजदूरों को खेती करने की जमीन उपलब्ध कराये ।पढे लिखे बेरोजगारों को छोटे बडे उद्योग धंधों की स्थापना करने एवं उनके संचालन

के लायक शिक्षा दी जाये। कमजोर वर्ग के छात्रो को छात्रवृत्ति की राशि में बढोतरी की जाये ताकि वे पढ लिख कर रोजगार धंधा में लग सके और देश की तरक्की में सहभागी बने । छात्रवृत्ति खासकर गरीब तबके शिक्षार्थियों के लिये वरदान साबित होती है । रोजगारोन्मुखी शिक्षा दी जाये ।ग्रामीण स्तर तक प्रोफेशनल्स इजुकेशन की पहुंच हो जिससे गांव के होनहार शिक्षा प्राप्त कर विकास की धारा से जुड सके ।यदि युवाश्शक्ति नव निार्मण एवं रोटी /रोजी से जुड गयी तो गरीबी का उन्मूलन सुनिश्चित है ।

समाज भूमण्डलीयकरण के युग में सामाजिक परिवर्तन में आगे आये। सामाजिक सोच में बदलाव भी गरीबी उन्मूलन में काफी हद तक मददगार साबित हो सकता है । वर्तमान युग में भी सामाजिक परिवर्तन की अत्यन्त आवश्यकता हैं । धार्मिक जातीय फंसाद भी गरीबी के लिये जिम्मेदार है,इसलिये सामाजिक समानता स्थापित हो ।चीन जैसे देश के लिये जनसंख्या अभिशाप नही है तो हमारे देश के लिये क्यों ध देश में हर क्षेत्र में सम्भावनाये विद्यमान है चाहे वे कृपि का क्षेत्र हो या उद्योग का या अन्य कोई क्षेत्र ।देश के धनाढ्यों चाहे तो गरीबी का उन्मूलन हो सकता है।इस सम्भावना पर सरकार को बारीकी से विचार करना होगा । यदि देश से गरीबी मिट गयी और सामाजिक समानता का साम्राज्य स्थापित हो गया तो आतंकवाद जैसी महामारी का खतरा भी टल सकता है ।रोजगार प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने की दशा में बन्दूक थामने वाले हाथ असामाजिक तत्वों से हाथ मिलाने वाले हाथ रोजगार अपनायेगे । बन्दूक नही थामेगे । असामाजिक तत्वों के कुचक्र के शिकार नही होगे । सामाजिक बुराईया बार बार सिर नही उठायेगी । सरकार को ठोस कदम उठाने होगे । सामाजिक एवं आर्थिक पहलूओं पर विचार मंथन के साथ राजनैतिज्ञ दृढ इच्छा श्शक्ति का भी परिचय देना होगा । यदि सरकार सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिज्ञ कारको में समन्वय स्थापित कर गरीबी उन्मूलन का महासमर नही जीत पायी तो इस आरोप से नही बच पायेगी कि सही मायने मे सरकार ही गरीबी के लिये जिम्मेदार है ।

नन्दलाल भारती

।।उपभोगवाद आदमियत पर प्रहार ।।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम् संस्कृति है । सद्भाव एवं समभाव की संवाहक है । यही से तो श्री कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया । महात्मा बुध्द ने

समता एवं मानवतावादी साम्राज्य की स्थापना किया । महावीर ने जीओ और जीने दो का संदेश दिया ।सूचना क्रान्ति के युग में दुनिया के अन्य देश एक दूसरे के निकट आ चुके । आज की दुनिया उपभोक्ता बाजार का रूप धारण कर चुकी है । हर वस्तु क्रय–विक्रय योग्य बन गयी है ।आज का मनुष्य उपभोगवादी हो गया है कबूरत बाजी करने लगा है ।बेचारे गरीब मजदूर महिलाये अत्याचार बलात्कार के शिकार हो रही है।बहुजन हिताय बहुजन सुखाय तथा यत्र नारेस्तु पूजंते,रमन्ते तत्र देवताः का भाव विलुप्त होता नजर आ रहा है । आज आदमी बस मतलब के पीछे सरपट भाग रहा है । उपभोगवाद आज आदमियत पर प्रहार करने लगा है ।

वैश्विकरण भूमण्डलीयकरण एवं सूचनाक्रान्ति के युग में आदमी सिर्फ व्यापार एवं भोग के पीछे भाग रहा है । वैश्विकरण के केन्द्र में अब आदमियत रही ही नही मानवीय संवेदनाये भी पंगु हो चुकी है। भोग विलास एवं अपसंस्कृति का आतंक जारी है ।पर्दे की बाते सार्वजनिक प्रर्दशन की हो ग रही है ।समाज में हिसां एवं अनाचार का घिनौना रूप हुंकारे भरने लगा है ।इससे युवा पीढी कुप्राभावित हुई है । सद्धर्म,सद्भाव,संस्कार,आचार विचार और संस्कृति का अवमूल्यन दिन पर दिन होता जा रहा है । ऐसे में मानवीय मूल्यों को बचाये रखना हर व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य हो गया है । जातीय/धार्मिक संकीर्णता से उपर उठकर मानवता के लिये जीने का वक्त आ चुका है । यदि अपसंस्कृति का शिकार हमारी पीढी होती रही तो संस्कारों का सोधापन खत्म हो जायेगा ।हमें सद्संस्कारों को बचाये रखने के लिये हर प्रयास करना होगा जिससे आदमियत की आत्मा आदमी में बसी रहे । अपसंस्कृति की आंधी ने हमारी पारिवारिक व्यवस्था को भी तोडा है । हमारी पारिवारिक व्यवस्था हमारी धरोहर रही है,पहचान रही है हमारे पुरखों की विरासत रही है जो सभ्य और संस्कारवान बनाती हैं ।वर्तमान युग में हमारी पारिवारिक व्यवस्था पर भी हमला हुआ हैं । अनाथालय एवं वृध्दाआश्रम खुल रहे है । जिसकी छावं में अनाथ बच्चे और मौत से जूझते बूढे लोग जीवनयापन कर रहे है । आजकल महानगरों में ही नही छोटे छोटे जिलों मे भी ओल्ड एज होम की परम्परा विकसित होने लगी है । जिनमें बहुत संस्थायें पैसा लेकर सेवाये दे रही हैं ओर कुछ संस्थायें मुफ्त में भी सेवाये दे रही है ं। आज मार्डन युग की औलादें अपने बूढे मां बाप को अपने साथ रखना पसन्द नही कर रही है ।यह पश्चिमी सभ्यता की ही देन है ।यह नही कहा जा सकता हैं पश्चिम के हर संस्कार बुरे हैं । हमें नकल करनी हैं तो अच्छाई की करनी चाहिये जो देश समाज और पारिवारिक व्यवस्था के अनुकूल हो ।

हमारी संस्कृति और पारिवारिक व्यवस्था अन्य मूल्कों की तुलना में हमें अत्यधिक गौरव प्रदान करती हैं । आज उसी पर खतरा मडराने लगा है ।पारविारिक व्यवस्था हमारी पहचान है जो हमे अधिक सभ्य एंव संस्कारवान बनाता है ।टूटती

हुई पारिवारिक व्यवस्था को ठोस बुनियाद पर प्रतिप्ठित किया जा सकता है । इस वैश्विकरण के युग में समानता और मानवीय सरोकारो का स्थापित करना होगा । तभी हम मानवता को बचाये रख सकते हैं । विश्वबन्धुत्व के भाव को पोपण कर सकते है । व्यापार और भोग के पीछे भागते रहना मानवीय संवेदनाओं से छिन्न भिन्न कर देगी ।हमारी सदा से यही पहचान रही है कि हम अपनी जडों से जुडे रहना जानते है पर आज उसी जडों पर प्रहार पारिवारिक व्यवस्था और संस्कृति से अलग करने की साजिश लगता है ।हम अपनी बुनियाद से जुडे रह कर अपने सपनो को साकार कर सकते है । हमारी पारिवारिक व्यवस्था संस्कृति और भापा हमें एक दूसरे से जोडे रखने का महामन्त्र हैं । हमें अपनी संस्कृति को बचाये रखने के लिये अपसंस्कृति का बहिप्कार करना होगा । सामाजिक असमानता के भ्रम को तोडना होगा। वर्तमान युग में यह आवश्यक हो गया है कि हम अपने बच्चों को मातृभापा,सामाजिक समानता, पारिवारिक व्यवस्था के प्रति आस्था एवं संस्कृति का बोध कराये । सच यही तो हमारी की धरोहर है। इसे बचाये रखना हमारा नैतिक कर्तव्य है ।

नन्दलाल भारती

।। असमानता–सामाजिक समरसता पर कुठराघात ।।

समतावादी एवं राप्ट्रवादी मनुप्यों के लिये सभी बराबर होते हैं ।उनके लिये जातीय अथवा धार्मिकबंदिशें महत्वहीन होती है ।उनका जीवन मानव मात्र के कल्याण के लिये होता है । समता चेतना को एकीकृत करती है और सांस्कुतिक समता जीवन के वाह्या गुणों को सामंजस्य प्रदान करती है । धार्मिक समता सहिप्णुता और उदारता को बल प्रदान करती है । सामाजिक समता साम्प्रदायिकता पर कुठराघात कर सम्मिलित सामाजिक व्यवस्था का अमृतपान कराती है । राजनीतिक समता राप्ट्रीय एवं अर्न्तराप्ट्रीय दोनो स्तरो पर श्शान्ति की स्थापना में मददगार साबित होती है । आर्थिक समता की भावना से अमीर गरीब के बीच उभर रही खाई स्वतः पट जाती है । समता का भाव मानवता को अलकृत करता है और असमानता का भाव कलंकित करता है । असमानता के भाव की वजह से ही आज दुनिया आतंक के साये में जी रही है । आतंकवादी साम्प्रदायिकता का जहर फेलाकर आवाम को एक दूसरे से लडाने का खेल खेल रहे है । साम्प्रदायिकता एकता और तरक्की की दुश्मन है । जिसकी अर्न्तरात्मा में भी बदले का भाव है मानवता का विनाश है । बंटवारे की आग है । साम्प्रदायिकता कभी भी देश और आवाम के लिये लाभकारी नही हो सकती । साम्प्रदायिकता का बहिप्कार ही समता के भावों की अभिवृध्दि है ।

दुर्भाग्य यह है कि विज्ञान के युग में भी आदमी मानवीय समानता के भाव को स्वीकार नही कर पाया है । आज आदमी कपाय–राग द्वेप मद,क्रोध उुंच नीच के जहरीले समन्दर में डूब रहा है । परिणाम स्वरूप क्षेत्रवाद,जातिवाद,विरोध हिंसक प्रवृति पैदा हो रही है । दूसरों की बुराई अपना गुणगान आज के आदमी लक्ष्य हो गया है । इस विपैले वातावरण में हमारा कर्तव्य होना चाहिये कि हम समता के भाव में अभिवृध्दि करने के लिये सार्थक पहल करे । विपमता के घोर अधियारे में जुगने बने और सदैव सामाजिक समता के लिये कार्य करे । जिस दिन सामाजिक समता का साम्राज्य हो जायेगा साम्प्रदायिकता ऐसे पिशाच का सर्वनाश स्वतः ही सम्भव है । समता के लिये हर व्यक्ति को प्रयास करना होगा त्याग करना होगा। परन्तु सच्चाई तो यह है कि व्यावहारिक जीवन में लोग किसी को धन से बडा मानते है किसी को पद से किसी को वैभव से किसी को जाति से तो किसी को भय से ।

जगजाहिर है कि कि विपमता के सभी कारण अस्थाई है । इनका अस्तित्व समय विशेप काल के लिये होता है । जबकि समतावादी दृप्टिकोण कालजयी होता है आदमी को भगवान बना देता है ।इसके उदाहरण जगत में उपलब्ध है भगवान बुध्द महावीर,साई बाबा,ईसा मसीह के रूप में ।वर्तमान युग में जरूरत हैं समता की अलख जगाने की । इसी समतावादी दृप्टिकोण के सहारे विश्वबन्धुत्व का सपना पूरा हो सकता है ।मानव मानव को एकता के सूत्र में बांधा जा सकता है ।एकता के बल पर विश्व में श्शान्ति की स्थापना की जा सकती है ।जैसाकि विदित ही है कि शान्ति व्यक्ति को साामंजस्य का वरदान देती है,बल देती है, अध्यात्म की ओर केन्द्रित करती है । श्शान्ति को सर्वोपरि स्थान प्राप्त है उुं शान्ति का जाप श्शान्ति के शिखर पर पहुंचाने का श्शंखनाद है ।शान्ति के बल पर साामाजिक समता स्थापित की जा सकती है और साम्प्रदायिकता को बहिप्कृत किया जा सकता है। समता मानव मानव को जोडने में सहायक है और मानतवा की गहना है। साम्प्रदायिकता का भाव विनाश को पोपित करता है ।साम्प्रदायितकता मानवता राप्ट्रीय एकता का विरोध है । भेद भावना का मूल कारण आडम्बर है,उन्माद है, मिथ्या है इसलिये साम्प्रदायिकता के विपधर को समाप्त करने के लिये सामाजिक समता का अचूक हथियार मील का पत्थर साबित हो सकता है ।

नन्दलाल भारती

।। लोभ दुर्गति का मायावी रास्ता ।।

लोभ का नाम आते ही राजाओ महाराजाओं ही नही साधु सन्यासियों के पतन के दास्तान जीवित हो उठते हैं । इसके बाद किसी ने किसी रूप में व्यक्ति माया के शिकार हो ही रहे है ।माया है ही ऐसी किसी को नही छोडती अपने चंगुल में जब फंसा लेती है ।आदमी को दुर्गति के लुभावने रास्ते पर ला खडा कर देती है ।लोभ मिथ्यादृष्टि प्रदान करता है,जिसके चक्रव्यूह में फंसकर व्यक्ति वर्तमान के साथ भविष्य तक तबाह कर लेता है । लोभ व्यक्ति और समाज दोनों को पतन की राह पर ले जाता है । लोभ के वशीभूत लोगो में वासना और झूठी लालसा की बाढ आ जाती है । लोभी व्यक्ति की अर्न्तरात्मा मर जाती हैं । वह चौबीसों घण्टों माया बटारेने में लगा रहता हैं । इसके लिये वह अनैतिक कार्य करने से भी नही चूकता ।लोभी प्रवृति के कारण सारा जीवन विकृत हो जात हैं ।धन बटोरने का पागलपन सवार हो जाता हैं ।वह सम्पति बढाने के सनक में विकृत जीवन जीता है ।लोभी व्यक्ति की विचारधारा भी कलुपित हो जाती है । वह सिर्फ धन वैभव को सब कुछ समझता है । रिश्तों के सोंधेपन को भी भूल जाता है । वह अपने से अधिक सम्पति,शक्ति वालों से भी जलन करने लगता है ।वह अपने अधीनस्थों का शोपण करने से भी जरा भी नही हिचकता । लोभ का वशीभूत व्यक्ति दुनिया के वैभव को हडपने का ख्वाब देखने लगता है ।सन्तोप तो उसकी चिन्तन परिधि से कोसो दूर हो जाता है। वह तो बस दुनिया भर की सम्पति जोडने की हाय हाय में लगा रहता है यह जानते हुए कि वह सम्पति के पहाड पर बैठकर भी तनिक भी आत्मिक सुखानुभूति नही प्राप्त कर सकता । जबकि उससे कही अधिक सुखानुभूति एक गरीब अपनी झोपडी में रूखी सूखी खाकर ठण्डा पानी पीकर प्राप्त कर लेता है ।

लोभ की वजह से व्यक्ति घृणाप्रद एवं निन्दनीय हो जाता है। लोक परलोक में दुर्गति का भागी बन जाता है ।सामाजिक सांस्कृति एवं धार्मिक स्तर पर भी वह अत्यन्त गिर जाता है, इसके बाद भी माया के पीछे भागता रहता है । व्यक्ति यह जानता है कि लोभ का भूत कभी आत्मिक शान्ति का सुख नही दे सकता। लोभ के मायावी रास्ते पर चलकर व्यक्ति अपना पुर्नजन्म तक भी बिगाड लेता है ।लोभ के वशीभूत होकर आदमी आत्मिक पतन कर लेता है ।वह दिन रात यही सोचता रहता है कि वह कैसे और अधिक सम्पति इक्ट्ठा करे । कैसे वह सत्ता स्थापित करे । कैसे वह उच्च पद पर आसीन हो जाये कि वह दुनिया भर के वैभव का मालिक बन जाये ।कैसे वह गरीबों का श्शोपण करे । कैसे वह भूख से तडपते बीमारी से जूझते असहायों को लूटे ।यही लोभ की दुर्गति का मायावी रास्ता तो डां.अमीत जैसे व्यक्ति को हैवान बना दिया ।वह आदमी के अवैध अंगो

का सौदारगर बन गया। लोभ की प्रवृति की आंधी इस कदर चल पडी है कि आदमी माया की गगनचुम्बी इमारत खडी करने में दुनिया भर के रिश्तों तक की बलि चढा देता है।लोभ का ही कुप्रभाव है कि देश और जनसेवा की कसम खाने वाले भी सारी कसमें तोड दे रहे हैं । ऐसा नही कि वह नही जानता है कि जड पदर्थे का लोभ अनेक विपमताओं और अव्यवस्थाओं को जन्म देता है ।

लोभ विवेक को बुरी तरह तहस नहस कर देता है ।उसकी चिन्तन/चेतना शक्ति समाप्त हो जाती है । लोभ उसे दुर्गति के मायावी राह पर खींचकर ले जाता है । लोभ ऐसी दुर्गति की राह पर ले जाकर पटक देता है कि व्यक्ति की दशा अंधेरे में दीपक के बुझने सरीखे हो जाती है जहां उसे कुछ भी नही दिखाई पडता ।वह इस बात से अनभिज्ञ भी नही होता कि दुनिया की सारी दौलते भी व्यक्ति पा लेने पर भी सन्तुप्ट नही हो सकता । कितना कठिन है लोभ जनित इच्छाओं की पूर्ति । इसके बाद भी व्यक्ति लोभ का वशीभूत होकर मायावी रास्ता पर निकल पडता है फिर कभी मुडकर नही देखता जब तक वह सामाजिक वैयक्तिक,पारिवारि,आन्तरिक,धार्मिक सांस्कृतिक एवं अन्य स्तरो पर दुर्गति को नही प्राप्त कर लेता ।यदि जीवन को सफल बनाना है तो लोभ के भाव को त्याग कर मानवीय कल्याण की राह चलना हितकर होगा वरना लोभ का भूत दुर्गति के ऐसे मायावी राह पर छोड देगा कि जहां से फिर सद्गति के किसी पगडण्डी की उम्मीद भी नही की जा सकती। आइये मानवता के लिये लोभ से दूरी बनाये रखने की श्शपथ ले ले जिससे सामाजिक वैयक्तिक,पारिवारि,आन्तरिक,धार्मिक सांस्कृतिक एवं अन्य स्तरो पर आदर्श स्थापित किया जा सके ।
नन्दलाल भारती

।। वर्णभेद उत्थान की राह मे अंगद का पांव ।।

देश में आर्यो का आगमन मूल आदिवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक पतन का कारण बना और मूल आदिवासी हेय होते गये परन्तु मूल आदिवासी देश के प्रति समर्पण भाव एवं श्रम शक्ति की वजह से समाज से पूर्ण रूप से निप्कासित नही किये जा सके । शनै –शनै वे वहिप्कृत होते गये अन्ततः एक वर्ण का निार्मण हुआ जिसे श्शूद्र का नाम दिया गया । माना जाता है कि प्रारम्भ में पूरे विश्व में तीन वर्ग ही थे । भारत में चार अस्तिव में आ गये और ये सारी व्यवस्थायें मौखिक थी । ईश्वरीय सत्ता के मजबूती के साथ ब्राह्मण नामक वर्ण श्रेप्ठता की शिखर चढता रहा और ब्राह्मण वर्ण की श्रेप्ठता को अक्षुण्य रखने को लिये श्शास्त्रो का निर्माण तीव्र गति से हुआ ।क्षत्रीय दूसरे और व्यापारी तीसरे

क्रम पर थे ।माना जाता है कि वर्ण व्यवस्था प्रारम्भ में कर्म के आधाार पर थी । धीरे धीरे यह कर्म आधारित व्यवस्था जन्म आधिारित होने लगी और चौथे वर्ण अर्थात शूद्र की दुर्दशा प्रारम्भ हो गयी और अहम्,दुराग्रह,कर्मकाण्ड,चातुर्य और भेदभाव की आग भयावह रूप धरने लगी । यह आग मूल आदिवासियों को अस्तित्व को जलाने में जुट गयी । भारत के मूल आदिवासी गुलामों के पर्यावाची होकर रह गये ।मूल आदिवासियो के दमन में वर्ण व्यवस्था आधारित धार्मिक सत्ता ने आग मे घी डालने का कार्य किया ।वर्ण व्यवस्था धीरे धीरे वर्ग व्यवस्था का रूप अख्तियार करने लगी । शूद्रों के दमन और अन्य वर्गो की सुरक्षा के लिये नये नये श्शास्त्रों का अभ्युदय होने लगा ।राजा ईवरीय सत्ता हैं,ब्रहमण देवता है। छोटा –बडा,अमीर गरीब,राजा–रंक ईश्वर की इच्छा है ।सन्तोप और धर्म से काम लो । कर्मपूजा है ।तकदीर का लिखा है ।शूद्र नीच अछूत है । श्शूद्रो को भगवान ने सेवा करने के लिए बनाया है ।शूद्र उत्पादन करने के लिये है बाकी अन्य वर्ग उपभोग के लिये है अर्थात श्शूद्रों के शोपण, जुल्म का ईश्वरीय विधान तैयार हो गया । जिसका भरपूर फायदा तीनो वर्गो ने उठाया । आदमी को पशुता की श्रेणी में लाकर खडा कर दिया ।उसे अछूत बना दिया ।आर्थिक तरक्की के भी उसके रास्ते बन्द कर दिये गये ।उसका धन संग्रहण पाप की श्रेणी में आ गया ।

भारतीय समाज में अन्य तीनो वर्णो ने ईश्वरीय सत्ता,धर्म श्शास्त्र,दर्शन और पुराने श्शास्त्रों की आड में बहुसंख्यक श्शूद्र वर्ण का भरपूर दोहन शोपण जुल्म किया, आतंकित कर राज किया । किसी को हिम्मत थी नही कि वह श्शास्त्रों पर अंगुली उठाये ।शूद्रों के श्शोपण को अपना जन्म सिध्द अधिकार मान लिया ।धर्म श्शास्त्रों के आगे सारे चिन्तन थम गये । शूद्रो की सारी तरक्की रूक गयी ।वे उत्पादक होकर भी रोटी के मोहताज हो गये ।देश की गुलामी भी इसी वर्ण व्यवस्था की देन है ।जब देश पर चहुंओर से आक्रमण हो रहा था तब ताकत क्षीण हो चुकी थी ।रक्षा करने वाला वर्ण आक्रान्ताओं का मुकाबला नही कर रहा था और न ही अन्य वर्ण साथ दे रहे थे ।कोई नृप होय हमें का हानि का पालन करते हुए जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था के पोपको ने अपनी धरती सौप दी ।शूद्र गंवार ढोल पशु नारी ये ताडन के अधिकारी के हेय वाक्य ने और अधिक यौवन पा लिया ।शूद्रो का श्शोपण अब मकसद हो चुका था । ब्राहमणवाद,राजाओ,महाराजाओ जमींदारों की अय्याशी के कारण किसी भी वर्ण की सहानुभूति शूद्रो के साथ न थी । देश गुलामी की जंजीर में जकडता चला गया और शूद्रो पर अत्याचार का शिंकजा कसता ।राजा संरक्षक थे यह मात्र खुशफहमी थी बाकी कुछ भी नहीं । इसके लिये जन्म आधारित वर्णव्यवस्था ही जिम्मदेार थी ।

ऐसा नही कि वर्ण व्यवस्था के विरोध में आवाजे नही उठी–रविदास,कबीर ,स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं अन्य सन्तो ने भी वर्ण व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाया था ।भगवान बुध्द का जीवन ही समता के लिये समर्पित रहा ।भगवान महावीर ने भी वर्ण व्यवस्था के खिलाफ शंखनाद किया ।डां.अम्बेकर भी आजीवन वर्णव्यवस्था के खिलाफ संघर्परत् रहे ।महात्मा गांधी की अगुवाई में पहली बार भररतीय बिखण्डित समाज एक होकर आजादी की लडाई लडा और सफल भी हुआ । अपना देश अपना संविधान का सपना साकार हुआ पर जातिवादरूपी अंगद का पांव नही सरका ।

वर्तमान युग में आवश्यक हो गया है कि वर्ण भेद के पिशाच को नेस्तानाबूत किया जाये । कर्म अधारित व्यवस्था को आधार बनाकर ही देश और समाज की उन्नति सम्भव है । जन्म आधारित व्यवस्था ने देश समाज और भारतीय दर्शन को भी छला है । पुराने वर्ण भेद आधारित शास्त्रों की दुहाईयों ने चिन्तन और तरक्की को बाधित किया है । प्रजातन्त्र के प्रहरी भी इससे अछूते नही है । वर्तमान में भी वर्ण भेद की आड में दोहन शोपण और जुल्म हो रहा है ।जब तक वर्ण –भेद समाप्त नही होगा उत्थान की राह मे अंगद का पांव दीवार बना ठहाके मारता रहेगा । वर्ण भेद की आग को काबू में करने के लिये जरूरत है नये दर्शन के पौध रोपने की जिससे कर्म आधारित नये युग का निर्मण हो सके । वर्ण–भेद एक ऐसी व्यवस्था है जो सामाजिक आर्थिक और राप्ट्रीय एकता के लिये बाधक बनी हुई है। देश –समाज का भला चाहने वालो आओ अंगदरूपी भेदभाव के पांव को उखाड फेंकने लिये दृढ प्रतिज्ञ होवे।

नन्दलाल भारती

।। धर्म निर्पेक्षता–जाति निर्पेक्षता क्यों नहीं।।

वर्तमान युग संचार क्रान्ति भूमण्डलीयकरण और विज्ञान का अर्थात दुनिया के सिमट कर एक होने का युग हो गया है। दुनिया के लोग आपस में समरसता का व्यवहार करें,यह जरूरी है विश्व बन्धुत्व और विश्व शान्ति के लिये , परन्तु धर्म निर्पेक्षता के प्रचार प्रसार की राजनैतिज्ञ होड ने देश की जातीय निर्पेक्षता को जैसे बिसरा दिया है । सर्वविदित है कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था वर्ण/वर्ग भेद आधारित है । इस व्यवस्था में छुआछूत,भेदभाव कू है । जिससे देश और भारतीय और कुरीतियों का जंजाल समाहित है,जो देश और समाज की प्रतिप्ठा पर बदनुमा दाग है । बार बार जातीय वैमनस्ता पर कोहराम उठने के बाद भी जाति निर्पेक्षता का ईमानदारी पूर्वक शंखनाद नही हो रहा हैं । जहां देखो वही धर्म निर्पेक्षता के राग अलापे जा रहे है । इसके बाद भी धर्म के नाम पर जो कुछ

हो रहा है,सभी जान सुन रहे है । आखिर धर्म निर्पेक्षता के खोखले राग से क्या भला होगा । धर्म निर्पेक्षता का व्यवहार दैनिक व्यवहार में लाने की जरूरत है न कि ढोल पीटने की । इसके पहले भारतीय समाज में जरूरत है जाति निर्पेक्षता की। समानता की। आपसी भाईचारे की । सामाजिक एकरूपता की ।जातिविहीनता की । धर्म निर्पेक्षता की राग अलापने वाले जब तक जाति निर्पेक्षता का परचम नही फहराते है तब तक धर्म निर्पेक्षता की बात करना हवा में तीर चलाने जैसा ही होगा ।कब तक भ्रम में जीते रहेगे । भ्रम कब टूटेगा ।

हमारे पास संस्कृति,सभ्यता,सद्भाव,बन्धुत्वभाव,सर्वधर्म समभाव,अनेकता में एकता आदि कहने को बहुत कीमती शब्द तो है पर वास्तविकता के पटल पर पत्थर साबित होते हैं। इन कीमती श्शब्दों की प्राण प्रतिप्ठा करने वाले लोग ही नही सामने आते । किसी न किसी स्वार्थ की वजह से बस हल्ला कर रहे हैं चारित्रिक रूप से अमल् नही हो रहा है । ऐसा ढिढोरा पीटने से क्या भला होगा देश समाज का ।यहां कथनी और करनी में साफ साफ अन्तर नजर आ रहा है । यदि शब्दों की प्राण प्रतिप्ठा हुई होती तो आदमी के बीच लकीर खींचने वाला शब्द जातिवाद यौवन मे न होता । सर्वसम समभाव एवं जाति विहीनता का उद्गार होता । जन्म आधारित जांतिपांति वाली व्यवस्था का ताण्डव न होता । इसकी जगह कर्म आधारित व्यवस्था की मधुर ध्वार्नि अवश्य गूंजती । दुर्भाग्यबस आज मतलब की दुनिया मे सुर में सुर मिलाया जा रहा है वास्तविकता से कोसों दूर बैठकर । अभी भी वक्त है सत्ताधीशों के पास जो धर्म निर्पेक्षता की बात चिल्ला चिल्लाकर कर तो रहे है पर कर कुछ नही रहे है । कर भी रहे है तो सिर्फ सत्ता हथियाने के लिये।इसका प्रमाण देश का जातिवाद है। जातिवाद का दंश झेल रही जनता के साथ न्याय तो नही कहा जा सकता । देश के सामाजिक बिखण्डन को एकता के सूत्र में जोडने में असफल हो जाने के बाद धर्म निर्पेक्षता का दामन थाम लिया है ।

धर्म निर्पेक्षता का विरोध मकसद नही है । सवाल ये है कि जो लोग आज धर्म निर्पेक्षता की बात कर रहे है वे जाति निर्पेक्षता/सामाजिक समानता स्थापित किरने के लिये कतने खरे उतरे है जाति बिरादरी से उपर कर । अपने देश में जाति निर्पेक्षता धर्म निर्पेक्षता से पहले आवश्यक है । जाति निर्पेक्षता के बिना धर्म निर्पेक्षता कैसे सम्भव है ध जो लोग जाति निर्पेक्षता के धरातल पर खरे नही उतर रहे है ।क्या वे धर्म निर्पेक्षता के साथ न्याय कर पायेगेध जो लोग जाति के नाम पर भेदभाव करते है । क्या वे धर्म निर्पेक्षता के साथ न्या करेगें , क्या अपने घर में अंधेरा के साम्राज्य की स्थापना कर दूसरों के घर रोशन किया जा सकता है ध क्या खुद दर्द से कराहते हुए दूसरें का दर्द हरा जा सकता है घ्कहने को तो

हां कहा जा सकता है पर सच्चाई इससे कोसों दूर होती है । यदि सच्चाई भिन्न न होती तो भारतीय समाज सामाजिक असमानता का जहर न पीता ।

धर्म निर्पेक्षता विश्वन्धुत्व भाव की स्थापना के लिये बहुत जरूरी है । धर्म निर्पेक्षता अर्न्तराष्ट्रीय एकता की स्थापना के लिये मील का पत्थर साबित हो सकती है ।इसके पहले राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समानता को भी समझना होगा ।जातीय भेदभाव के चक्रव्यूह को तोडना होगा ।जो सत्ता इंसान को तोडती है वह अंधेरे की सत्ता होती हैं और ऐसी ही है हमारी जातीय सत्ता ।जाति निर्पेक्षता और धर्म निर्पेक्षता जैसे कीमतीश्शब्दों की प्राण प्रतिप्ठा करनी होगी । इस प्राण प्रतिप्ठा के बीच जातिवाद की लकीर खींचना फलदायी नही होगा । मानवता के साथ न्याय और मानव को मानव होने का हक देने का संकल्प यदि सच्चे मन से लिया है तो भारतीय समाज में धर्म निर्पेक्षता के पहले जाति–निर्पेक्षता की स्थापना करना ही होगी तभी धर्म निर्पेक्षता के साथ न्याय होगा और जातिवाद का दंश झेल रहे भारतीय समाज के साथ भी ।

।। नन्दलाल भारती ।।

।। सच तो ये है कि आज भी आदमी अछूत है।।

भारतीय समाज की नींव जातीयता के आधार स्तम्भ पर खडी है,जिसकी चूलें तो हिल चुकी है पर सामाजिक कुव्यवस्था का आतंक आज भी विराजमान है समाज में ।दफ्तर के कोने में भी । साामाजिक बिखण्डन की धूप में तपता आदमी जाति–भेद ,वर्ग–भेद, पंथ–भेद छूआछूत जैसी सामाजिक बीमारियों का शिकार है । अमानवीय भेदभाव की सामाजिक बुराई के खिलाफ भगवान बुध्द,महावीर,गुरूनानक एवं अन्य महापुरूपों ने भी शंखनाद किया था परन्तु जातीय भेदभाव की बीमारी के विपाणु भारतीय समाज से पूरी तरह समाप्त नही हो पाये । आज भी यह बीमारी अस्तित्व में है परन्तु वर्तमान परिवेश में सत्ता प्राप्त करने की सीढी बन चुकी है। परिणाम स्वरूप इस सामाजिक कुव्यवस्था के पोपक उन्माद की उर्वरक समय समय पर देते रहते है । जिस कारणबस भारतीय समाज जातीय भेद और छूआछूत का जहर आज भी पी रहा है ।दुनिया में यह जातीय भेद और छूआछूत नमूसी का कारण बन रही है । इसके बाद भी जातीय भेद और छूआछूत के अस्तित्व का पोपण हो रहा है । सामाजिक गलियारों में ही नही राजनैतिक गलियारों में भी धूम हैं जातीय आधार पर जनप्रतिनिधियों का सम्मान क्या यह सामाजिक विपमता का परिचायक नही ध तकरीरे देने वाले अपने चरित्र में कितना उतारते है यह तो जग जाहिर ही हो चुका है ।भारतीय समाज का कौन

जनप्रतिनिधि कोई उदाहरण पेश किया है अपनी से छोटी अथवा तथाकथित अछूत जाति के साथ रिश्ता जोडकर शायद कोई नही । सामाजिक और आर्थिक समानता की बाते तो लोकलुभावन के लिये होती है ।वोट बटोरने के लिये होती हैं । असली चेहरा तो जातिवाद के रंग में रंगा होता है ।

वर्तमान युग में दुर्भाग्य की बात है कि कुछ अच्छे पढे लिखे ऊचे ओहदो पर विराजमान लोग भी जातीय वैमनस्ता की आड में छोटी बिरादरी के लोगों का भविष्य चौपट करने से बाज नही आ रहे है । अवन्नति के दलदल में धकियाते जा रहे है।कुछ क्षेत्रो में तेा तथाकथित अछूत जाति का प्रवेश ही जैसे वर्जित है।कहीं –कही तो योग्य,उच्च शिक्षित वंचित समाज के व्यक्ति की तरक्की सिर्फ उसकी जातीय अयोग्यता के कारण नही हो पाती है।उसकी अर्जियां तक आगे नही बढ पाती है । बेचारा योग्यता के बाद भी जातीय जहर पीने को मजबूर हो जाता है क्योकि विरोध में उतरने पर उसके परिवार का भविष्य और भूखों मरने की नौबत जो आने वाली है ।इसी दहश्त में वह मौन साधे रहता है कि शायद कल अच्छा हो ।दुर्भाग्यबस वह कल नही आता ।अन्त में वह हारे हुये सैनिक की भांति अपने बच्चों में ही अपना भविष्य देखने लगता है । गरीब निम्न जाति का अनपढ ही नही पढा लिखा ईंट गारा हाडफोड मेहनत की रोटी से पेट की भूख तो मिटा ले रहा है पर सम्मान की भूख नही मिटा पा रहा है ।इस सब के लिये हमारी सामाजिक कुव्यवस्था जिम्मेदार है । लाख योग्य आदमी को जातीय योग्यता के आधार पर अछूत घोपित किये हुए है ।अछूतपन के कोढ पर कुछ प्रतिबन्ध तो लगा है पर यह कोढ खत्म नही हुआ है ।
आज भी आदमी के छूने से पानी अपवित्र हो जाता है । निम्न जाति के कुये का पानी अपवित्र होता है ।कैसी विडम्बना है ।वंचित समाज की महिला का चीर हरण होता है ।जूत्ता चप्पल हाथ मे लेकर चलना होता है ।दूल्हा घोडी पर नही चढ पाता है । तनिक तनिक बात पर निम्न जाति के व्यक्ति का कत्ल हो जाता है । जातीय वैमानस्ता का भूत सिर से नही उतरा तो देश और समाज को निगल जायेगा। जातिवाद के चक्रव्यूह को तोडना होगा। यह कैसा चक्रव्यूह है कि आज के युग में भी नही टूट रहा है ध जातिवाद का कैसा मोह है ध यह कैसी मानसिकता है ध्कैसा धर्म है ध जातिवादरूपी पिशाच का तांडव विज्ञान के युग में भी शोध का मुद्दा बना हुआ है ,ये कैसा अहंकार है ध ये कैसी दीवार है कि टूट ही नही रही है ।वास्तविकता तो ये है कि समानता का शंखनाद करने वाले अपनी ईमानदारी पर खरे ही नही उतर रहे है ।कथनी करनी में अन्तर का उदाहरण पेश कर रहे हैं ।

सुकरात ने कहा है कि दुनिया में कुछ बेहतर हे तो वह ज्ञान है कुछ बुरा है तो वह है अज्ञान । विज्ञान के युग में भी बिखण्डित समाज अच्छाई और बुराई में भेद नही कर पा रहा है । क्या भारतीय समाज में उच्च स्थान प्राप्त लोग जातीय श्रेप्ठता के स्वार्थ के वशीभूत होकर अज्ञानी नही बने हुये है ध यह कैसी सोच है ध क्या इस सोच को दमनकारी सोच नही कहा जा सकता ध सच जातिवाद दमन का ही बिगडैल रूप है जो देश और समाज की उन्नति में बाधक है। जातिवाद के चक्रव्यूह को तोडे बिना दुनिया के सामने गौरान्वित महसूस करना बीमार की हंसी के समान होगा । जातीय भेदभाव अहंकार है दूसरेश्शब्दों में क्या अहंकार से उपजी मूर्खता भी कहा जा सकता है आज के युग में ध समानता की बात करने वाले तो बहुत है पर वास्तविकता के धरातल पर उतरने वाला कोई नही दिखाई पडता है ।यह बात ठीक इस कहावत सी लगती है–हाथ मिलाने वाले तो बहुत है हौले से कंधे पर हाथ रखने वाला कोई नही । अपनेपन का एहसास कराने वाला कोई नही । यदि ऐसा हुआ होता तो आज भी आदमी अछूत ना होता । यदि वास्तव में बिखण्डित समाज के प्रहरी जातिविहीन समतावादी समाज के पक्षघर है तो उन्हे जातीय श्रेप्ठता एवं निम्नता के विचार को त्याग कर भारतीय सामाजिक एकता के लिये सैनिक बनना होगा । यदि ऐसा न हुआ तो समानता की सिर्फ बात करना बेईमानी होगी । छूआछूत का दंश झेल रहा आदमी बेझिझक कहेगा कि ये कैसा समाज है कि आदमी को अछूत बना दिया हैध कैदी बना दिया है ध सामाजिक समानता और तरक्की से बप्हिकृत कर दिया है ध और धर्म परिवर्तन की भी इजाजत नही देता । क्या वह ऐसे आदमी विरोधी समाज का कैदी बनकर नारकीय जीवन जीना पसन्द करेगा । आज का आदमी समानता चाहता है । यह उसका नैर्सगिक अधिकार हैं । मिलना भी चाहिये परन्तु सच तो ये है कि आज भी आदमी अछूत है ।

आवश्यकता है सामाजिक विचार में परिवर्तन लाने की । जातीय श्रेप्ठता के अभिमान को त्यागने की । सामाजिक समानता सामाजिक समरसता स्थापित की । समाज के सत्तधीशों के साथ राजनैतिक सत्ताधीशों को भी अपने नैतिक/ मानवीय फर्ज पर खरा उतरना होगा । तभी वंचित /बप्हिकृत व्यक्ति सामाजिक समानता का अमृत चख सकेगा और आजाद देश में खुद को आाजाद एवं सुरक्षित समझ सकेगा । बदलते युग में हर उच्च स्थान प्राप्त व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य हो जाना चाहिये कि वह सामाजिक राप्ट्रीय एकता के लिये जातीय दम्भ का त्याग करे । सच तो ये है कि आज भी आदमी अछूत है के वैचारिक परिवर्तन हेतु उदाहरण बनने की शपथ खाये । यही वैचारिक क्रान्ति राप्टीय एवं सामाजिक उत्थान की राह में मील का पत्थर साबित हो सकती है।।। नन्दलाल भारती ।।

।। रिसते जख्म का दर्द ।।

आत्मीयता,समानता और सद्व्यवहार मानव मन को कितना सकून देते हैं शब्दों में बयान कर पाना मुश्किल है। इस यकीन को पुख्ता करता है यह गीत– ना हिन्दू बनेगा ना मुसलमान बनेगा इंसान की औलाद है इंसान बनेगा ।आजकल फिल्मों से तो ऐसे सामाजिक एकता और सद्भावना के गीत तो गायब ही हो गये है । फिल्म फूहड प्रर्दशन और हल्के फुलके मनोरंजन का साधन बनकर रही गयी है। फिल्मों का काम सिर्फ मनोरंजन करना ही नही होता समाज का दिशा निर्देशन भी होता है । आज की फिल्में अपने नैतिक दायित्व को भूलकर बस पैसा बनाने की मशीन बन रही हैचाहे इसके लिये नंगा प्रर्दशन ही क्यों ना करना पडे । रूढिवादी समाज भी सामाजिक बिखराव की दिशा में आग में घी डालने का काम कर रहा है । परिणामस्वरूप सामाजिक–विपमता के रिसते जख्म का दर्द शोपित,पीडित,वंचित समाज को चैन से जीने भी नही देता । 21वीं शदी में भी जातीय भेद का आतंक सामाजिक विद्रोह को उत्प्रेरित कर रहा है परन्तु देश की माटी से जुडा हुआ देश भक्ति से ओतप्रोत बुध्द,गुरूनानक और महावीर के प्रति आस्थावानवंचित–पीडित समाज लाख अत्याचार झेलकर भी विद्रोह पर नही उतर रहा है । दूसरी तरफ सामाजिक असमानता के समर्थक प्रहार करने से बाज नही आ रहे है । जाति एवं धर्म की चौपाल हो अथवा दफ्तर जातीय–भेद के अजगरों की फुफकार सुनाई पड ही जाती है । देश के पछत्तर से अस्सी फीसदी लोग भेदभाव के शिकार है। आज के कई दशक पहले समाज में छुआछूत काफी घिनौने यौवन मे तो था ही दफ्तर भी अछूते न थे । खैर कुछ कमी तो आयी है परन्तु समाप्त तो नही हुई है । कुछ रिसते जख्म का दर्द मुझे भी असहनीय दर्द देता है । वो वाक्या हमेशा याद रहता है जब ऊंची पहुंच का अल्पतम् शिक्षित रईस नाम का एक चपरासी खुलेआम भेदभाव करता था । जब दो चार लोग इक्टठा होते थे तो छोटी जाति के नाम पर अशोभनीय शब्दो का प्रयोग करता था । जातीय श्रेप्ठ लोग चटखारे लगाकर आनन्दित होते थे । दफ्तर और शौचालय की साफ सफाई करने वाली यादोबाई से पूछता क्यों बाई तुम्हारे धर्म में सबसे नीच जाति कौन होती है । बाई कहती धोबी । तब वह बोलता नही बाई चमार सबसे नीच जाति होती है । तुम्हे अपने ही धर्म के बारे में कुछ पता नही है । कभी कभी बडे लोगो से सुनने में आता जातीय छोटे लोगो को दबाकर रखना चाहिये जरा सी मोहल्लत दिये तो समझो खैर नही ।ऐसी बाते छाती में कील ठोकंने सरीख लगती थी,खैर आज भी वैसी ही लगती है। पढे लिखे लोगो का विचार ऐसा घिनौना हो सकता है तो ग्रामीण और युगों से जाति के जहरीले दरिया में हिचकोले खाने वालो का कैसा बुरा बर्ताव होगा । आज भी सिहरन पैदा हो जाती

है छुआछूत के आतंक को देखकर। वर्तमान समय में भी अत्याचार,उत्पीडन,बलात्कार ,चीर हरण,हत्याये तक हो रही है सिर्फ सामाजिक विपमता के कारण । ना जाने कब तथाकथित सामाजिक श्रेप्ठ लोग भेद का जहर पी रहे समाज को बराबर का समझेगे ।

इस अमानवीय भेदभाव की कडी में आलोट जिला रतलाम के सवर्णो न एक और काला पन्ना जोडकर सामाजिक भेदभाव के घिनौने चलन को पुख्ता कर दिया है। दलित दूल्हे को घोडी पर सवार होना सवर्णो को इस कदर नागवार गुजरा कि उन्होने बखेडा कर दिया । भला हो प्रशासन का पुलिस बल का जिन्होने सुरक्षा प्रदान कर वर निकासी ही नही फेरे तक पडवाये और अभियुक्तों के खिलाफ नामजद प्रकरण भी दर्ज किये । ये किस धर्म के मानने वाले लोग है । किस अमानवीय परम्परा को ढोने वाले लोग है जो तथाकथित छोटी जाति की सुख की घडी मे गमगीन और दुख की घडी में जश्न मनाते हैं। तनिक तनिक बातों पर वंचितों का खून पीने से भी बाज नही आते। सही अर्थो में मानव होने के नाते मानवीय कर्तव्यों का पालन ही धर्म होना चाहिये । सामाजिक बुराई के नाम पर मानव का विरोध करना ,शोपण करना, अत्याचार करना अपराध ही नही सभ्य समाज और देश की अस्मिता के साथ खिलवाड है । कहने को सभी समानता की बाते कर नही थकते । यदि कोई सर्वेक्षण हो तो श्शायद ही कोई मिले जो अपने को जातीय भेदभाव का पोपक माने । इतना ही नही वह बेहिचक अपने आपको सर्वसमानता का प्रखर प्रहरी कहेगा परन्तु व्यवहार इससे एकदम भिन्न होता है , तभी तो मंदिर प्रवेश को लेकर आतंक,दूल्हे को घोडी पर चढने को लेकर आतंक,शोपण,उत्पीडन अत्यचार बलात्कार तक की घिनौनी बारदातें हो रही है ।

सामाजिक समानता की जबानी बातें करने माव्र से समानता कभी नही आ सकती चरिव्र में उतारना होगा । सिर्फ समानता की बाते करने और चरिव्र सें विपरीत करना देश और समाज दोनों के लिये अहितकर होगा । सामाजिक असमानता की पोपक ताकतो का सबसे बडा गुण है कि वे समझौतावादी वंचितो शोपितो पीडितों को सदैव अपनी गिरफ्त में लपेटे रहती है और मौका पाते ही प्रहार कर बैठती है । इस दो मुही बात को समाज और देश के नीति निधार्रको को समझना होगा ।

देश में मुख्य रूप से भेदभाव के लिये जिम्मेदार है वर्ण–भेद । जिसकी वजह से चौथा वर्ण अर्थात शूद्र छुआछूत का शिकार है,खैर रंग भेद तो भेदभाव का कारण बना ही नही परन्तु जातिवाद ने वंचितों का जीना ही मुश्किल कर दिया है । आज के जमाने में भी आलोट जैसी घटनायें हो रही है । देश मे जातीय संघर्प

का कारण वर्णभेद है । यदि वर्ण भेद मिट जाये तो छुआछूत अस्तित्वहीन हो जायेगी । भारतीय समाज में सवर्ण–अवर्ण के भेद की ध्वनि नही सुनाई पडेगी । आज सबसे बडी आवश्यकता है कि समाज और देश के शुभ चिन्तक धार्मिक और राजनैतिक सत्ता से उपर उठकर सामाजिक बदलाव के लिये जातीय दम्भ का त्याग करे । समाज में नफरत,भेदभाव की खाई को पाटने में आगे आये तभी सामाजिक समानता स्थापित हो सकती है ,तभीश्शदियों से भेदभाव का जहर पीकर बसर करने वाला वंचित समाज रिसते जख्म के दर्द से राहत पा सकेगा । सामाजिक–समानता के स्वाभिमान के साथ गुजर कर सकेगा वरना आजाद देश में भी उसे गुलामी का एहसास होता रहेगा । यदि ऐसा हुआ तो पूर्व राष्ट्रपति स्व.के.आर.नारायण साहब का कथन– अगर भेदभाव रूपी नर पिशाच को शीघ्रातिशीघ्र खत्म नही किया गया तो यह पूरे राष्ट्र को निगल जायेगा । उक्त आशंका को पर लगे उसके पहले समाज के मठाधीशो और राजनैतिज्ञ सत्ताधीशों को मिलकर समता की क्रान्ति का ऐलान करना होगा। हर देशवासी को सच्चे सिपाहीश्की भांति अपने फर्ज पर खरा उतरना होगा। तभी जातीय भेद का धब्बा देश के माथे से मिट सकेगा और शदियों से शेापित पीडित वंचित समाज रिसते जख्म के दर्द से उबर पायेगा ।

नन्दलाल भारती

।। आदमी होने का सुख।।

सन् 1936 में प्रेमचन्द ने अपने एक लेख महाजनी सभ्यता में लिखा था कि मनुष्य दो भागों में बंट गया है। एक बडा हिस्सा मरने खपने वालो का है और बहुत छोटा हिस्सा उन लोगों है जो अपनी शक्ति और प्रभाव से बडे समुदाय को वश में किये हुये है ।इन्हे इस बडे भाग के साथ किसी तरह की हमदर्दी नही,जरा भी रियायत नहीं । उसका अस्तित्व केवल इसलिये है कि वह अपने मालिकों के लिये पसीना बहाये,खून गिराये ओर चुपचाप दुनिया से विदा हो जाये । आज 21वीं सदी में भी शोपित समाज की समस्यायें ज्यों की त्यों बनी हुई है । सामाजिक कुरीतियां,नारी शोपण अपने यौवन में हैं । सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन और आर्थिक अधिकारों के लिये कोई आन्दोलन नही हो रहा ।श्शोपितों के मसीहा डां.अम्बेडकर ने कहा था शिक्षित बनो सघर्प करो, कि गूंज नही सुनाई देती । डां. अम्बेडकर के देहावसान के बाद से तो सामाजिक उत्थान का पहिया ही जैसे थम गया । सामाजिक उत्थान के नाम पर राजनीति जरूर होने लगी ।इस राजनीति से समाज के उपेक्षितो का तो उतना भला नही हुआ जितना होना चाहिये था पर राजनीति के खिलाडियों को जरूर भला हुआ है । यदि उपेक्षित समाज का भला हुआ होता तो वंचित समुदाय पर अत्याचार होते, मंदिर प्रवेश पर जुल्म

होता ,दूल्हे को घोडी पर चढने से रोका जाता । बात बात पर कत्ल होता। नही . ....बिल्कुल नही..... । इससे प्रतीत होता है कि कही ना कही सामन्तवाद की जडे आज भी मजबूत है । कुर्सी प्राप्त करने के लिये तो अलग अलग अन्दाज में धरने प्रर्दशन होते है पर वंचितों के हितार्थ जुल्म शोपण,अत्याचार बलात्कार और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ कोई धरना प्रर्दशन नही होता । समाज में व्याप्त अंधविश्वास,प्रपंच,सामन्तीश्शोपण,वर्ग भेद–वर्ण भेद के वीभत्स और कुत्सित रूप पर मठाधीशों और सत्ताधीशेां की नजरें क्यों नही जाती । शोपित समाज की उपेक्षा को देखते हुए लगने लगा है कि राजनैतिक पार्टिया शोपित समाज के नेताओ का उपयोग सिर्फ सत्ता हथियाने के लिये करती है हनुमान की भांति ।

आज स्वतन्तता प्राप्ति के दशको बाद भी दयनीय स्थिति में शोपित बसर कर रहा है । भूमिहीनता का अभिशाप ढो रहा है। भारतीय जनजीवन में सदियों से व्याप्त अमानवीय जातिप्रथा और सामाजिक विसंगतियां आज भी चलन में है क्या ये हमारी सरकारों की मानसिकता की परिचायक नही है ।देश की नीचला तबका सामाजिक और आर्थिक अधिकार से वंचित है ।सामाजिक सम्मान को तरस रहा है ।रोटी आंसू से गीली कर रहा है । ये कैसी आजादी है जहां ना सामाजिक समानता है ना आर्थिक । क्या यह गुलामी बनाये रखने का पणयन्त्र नही । आखिर कब तक छोटा सा हिस्सा बहुत बडे हिस्से को सामाजिक और आर्थिक अधिकारों से दूर रखने की साजिश में कामयाब होता रहेगा ।क्या कभी पीडितो का आक्रोश नही जागेगा । कब तक जुल्म को ढोते रहेगे । जिस दिन वंचितों के सब्र का बांध टूटा उस दिन सामाजिक आर्थिक असमानता का कुचक्र टूटेगा ।वंचितों के सब्र के बांध टूटे ,इसके पहले सरकार को भी चेतना होगा सामाजिक समानता और आर्थिक सम्पन्नता के कानूनों का कडाई से पालन करवाना होगा ताकि सामाजिक समानता के साथ वंचिता समाज को आर्थिक सम्पन्नता भी नसीब हो सके ।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है–हमारे जातीय शोणित में एक प्राकर के भयानक रोग का बीज समा रहा है ओर वह है प्रत्येक विपय को हंस कर उडा देना–गाम्भीर्य का अभाव । इस दोप का सम्पूर्ण रूप से त्याग करो वीर होओ,श्रध्दा सम्पन्न होओ,दूसरी बाते उनके पीछे आप ही आयेगी–उन्हे उनका अनुसरण करना होगा । अपने से निम्न श्रेणी वालेां के प्रति हमारा कर्तव्य है–उनको शिक्षा देना,उनके खाये हुए व्यक्तित्व के विकास के लिये सहायता करना । उनमें विचार पैदा कर दो – बस उन्हे उसी एक सहायता का प्रयोजन है और श्शेप सब कुछ इसके फलस्वरूप

आप ही आ जायेगा । आज विज्ञान के युग में भी जातीय दम्भ भरने वाले लोगो में जरा निम्न श्रेणी वालों के प्रति नरमी का

भाव देखने को नही मिल रहा है ।जातीय दम्भ के वशीभूत होकर जुल्म तो हो रहा है । इसके बात के आंकडे भी गवाही दे रहे है । कब मिलेगा वंचित समाज को सामाजिक आर्थिक समानता का अधिकार । कब वंचित समाज भोग सकेगे आदमी होने का सुख ।

जातीय बिखराव अथवा बिखण्डित समाज सच मायने में आदमी को आदमियत का बैरी बना देता है । आदमी जातीय उन्माद /धार्मिक उन्माद में दीन हीन वंचित पर अत्याचार करे,शोपण करे,भेदभाव जैसा अमानवीय व्यवहार करें, आदमी आदमी के अधिकारों का हनन करे । ऐसे कृतित्व इंसानियत के विरोधी हैं। इंसानियत आबाद रहे , आदमी आदमी में कोई भेद न हो चहुंओर समानता का साम्राज्य हो । इसके लिये आदमी को जातीय दम्भ का त्याग करना होगा ।भेद की दीवारों को ढहाना होगा ।

भूमण्डलीयकरण के इस युग में जरूरत है कि समाज में व्याप्त अंधविश्वास जातिपांति के भेद की खुलेआम खिलाफत करने की सामाजिक समानता और आर्थिक समानता के लिये आगे आने की ।अभीशप्त समाज की अंतर्वेदना को सहृदयता एवं संवेदनशीलात के साथ समझने की । गरीबों वंचितों का पक्षधर बनने की ।तभी सामाजिक विसंगति और आर्थिक खाईया भरी जा सकती है । देश हित और समाज हित की बात करने वालो को वंचित समाज के कल्याण के लिये कथनी करनी में भेद करना तनिक भी लाभकरी न होगा । वक्त आ गया है देश एवं समाज हित में जातीय श्रेप्ठता के मुखौटे को नोच फेकने का । वंचितों के सम्मान के लिये , उनके साथ होने वाले अन्यायों के विरोध और सामाजिक आर्थिक अधिकारों के समर्थन मे उठ खडे होने की ,तभी वंचित समाज को सामाजिक–आर्थिक समानता का आधिकार मिल सकेगा । सामाजिक समानता एवं आर्थिक सम्पन्न्ता के सोपान चढे बिना वंचित समाज पूर्ण आजादी का अनुभव नही कर सकता । वंचित समाज तरक्की के प्रवाह के साथ चले इसके लिये आवश्यक है कि सम्वृध्द एवं सम्पन्न समाज खाईयों को पाटकर समरसता का नया इतिहास रचे । समरसता से वचित समाज का ही नही राप्ट्र का भी विकास सम्भव है तो क्यो न राप्ट्र हित में **वर्ग/वर्ण** भेद अथवा अन्य भेद की दीवारे ढहाकर सामाजिक समरसता के महायज्ञ में कूद पडें तभी नीचले तबके का आदमी, आदमी होने का सुख भोग सकेगा । नन्दलाल भारती

।। नैतिक दायित्व–विकास की राह में मील के पत्थर।।

शिक्षा अर्थात वह संयम जिसके द्वारा इच्छाशक्ति के प्रवाह और विकास को वश में लाया जाता है । जो इच्छाशक्ति और विकास देश और समाज के लिये फलदायी हो वास्तव में यही शिक्षा कहलाने योग्य है । सार रूप में शिक्षा मन की एकाग्रता है न कि तथ्यों का संकलन । जो शिक्षा व्यक्ति को पैरों पर खडा करने लायक बनाये और समाज को एकता के धागे में पीरोये ।व्यक्ति जीवन निर्माण कर सके। मनुष्य बन सके। चरित्र निार्मण कर सके और समाज का दिशा दे सके ।ऐसी शिक्षा व्यक्ति ,देश और समाज का विकास कर सकती है ।आज का आदमी हुक्म जताना चाहता है,हुक्म पालन नही करना चाहता जबकि व्यक्ति को पहले आदेशो का पालन करना सीखना चाहिये आदेश देना तो स्वयं ही आ जाता है । समानता का लोप होता जा रहा है । दुर्दशा का कारण यही है ,जिससे समाज भी अछूता नही है । आज व्यक्ति अपने नैतिक दायित्वों काो भूलता जा रहा है ।उसका नैतिक दायित्व यह भी है कि वह अपने से नीचे वालों को शिक्षित करें,उनके व्यक्तित्व विकास के लिये सहायता करे । देश और समाज के हित को देखते हुए आज ऐसी शिक्षा की जरूरत है जिससे चरित्र निर्माण हो,बुध्दि का विकास हो,परमार्थ का भाव पैदा हो, जातीय दम्भ की दीवारें तोडकर व्यक्ति अपने पैरों पर खडा हो ।सच आज के युग मे जरूरत है नैतिक एवं स्वालम्बी शिक्षा की । ऐसी शिक्षा ही आत्म चिन्तन का सही मार्ग दिखा सकती है ।

सत्य प्राचीन अथव आधुनिक समाज का सम्मान नही करता । समाज को ही सत्य का सम्मान करना पडता है । सत्य ही सारे प्राणियों और समाजों का मूल आधार है ।सत्य कभी भी समाज के अनुसार अपना गठन नही करेगे । समाज को ही सत्य के अनुसार अपना गठन करना होता है । वही समाज श्रेप्ठ है जहां सर्वोच्य सत्यों का कार्य में परिणत किया जा सकता है । यह परिणति शिक्षा से ही सम्भव हो सकती है । जब व्यक्ति समय के सत्य को समझ लेगा तो यकीनन उसे कोई भेद की खाई डरा नही सकेगी । समाज को सत्य की कसौटी पर खरा उतरना होगा ।शिक्षा का उपयोग मानवता की भावनाओ में अभिवृध्दि के लिये करना होगा तभी शिक्षा समाज के लिये वरदान हो सकती है ।

छोटे बडे में भेद, जातीय निम्नता अथवा श्रेप्ठता की बात इंसानियत का अपमान है,कर्म के आधार पर आदमी की पहचान होनी चाहिये ।अपने से निम्न में बुराई में नही अच्छाई ढूढनी चाहिये ।परिवर्तन समय का चक्र है ,होगा पर शिक्षा के

माध्यम से समाजोपयोगी बनाया जा सकता है ।आदमी और आदमी के बीच की दूरियां खत्म की जा सकती है । इसके लिये आवश्यक है सद्प्रे,अकपटता एवं धैर्य की । जैसाकि कहा गया है जीवन का अर्थ ही वृध्दि है अर्थात विस्तार यानि प्रेम है ।इसलिये प्रेम जीवन है और स्वार्थपरता मृत्यु । मनुष्य हो अथवा राष्ट्र बडा बनने के लिये दृढ विश्वास,ईर्ष्या और सन्देह का अभाव और जो व्यक्ति सन्मार्ग पर चलने में और सत्कर्म करने में संलग्न हो उसकी सहायता करना आवश्यक होता है ।मनुष्य का आदर्ध परमात्मा होना चाहिये क्योंकि वही एक अविनाशी है और हम उसके अंश है ।अतः हमें जन्म आधारित व्यवस्था की जगह कर्म आधारित व्यवस्था का सृजन करना होगा ।इस व्यवस्था से मानव धर्म की उत्पत्ति होगी जो समाज,राप्ट और विश्व के लिये हितकर होगी । मानव धर्म ही सत्य की कसौटी पर खरा उतर सकता है । दुनिया को जोड सकता है । इस प्रकार के बोध हमें नैतिक शिक्षा ही करवा सकती है, इसके लिये हमे आने दायित्वों के प्रति प्रतिबध्दता का होना होगा ।

ज्ञान मनुष्य में अन्तर्निहित होता है । वाह्य जगत तो सहायक मात्र होता है । वाह्य जगत तो अन्तर्निहित ज्ञान को पूर्णता अथवा अपूर्णता प्रदान करता है । वास्तव में शिक्षा का अर्थ पूर्णता हेाता है और नैतिक शिक्षा इसे जीवन्तता प्रदान करती है। सच शिक्षा तो वह है जो साधारण व्यक्ति के जीवन संग्राम को समर्थ बनाये, चरित्र बल का निर्माण करें। परहित भावना में अभिवृध्दि करें । व्यक्ति को सिंह की भांति साहसी बनाकर अपने पैरो पर खडा होने लायक बनाये। वही शिक्षा/नैतिक शिक्षा राप्ट्र एवं समाजोपयोगी हो सकती है । नैतिक शिक्षा, उत्थान की राह में मील का पत्थर साबित हो सकती है बशर्ते व्यक्ति अपने नैतिक दायित्वो एवं संकल्पों के प्रति ईमानदारी बरते ।

नन्दलाल भारती

।। दलितों की सम्वृध्दि के बिना राप्ट्र का विकास संभव नही ।।

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष व भाजपा के वरिप्ठ नेता लालकृप्ण आडवाणी ने 14 अप्रैल 2008 को महू में संविधान निर्माता बाबा साहब डां.आम्बेडकर स्मारक एवं प्रतिमा के लोकार्पण के बाद कहा कि आजादी के बाद से अब तक देश में दलित कमजोर आदिवासी और गरीब वर्ग सम्वृध्दि की धारा से वंचित है । दलितों की सम्वृध्दि के बिना राप्ट्र का विकास सम्भव नही है । उक्त कथन पर सच्चे मन से विचार किया जाये तो सच्चाई से रूबरू हुआ जा सकता है। राजनैतिक मंथन से ही नही सामाजिक विचार मंथन से भी यही विप निकलने की सम्भावना बलवन्ती है ।सच तो यही है दलितों ने चहुंमुखी विकासरूपी अमृत का स्वाद ही नही चख पाया है,आज भी पूरी आबादी की 19.59 प्रतिशत अनुसूचित जाति जातीय

भेदभाव की शिकार है। विकास की बयार से वंचित है । सामाजिक आर्थिक असमानता का जहर पीने को बेबस है ।अत्याचार,जुल्म,शोपण की शिकार है और 8.63 प्रतिशत अनु.ज.जाति पिछडेपन का दंश झेल रही है। सवाल उठता है इसके लिये जिम्मेदार कौन है –राजनीति या समाज या दोनों। उत्तर दोनों ही जिम्मेदार है । राजनीतिज्ञ लोग जब सत्ता से बाहर रहते है तब उन्हे दलितोत्थान याद आता है । जब सत्ता में होते है तो उन्हे अपने हित के अलावा कुछ और नही दिखाई पडता । सही मायने में सामाजिक असमानता ही दलितों के पिछडेपन का कारण है । वास्तविकता का आंकलन माननीय श्री आडवाणी ने कर दलितों के मसीहा बाबा साहब की जन्मस्थली से दलितों की सम्वृध्दि का ऐलान कर दिया। इस वैचारिक क्रान्ति के लिये माननीय श्री आडवाणी जी को सलाम।

वर्तमान परिवेश में विकास का हर रास्ता राजनीति से होकर निकल रहा है । ऐसे समय में माननीय श्री आडवाणी के श्रीमुख से दलितों के विकास की प्रतिबध्दता दृष्टिगोचर होती है तो यकीनन दलितों के विकास में उपर्युक्त कथन मील का पत्थर साबित हो सकता है ।माननीय श्री आडवाणी जी ने वास्तविकता के धरातल से अन्य राजनैतिक पार्टियों को विचार मंथन का मुद्दा दिया है। राजनैतिक पार्टिया चाहे कांग्रेस हो बसपा हो सपा हो या अन्य कोई सभी को दलितोत्थान के क्षेत्र में किये गये अपने अपने कार्यो का मूल्यांकन कर भविप्य में कार्य करने का आह्वाहन है। कथनी करनी में अन्तर न करने की प्रतिबध्दता है । यदि राजनैतिज्ञ पार्टियां सामाजिक और आर्थिक विकास की शपथ ले ले तो कोई ऐसी श्शक्ति नही है जो उत्थान की राह में कांटा बनेगी । काश सभी राजनीतिज्ञ पार्टियां सामाजिक और आर्थिक असमानता को राप्ट्र हित में मुद्दा बनाकर दलितोत्थान के लिये कमर कस लेती । चिन्ता का विपय है सभी राजनैतिज्ञ पार्टियों दलितों की दुर्दशा पर घडियाली आसूं बहाती तो है पर सच्चे मन से उनके कल्याण के लिये आगे नही आता वोट बैंक जरूर समझती है । यदि सामाजिक उत्थान हुआ होता तो 14 अप्रैल के दिन महू के पास सिमरौल इलाके में ग्राम दतोदा में दलितों की बारात पर सवर्णो का हमला होता । बिल्कुल नही राजनीति में इतनी शक्ति है कि वह किसी भी कुव्यवस्था को समाप्त कर सकती है परन्तु यहां तो सामाजिक कुव्यवस्था भी तो राजनीति को सम्बल प्रदान करती है ।
सही मायने में राजनैतिक पार्टिया दलितों का भला चाहती हैं तो वे सर्वप्रथम सामाजिक कुव्यवस्था केआरक्षण को खत्म करने के लिये प्रतिबध्द हो और गरीब दलितों को खेती की जमीन अथवा रोजगार मुहैया करायें । उनके शिक्षा दीक्षा का पुख्ता इन्तजाम हो । स्वास्थ के क्षेत्र में काम हो । सामाजिक एवं आर्थिक समरस्ता के लिये जातीय भेदभाव की सीमा टूटे । जब तक दलित सामाजिक कुव्यवस्था की कैद से मुक्त नही होगा तब तक चहुमुखी विकास सम्भव नही है ।

देश में अरबपतियों की संख्या कितनी भी क्यों न हो जाये नैतिक रूप से यह विकास नही होगा। राष्ट्र पूर्णरूप से विकसित तभी कहा जा सकता है जब दलितों का विकास होगा ।दलितोत्थन को राष्ट्र के विकास से जोडने वाले माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणी का कथन सच्चे मे से हो या झूठा पर एक बात तो सत्य है कि दलितों के विकास के लिये राजनैतिज्ञो को अभी बहुत कुछ करना बाकी है तभी दलितो का विकास सम्भव है।दलितों की सम्वृध्दि के बिना राष्ट्र का विकास संभव नही माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणी के उक्त कथन की सत्यता को राजनैतिज्ञ पार्टियां कितनी गहराई से स्वीकार कर दलितोत्थान को राष्ट्र के विकास का मुद्दा बनाती है यह तो वही जाने पर एक बात साफ हो गयी है कि आजादी के इतने दशको बाद भी दलित विकास की राह से अभी बहुत दूर है। माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणी ने दलितोत्थान को राष्ट्र के विकास के साथ जोडकर देखा । श्री आडवाणी के कथन **दलितों की सम्वृध्दि के बिना राष्ट्र का विकास संभव नही** की सच्चाई को स्वीकार कर सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर दलितोत्थान का शंखनाद करें,ऐसी उम्मीद तो की जानी चाहिये–सत्ताधीशों से। श्री आडवाणी जी को साधुवाद. .....

नन्दलाल भारती

।। खुद के लिये जी रहा है आदमी ।।

आज समाज में भ्रम की स्थिति पैदा हो गयी है । आदमी के व्यवहार में नैतिक नजर नही आ रही है । कथनी करनी में साफ साफ फर्क नजर आने लगा है । आदमियत, मितव्यता और नैतिकता की बात करने वाले स्वार्थ का का मौंका तलाशने लगे हैं । जिन्हे खुद को आदर्श रूप में समाज के सामने प्रस्तुत करना चाहिये,वे मुखौटा बदलने लगे हैं । इंसानियत और नैतिक मूल्य वही है जो पहले थे परन्तु जमाना बदल गया है कि दोहाई देकर दोपारोपण और खुद का मतलब साधने में कुछ लोग व्यस्त हो गये है। रूतबे की बदौलत कमजोर के दमन को उतारू है । मौका पाते ही गिध्द की भांति कमजोर का हक लील रहे है । यही लोग नैतिक मूल्यों को कुचल रहे है।अपने मतलब के लिये दूसरे के मौत की दुआ करने लगे है । ऐसे स्वार्थ के वशीभूत लोगों के मुंह से नैतिकता की बात बेईमानी लगती है ।

संवेदनहीन और खुद के लिये जीने वाले लोगो ने दुनिया को मतलबी बना दिया है। आज का आदमी लाश को सीढी बनाकर यश और वैभव कि शिखर तक पहुंचने में कोतहाई नही बरत रहा है ।ऐसे स्वार्थी और संवेदनहीन लोग सभ्य और संवेदनशील समाज के लिये चुनौती बने हुये है । समाज में मूल्यहीनता बढी है, आदमी महज सौदागर/जालसाज बनकर रह गया है ।चोरी

डकैती,हत्या,बलात्कार,अत्याचार जैसे घिनौने अपराधो से जरा भी परहेज नही कर रहा है ।यही प्रवृति समाज के आइने को बद्सूरत कर रही है ।यह प्रवृति श्रम की मण्डी में भी जडे जमाने लगी है । पद के रूतबे का उपभोग स्वहित में होने लगा है । पदाधिकारी अपने से बडे औररूतबेदार पदाधिकारी के दुखसुख में पहले हाजिरी लगाने की दौड में जुट रहा है,पीछे उसकी कब्र खोदने और साजिशें रचने से भी बाज नही आ रहा है । मातहत कर्मचारी का उपयोग बधुआ मजदूर की तरह करने लगा है । पद की गरिमा के विपरीत काम होने लगा है सुविधाभोगी हो गया है।।समता,सद्भावना,न्याय संस्था का विकास ध्येय न होकर स्वहित हो गया है । जोडतोड,छल प्रपंच से हासिल कामयाबी के जश्न में डूबा हुआ है आज आदमी अपने दायित्वों को भूलकर। यही स्वहित भ्रप्टाचार को उर्वरा प्रदान कर रहा है । स्वहित और संवेदनहीनता की वजह से चीखे दबती जा रही है। व्यापार जगत भी अछूता नही है ।व्यापारी स्वहित में जनता के स्वास्थ से खिलवाड कर रहा हैं ,मिलावट कर रहा है ,कम तौल रहा है सामान महंगा बेचा रहा है।जनता महंगाई के बोझ से दबी जा रही है ।सरकार बौनी साबित हो रही है ।सत्ता के भूखे आश्वासन की आक्सीजन परोसे जा रहे रहे है ।

आज का आदमी दौलत का भूखा हो गया है जिसकी वजह से वह रिश्ते तक की परवाह नही कर रहा है । विकराल भूख और आपाधापी के जीवन में नैतिकता की सुध नही बची है । आज आदमी मशीन के हावभाव में जीने लगा है तभी तो जीवन नीरस होने लगा है और स्वहित सिर चढकर बोलने लगा है ।जीवन मूल्यो को नजरअंदाज कर अंधी दौड का घोडा हो गया है । जिसके सिर्फ एक ही उदेश्य बचा है बस दौलता का पहाड खडा करना चाहे उसे इसे हासिल करने के लिये जिस हद तक गिरना पडे । इसी अंधी दौड ने उसे नैतिक मूल्यों से दूर कर दिया है । इस तूफान का कुप्रभाव हर क्षेत्र में देखा जा सकता है । यही कुप्रभाव अनैतिकता और समाजिक विकृति के लिये जिम्मेदार है ।सभ्य समाज के लोग अफसोस जाहिर करने के अलावा कुछ नही कर पा रहे है ।क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने वाला सिनेमा फूहड हो गया है ।स्वहित वहां भी साफ दिखाइ पडने लगा है। समाज और सामाजिक परिवर्तन उनके लिये अब मुद्दे नही रहे ।

आज आदमी सिर्फ बातों से नैतिक नैतिकता का एहसास करा रहा है ।खुद के चरित्र में नही उतार रहा है। अपनी जिम्मेदारी को भूल रही है। दोपारोपण कर रहा है । दूसरे में कमी निकाल रहा है ।परहित का तो कही नामों निशान नही छोड रहा है। नायक के वेप में खलनायक बना हुआ है सिर्फ स्वाहित के लिये।आज समाज नैतिक और अनैतिक दो खेमे में बंट गया है । अब तो बस इन्तजार है ऐसे महानायक के अभ्युदय की जो स्वहित के भाव को परहित के

भाव में बदल दे । कमजोर आदमी के मुंह से फूट पडे–आज का आदमी खुद के लिये नही आमजन ,समाज और देश के लिये जी रहा है ।
नन्दलाल भारती

।। प्रथम लोकनायक भगवान बुध्द ।।

बाल्यकाल से ही सिध्दार्थ के मन में करूणा भरी थी । उनसे किसी प्राणी का दुख नही देखा जाता था। सिध्दार्थ अर्थात भगवान बुध्द के दया करूणा के बारे मे अनेक कथायें सुनने को मिलती है –उसमे में से यह कथा –सिध्दार्थ को जंगल में किसी शिकारी की तीर से घायल हंस मिला । वे हंस को उठाकर तीर निकाले,सहलाये ,पानी पिलाये । उसी समय देवदत्त वहां आ गये और कहने लगे यह शिकार मेरा है ,मुझे दे दो । सिध्दार्थ ने देने से मना कर दिया और बोले तुम इस हंस को मार रहे थे । मैने इसे बचाया है । अब तुम्ही बताओं इस हंस पर किसका हक है मारने वाले का या बचाने वाले का । अन्ततः राजा शुध्दोधन को भी सिध्दार्थ की बात माननी पडी और हंस को बचाने वाले सिध्दार्थ बडे साबित हुए ।सम्भवतः तभी से यह कहावत कही जाने लगी कि मारने वाले से बचाने वाला बडा होता है ।शाक्य वंश में जन्मे सिध्दार्थ का विवाह यशोधरा से सोलह साल की उम्र में ही हो गया ।राजा श्शुध्दोधन ने सिध्दार्थ के लिये दुनिया की हर भोग विलास की वस्तु का प्रबन्ध किया पर ये सब चीजें सिध्दार्थ को सांसारिक मोह माया में नही बांध सकी । शनै शनै वे सांसारिक मोह माया से बहुत दूर चले गये और यही सिध्दार्थ बौध्द धर्म की स्थापना कर नर से नारायण अर्थात भगवान बुध्द हो गये ।भगवान बुध्द विश्व के सबसे बडे और महान धर्मोदेशके के रूप में माने जाते है । आजीवन अहिसा,समता एवं सद्प्रेम मूलक धर्म का प्रचार किये । जीवन के विभिन्न पक्षो के बीच समन्वय स्थापित करने के कारण भगवान बुध्द को प्रथम लोकनायक कहा जाता है । सिध्दार्थ को बैसाख की पूर्णमासी को बुध्दत्व की प्राप्ति हुई थी ।

एक समय भगवान बुध्द राजगृह वेणुवन में विहार कर रहे थे ,उन्होने देखा कि श्रृंगाल नाम का एक वैश्य का लडका भीगे वस्त्र,भगे केश,पूर्व,पश्चिम,उत्तर,दक्षिण, उपर नीचे सभी दिशाओं को हाथ जोडका नमस्कार कर रहा है । भगवान बुध्द उससे पूछे–तुम क्यों सबेरे उठकर दिशाओं को नमस्कार कर रहा है ।तब वह बोला मरते समय पिताजी ने कहा था कि दिशाओं को नमस्कार करना वही कर रहा हूं ।
भगवान बुध्द बोले आर्य धर्म में छः दिशाओं को इस तरह नमस्कार नही किया जाता ।

वैश्य बालक बोला–तब कैसे किया जाता है भन्ते ।भगवान बुध्द बताये कि आर्य श्रावक के जब चार कर्म–क्लेश–प्राणातिपात । प्राणियों को मारना। अदत्तादान । चोरी करना। परदागमन।काम संबंधी दुराचार करना,और मृपावाद अर्थात झूठ बोलना मिट जाते है,चार स्थानों अर्थात स्वेच्छाचार के रास्ते में जाकर पाप कर्म करना, द्वेप के रास्ते जाकर पाप कर्म करना,मोह के रास्ते जाकर पाकर्म करना और भय के रास्ते जाकर पापकर्म करने से जब वह पाप नही करता और जब हानि के छः मुखों का वह सेवन नही करता अर्थात मद्यपान,संध्या में चौरस्तें की सैर,नाच तमाशे का व्यसन,जुआ, दुप्ट मनुप्यों से मित्रता और आलस्य–इस तरह 14 पापों से वह मुक्त हो जाता है,तब वह छहों दिशाओं अर्थात मांता पिता की सेवा,गुरू की सेवा,पत्नी की सेवा, बंधु बांधवों की सेवा सेवक की सेवा और साधु सन्तो की सेवा, को आच्छादित कर लोक, परलोक दोनो पर विजय प्राप्त कर लेता है और मरने पर स्वर्ग जाता है ।

जिस गृहस्थ को छः' दिशाओं की पूजा करनी हो,वह चारो क्लेशो से मुक्त हो जाये । जिन चार कारणो के वश में होकर मूढ मनुप्य पाप कर्म करने में प्रवृत होता है उनमे से उसे किसी भी कारण के वश में नही होना चाहिये और सम्पति नाश के छहो दरवाजे बन्द कर देना चाहिये । दान,प्रिय वचन,अर्थचर्या और समानात्मकता अर्थात दूसरों को अपने समान समझना,ये लोक संग्रह के सार साधन है। बुध्दिमान मनुप्य इन साधनो का उपयोग करके जगत में उच्च पद प्राप्त कर सकता है ।

भगवान बुध्द की शिक्षायें बहुजन हिताय बहुजन सुखाय वाली है जैसे– निन्दा न करना,हिंसा न करना,आचार नियम द्वारा अपने को संयत रखना, समानता का व्यवहार ,स्वार्थ का त्याग कर आदमी के लिये जीना आदि भगवान बुध्द की शिक्षाये सदैव सर्व कल्याणकारी एवं मंगलकारी बनी रहेगी क्योंकि उनमें तनिक भी भेदभाव की गंध नही आती । भगवान बुध्द के अनुयायी भारत में ही नही दुनिया के अनेकों देशों में पाये जाते है ।दक्षिण पूर्व एशिया के लगभग सभी देश बौध्द धर्म के अनुयायी है । भारत के प्रसिध्द सम्राट अशोक महान भगवान बुध्द का शिक्षाओ ं को अंगीकार कर शिलालेखों के माध्यम से तथा धर्म प्रचारकों को देश विदेश में भेजकर बोध्द धर्म का प्रचार प्रसार किये । एकमात्र बुध्द ही ऐसे महापुरूप थे जो कहते थे –मैं ईश्वर के बारे मत–मसन्तरों को जानने की परवाह नही ।आत्मा के बारे में विभिन्न सूक्ष्म मतों पर बहस करने से क्या लाभ । भला करो और भले बनो । बस यही निर्वाण की ओर अथवा सत्य की ओर ले जायेगा । केवल वही व्यक्ति सब की अपेक्षा उत्तम रूप से कार्य करता है जो पूर्णता निःस्वार्थ है, जिसे न तो धन की लालसा है न कीर्ति की और न किसी अन्य वस्तु की ही । मनुप्य जब ऐसा करने में समर्थ हो जायेगा तो उसके भीतर से कार्ययाक्ति प्रगट होगी जो संसार की अवस्था को सम्पूर्ण रूप से परिवर्तित कर

सकती है । ऐसा आह्वाहन प्रथम लोकनायक भगवान बुध्द ने किया है कर्म के माध्यम से और बौध्द धर्म की स्थापना कर। बौध्द धर्म मानवीय एकता के लिये आज भी मील का पत्थर है । जरूरत है बौध्दमय होने की क्योंकि इसी में सर्व कल्याण और सर्व मंगल का भाव है । भगवान बुध्द के उपदेशों को चरित्र एवं कर्म में उतारकर असमानतावादी जहर को समानतावादी अमृत से तृप्त किया जा सकता है । ठीक उसी तरह जैसे उल्टे को सीधा कर दे,भूले को मार्ग बता दे, अंधकार में दीया दिखा दे । –बुध्दं श्शरणं गच्छामि । धम्मं शरणं गच्छामि । संघं शरणं गच्छामि ।।

नन्दलाल भारती

।। निःस्वार्थता –काल के गाल पर अमरता ।।

परमार्थ के भाव को त्याग कर स्वयं के हितार्थ कार्य करना बडे पाप के समान है ,जो मनुष्य यह सोचता हे कि मैं पहले अपना अधिकार जमा लूं अथवा उपभोग कर लूं । मैं ही अधिक से अधिक धन का संग्रहण कर लूं ।सर्वस्व का अधिकारी बन जाउूं ।मैं और मेरे ही परिवार के लोग सुखी रहे, सम्पन्न रहे । मैं उूंची जाति का हूं तो मुझे छोटी जाति के लोगो के दमन का पूरा अधिकार है । बडे पद पर हूं तो मातहतों को अगुंली पर नचाना मेरा जन्म सिध्द अधिकार हो गया है । छोटे लोगो की छाती पर चढे रहना ।उनके हितों को अनदेखा कर खून के आंसू देना प्रबन्धकीय गुण मान लेना अपराध है, पाप है । अपने हित को नजरअंदाज कर दूसरों के हितार्थ कार्य करना व्यक्ति के बडप्पन में चार चांद लगा देता है । यही व्यक्ति अपने कर्म से देवत्व को प्राप्त कर लेता है । कहा जाता है कि कोई किसी की सहायता नही करता । सेवा का अधिकार है प्रभु के सन्तान की । भाग्यवान व्यक्ति को चाहिये की वह अपने को छोटा समझकर मानव की सेवा भगवान की पूजा मान कर करे । यदि व्यक्ति ऐसा करता है तो वह निश्चित ही प्रभु के काफी नचदीक होगा ।उपासनाओ का यही मर्म है कि व्यक्ति निश्छल मन से दूसरे के भला के लिये सदैव तत्पर रहे ।जो व्यक्ति निर्धनएदुर्बल और बीमार की सेवा करता है वह सही माने में दरद्रिनारायाण की सेवा करता है । अपने में ब्रह्मभाव को अभिव्यक्त करने का एकमात्र उपाय है कि दीन दरिद्रो बीमारों की सेवा की जाये ।चम्मचागीरी चिकनी चुपडी बाते करना तो स्वार्थियों का काम है ।भाग्यवान और ब्रहमभाव रखने वालो का काम तो सूर्य की तरह प्रकाश देना है । ऐसे लोग अपने स्वार्थ की त्याग कर बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के लिये जीते है । परमार्थियों का जीवन परोपकार के लिये होता है ।

दुप्कर्म के द्वारा अपना ही नही दूसरों का भी बुरा होता है ।सत्कर्म के माध्यम से व्यक्ति दूसरों का ही भला ही नही अपना भी भला करता हैं । कहा जाता है कि बिना फल उत्पन्न किये कोई भी कर्म नप्ट नही होता ।यदि कर्म बुरा होगा तो उसका फल भी बुरा ही होगा । यदि व्यक्ति सत्कर्म करता हैं तो निश्चित रूप से शुभ फल प्राप्त होगा ।मनुप्य होने का दायित्व निभाना है तो अपने में परमार्थ के भाव की अभिवृध्दि करनी होगी । शम्बुक ऋपि ने सामाजिक समानता के लिये त्याग किया ।उनका बध राम के हाथो हो गया परन्तु शम्बुक ऋपि का सामाजिक समानता के लिये किया गया क्रान्तिकारी कार्य विपमता की आधीं में दीये की भांति प्रकाश दे रहा है और जातीय दम्भ की दूरियां निरन्तर कम हो रही है ।शम्बुक ऋपि का त्याग व्यर्थ नही गया । भगवान बुध्द के त्याग को कभी दुनिया भूल सकती है .....कभी नही ..... परमार्थ के निश्छल भाव और त्याग की वजह से सिध्दार्थ नामक राजकुमार भगवान बुध्द बन गये । परमार्थ में ऐसी श्शक्ति तो हैं जो साधारण से मनुप्य को भी पूजनीय बना देती है ।रविदास, कबीर आदि अनेक उदाहरण है ।

आदमी होने के नाते हमारा दूसरो के प्रति भी कर्तव्य है कि हम उनकी सहायता करे । उनका भला करें जाति धर्म, उूंच–नीच गरीब अमीर के भेद की खाईयों को दरकिनार कर। इस विपय में विवेकानन्द के विचार है कि दूसरों के प्रति हमारे कर्तव्य का अर्थ है –दूसरों की सहायता करना,संसार का भला करना । अब प्रश्न उठता है कि हम संसार का भला क्यों करे । वास्तवम में बात यह है कि उूपर से तो हम संसार का उपकार करते है ,परन्तु असल में हम अपना उपकार करते है । एक दाता उूंचे आसन पर खडे होकर और अपने हाथ में दो पैसे लेकर यह मत कहे– ये भीखरी,ले यह मैं तुझे देता हूं । परन्तु तुम स्वयं इस बात के लिये कृतज्ञ होओ कि तुम्हें वह निर्धन व्यक्ति मिला जिसे दान देकर तुम स्वयं अपना उपकार किया । धन्यपाने वाला नही होता देने वाला होता है। इस बत के लिये कृतज्ञ होओ कि इस संसार में तुम्हे अपनी दयालुता का प्रयोग करने और इस प्रकार पवित्र और पूर्ण होने का अवसर प्राप्त हुआ । स्वार्थपरता व्यक्ति को नरक की ओर ढकेलती है । निःस्वार्थता का भाव व्यक्ति को प्रभु तुल्य बना देती है । यदि व्यक्ति तन मन और धन से सम्पन्न होने का सौभाग्य प्राप्त कर चुका है तो ऐसे मनुप्य को मनुप्य की सेवा ईश्वर भाव से करने का संकल्प लेना चाहिये क्योंकि ऐसे संकल्प काल के गाल पर अमरता प्रदान करते हैं ।

नन्दलाल भारती

।। मनुष्य को सुखी बनाना–धर्म का उद्देश्य ।।

धर्म के पथ पर अग्रसर होने का प्रथम लक्षण प्रफुल्लित होना है। विवादयुक्त होना कट्टरवाद, अनावश्यक पाखाण्ड युक्त वातावरण निर्मित करना अथवा वैचारिक भेद पैदा करना नही । सच ही तो कहा गया है धर्म का रहस्य आचरण से जाना जाता है । व्यर्थ के मतवादों से बिल्कुल नही हैं। भला बनना भलाई के काम करना इसी में धर्म निहित है । मनुष्य में जो स्वाभाविक बल ही है उसकी अभिव्यक्ति ही धर्म है। धर्म का उद्देश्य मनुष्य को सुखी बनाये रखना होता है न कि उसे बिखण्डित कर अपना उल्लू सीधा करना,सत्ता हासिल करना । मनुष्य में पाशविक,मानवीय और दैवी गुण होते है। वह गुण जो व्यक्ति में पशुता के भाव का संचार करता है वह पाप है, जो गुण व्यक्ति में दैवी गुण बढाता है वही पुण्य है । व्यक्ति को पाशविक गुणों पर विजय प्राप्त कर मनुष्य बनना ही मनुष्यता के प्रति न्याय है । धर्म तो वह है जिसके सानिध्य में पशु आदमी और आदमी परमात्मा तक उठ सकता है ।

जिस किसी वस्तु से आध्यात्मिक,मानसिक अथवा शारीरिक दुर्बलता उत्पन्न हो उसे पैर से भी नही छुना चाहिये । मनुष्य में जो स्वाभावकि बल है उसकी अभिव्यक्ति ही धर्म है । भगवान महावीर ने दुनिया को कई उपदेश,बहुत अच्छे संदेश दिये उनका सबसे प्रिय उपदेश था अहिसा के मार्ग पर चलने का । आज के युग में जहां चारों ओर चोरी डकैती,लूटपाट,आतंकवाद जातिवाद फैला हुआ हैं । ऐसे वातावरण में बात चाहे जितनी बडी बडी क्यो न की जाये पर चाहत तो ऐशोआराम की चीजें इक्ट्ठा करने ओर जल्दी से जल्दी अमीर बनने की चाह ने आम आदमी को झकझोर कर रख दिया है । कोई भी मनुष्य आराम से या यूं कहे कि पैसा कमाना नही चाहता,सभी इसी भागमभाग में लगे हुए है ।क्या आदमी के संस्कार इतने छझेटे हो गये है कि आदमी चाहे कही भी कुछ कर सकता है मानव धर्म को भूलकर अहिंसा परमो धर्म को भूलकर । आज के आदमी को धर्म की अफीम की खुराक को तिलांजलि देकर भगवान महावीर और भगवान बुध्द के बताये रास्ते पर चलना होगा । इसी मार्ग पर आदमी,आदमी होने का सुख भोग कर परमात्मा तक उठ सकता है ।तभी धर्म के उद्देश्य पर खरा उतरा जा सकता है ।धर्म का उद्देश्य तो जीवन को उत्सव बनाना होता है ।सुखी बनाना होता है । जो धर्म आदमी आदमी के बीच दीवार खीचे ,बिखण्डित समाज की स्थापना को बल दे। असमानता को महत्व दे । धर्मावलम्बियों में आपस में नातेदारी की मनाही करे । ऐसे धर्म को धर्म कहना धर्म का उपहास है ।जो धर्म जीवन को उत्सव बनाने की सीख देता हो सही मायने में वही सच्चा धर्म है ।

हर व्यक्ति की आत्मा परमातम का अंश है यदि किसी की आत्मा को धर्म की वजह से अथवा अन्य कारणो से दुख पहुंचता है तो निश्चित रूप से इसका एहसास परमात्मा को होगा । परमात्मा को यह स्वीकार नही होगा की उसके बन्दे आपस मे बैर भाव से जीये। मनुष्य एक असीम वृत्त है जिसकी परिधि कही नही है,लेकिन जिसका केन्द्र एक स्थान में निश्चित है,और परमेश्वर एक ऐसा असीम वृत्त है,जिसकी परिधि कहीं नही है परन्तु जिसका केन्द्र सर्वत्र है ।परमात्मा के सिवाय दूसरा कुछ भी नही हैं । जीवित ईश्वर व्यक्ति व्यक्ति/जीव के भीतर है,इसके बाद भी व्यक्ति काल्पनिक झूठी चाजों में विश्वास करता है ।मनुष्यदेह में मानवात्मा ही एकमात्र उपास्य ईश्वर है । धर्म का रहस्य आचरण से जाना जा सकता है,व्यर्थ के मतवादो अथवा आडम्बरो,रूढियों से नही ।

धर्म के नाम पर क्या क्या हो रहा है जगजाहिर है।अत्याधुनिकता की होड में अस्मिता के साथ खिलवाड हो रहा है ।मां बाप गुरू का अपमान हो रहा है,जाति के नाम पर आदम का दमन हो रहा है क्या धर्म यह सीख देगा । कभी नही आदमी अपने मतलब के लिये धर्म का व्यापार करने लगा है । कला और गला के भरोसे पूजनीय बनने लगे है । सबसे बडा धर्म आदमियत आज लहूलुहान है । सत्य के भी आतंकित आंसू बह रहा है । न्याय विवादित होने लगा है। अनाचार जातिवाद, व्यभिचार साम्प्रदायिकता का आतंक बढने लगा है । गुरू और शिष्य का सम्बन्ध ग्राहक और दुकानदार जैसा हो गया है ।आदमी आदमियत को भूलता जा रहा है । क्या कोई धर्म ऐसी शिक्षा कभी दे सकती है । कभी नही..... क्या ऐसी सीख देने वाला धर्म हो सकता है.....कभी नही ।

धार्मिक मतभेदों को लेकर दंगा फंसाद करना, जातिवाद का पोपण करना ,राजनीति करना,गरीबों का शोपण ,तथाकथित ऊची जाति के नाम पर तथाकथित छोटी जाति का दमन करना आदि पापाचरण हैं । आदमी होकर दीन दलित का शोपण करना,जुल्म करना,अत्याचार करना तो कदापि धर्म हो ही नही सकता। जो दीन है दलित है,उसकी मदद करना, उसे आत्मबल प्रदान करना,उसके हितार्थ कार्य करना ही धर्म है । धर्म तो सद्भावना,समानता का पोपक होता है। सर्वकल्याणकारी और मंगलकारी होता है । धर्म की छावं आदमी को सुखी बनाने एवं नर से नारायण बनने का माध्यम है । वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि हम मानवीय एकता, समानता , सद्भावना और सम्वृध्दि के लिये अथक प्रयास करें। आदमियत का धर्म निभाये। आज के आदमी को आदमियत के धर्म पर खरा उतरना होगा यही वक्त की मांग है। इसी मे समाज और देश की सुख शान्ति निहित है ।

नन्दलाल भारती

। आम जनता से दूर है आजादी आज भी ।

स्वतन्त्रता के जश्न का औपचारिक आयोजन 15 अगस्त या 26 जनवरी को दिखायी तो पड जाता है पर वास्तविक आयोजन की धूम नही होती । सच्ची अनुभूति तो वह होती हैं जो सर्वत्र क्षण प्रतिक्षण महसूस की जा सके।स्वतन्त्रा का ऐसा अनुभव आजादी के इतने सालों के बाद भी आम गरीब जनता शोपित पीडित वंचित जनता को तो नही हुआ है । उन्हे हो भी कैसे सकता हैं वे तो आज भी रोटी रोजी की तलाश में दर दर भटक रहे हैं ।जातिवाद,धर्मवाद,महंगाई,बेरोजगारी,,भूखमरी ,अशिक्षा,सामाजिक ,आर्थिक कुव्यवस्था ऐसी मुश्किलों से जूझ रहे हैं । आम गरीब जनता/शोपित पीडित वंचित जनता भूमिहीन खेतिहर मजदूर ,सामाजिक ,आर्थिक कुव्यवस्था से जब तक जूझते रहेगे तब तक सैध्दान्तिक रूप से ये खुद को कैसे स्वतन्त्र मान लेगे ।आजादी का जश्न अलग अनुभूति हैं और सामाजिक, आर्थिक कुव्यवस्था का क्षण प्रतिक्षण रिसता जख्म अलग अनुभूति है ।इन दोनों के बीच में पनपे भेद को सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक रूप से समझना होगा ।जब तक शोपित पीडित वंचित जनता भूमिहीन खेतिहर मजदूर आजादी की असली अनुभूति को महसूस नही करता है आजादी का मतलब उसके लिये कोरा सपना होगा ।आज के युग में भी सामाजिक बुराइयां शोपित पीडित वंचित जनता के जीवन में काफी दुखदायी है ।सच मायने में यही बुराइयां ही असली आजादी का एहसास नही होने देती है ।आमजनों की आंखों में चमक देखनी है तो नीजि स्वार्थ से उपर उठना होगा । दायित्वों एवं देश धर्म पर खरा उतरना होगा ।समानता के भाव को विकसित करना होगा । जातिवाद खत्म करना होगा ।गरीबो को रोजगार के साधन उपलब्ध कराना होगा। शिक्षा एवं समुचित रोजगार के बन्दोबस्त करने होगे । भूमिहीन खेतिहर मजदूरो को खेती की जमीन देना होगा । सत्ताधारियों को बिना किसी भेदभाव के आमजनो की समस्यों का निराकरण करना होगा । तभी आमजनो की आंखों में चमक आ सकेगी ।

जैसाकि विदित है कि राष्ट्र झोपडियों में बसता हैं किसान,जूते बनाने वाले मेहतर और भारत के ऐसे ही निचले वर्गो में ज्यादा काम करने और स्वावलम्बन की क्षमता है ।वे लोग युग युग से चुपचाप काम करते आ रहे हैं जो इस देश की समस्त संपदा के उत्पादक है । दुर्भाग्य बस आजाद देश में यही लोग श्शोपण उत्पीडन के शिकार है ।सच तो यही है कि ये लोग स्वतन्त्रता से बहुत दूर पडे हुए हैं। इनकी चौखटों पर आज भी भूख लाचारी का ताडंव है ।

कितनी बडीं हास्यपद स्थिति हैं जिस देश के पढे लिखे युवक दुनिया को अपने ज्ञान का लोहा मनवा रहे हैं । जिस देश में उच्च पदो से लेकर अतिनिम्न पदों के लिये शैक्षणिक योग्यता निर्धारित हैं और उनके रिटायरमेण्ट की अवधि तक निर्धारित वही दूसरी ओर अल्पशिक्षित लोग देश के सर्वोच्च पदो तक पहुंच जा रहे हैं । सासंद विधायक बन रहे है कब में पैर लटकाये हुए भी मन्त्री तक के पदो पर बैठे रहते हैं । क्या यह शिक्षित प्रतिभाओ के साथ छल नही । इस अन्याय को न्याय का रूप कौन देगा ।शायद कोई नही क्योंकि इस परिक्रिया में बदलाव सत्तासुख से विमुख कर सकता है और मरने के बाद राजकीय सम्मान से दाह संस्कार की सुविधा में भी अडचने खडी हो सकती है।यही तो डर है जो शिक्षित एवं युवा शक्ति की राह का कांटा बना हुआ है ।क्या अर्न्तरात्मा की दुहाई देने वालो में भी अर्न्तरात्मा का संचार है सच मानिये तभी हमारी आजादी अपने मन्तव्य को पा सकेगी जिस दिन आजादी का मन्तव्य पूरा होगा गया उस दिन भारत विकासशील देशेा की प्रथम पंक्ति में खडा होगा । समर्थ लोग आमजनो की पीडा को समझे और निराकरण भी करें ।

आज भी देश के करोडो तरक्की से दूर पडे,पेट में भूख लिए, क्षेत्रवाद,जातिवाद गरीबी का दंश झेलते हुए लोगो का उम्मीद है कि उन्हे वास्तविक आजादी मिलेगी और न्याय उनके दरवाजे तक भी पहुचेंगा ।क्या घडियाली आंसूंओ,कोरे वादो, नारो या झूठी शपथ लेने भर से यह सम्भव हैं ं कदापि नही । इसके लिये कथनी और कथनी कें अन्तर को दूर करना होगा ।स्वार्थ से उपर उठना होगा । जातिधर्म के दम्भ को त्याग कर सिर्फ भारतीय बनना होगा ।आज देशवासियों को भारतीय बनना नितान्त आवश्यक हो गया है।वंचितों गरीबों को तरक्की की राह ले चलना होगा ।इसके लिये भले ही खुद के हितो का त्याग करना पडें । त्याग करने का जज्बा दिखाना होगा । वंचितो पिछडों गरीबों सबको साथ लेकर चलना होगा तभी देश की आजादी सार्थक हो सकती है वरना योहिं समर्थ लोग सत्तासुख की भूख में जोडतोड कर सिहांसन पर विराजमान होते रहेगे और तरूणाई तडपती रहेगी ।

हम देश की अर्थ व्यवस्था पर नजर डाले तो दृप्टिगोचर होता हैं कि कुछ नेताओ नौकरशाहों अथवा उदयोगपतियों की मुटठी में कैद होकर रह गयी हैं । आम आदमी आश्वसन की खुराक पर जीने को मजबूर हो गया है । आजादी के अमर श्शहीदों के सपने टूट गये हैं ।सत्ता अपराधियों के कब्जे में होकर रह गयी है ।विधायिका एवं कार्यपालिका पर अंकुश कसने के लिये न्याय पालिका तो हैं पर न्याय आज इतना महंगा हो गया है कि आमजन को उपलब्ध ही हैं ।नतीजन श्शोपण अत्याचार सहने को मजबूर हैं आमजन ।पत्रकारिता से उम्मीद थी अभी हैं

और रहेगी भी पर रह रहकर उठते सवाल और अधिक भय पैदा कर देते हैं भ्राप्टाचार,अनाचार ,अत्याचार के समन्दर से समाजवाद रूपी गंगा के निकलने की उम्मीद थी पर वह भी उम्मीद रौदी जा चुकी है क्योंकि समाजवाद वोट बटोरने सत्ता सुख भोगने एवं स्वार्थ की भटटी में आमजन को झोकने का जरिया बनता नजर आ रहा है । तभी तो आज आजादी के इतने बरस बाद भी समानता का दीप नही जल सका ।

उच्च वर्ण की मानसिकता के इतिहासकारो ने भी पिछडे एवं दलित वर्ग के अमर शहीदों के बलिदान को इतिहास के पन्नो से निकाल अलग कर दिया ।उदरया चमार ,नत्थू धोबी वीरांगना उदादेवी वाल्मिकी अमरसिंह चमार,चेतराम जाटव,बल्लू मेहतर बांके चमार,वीरा पासी मिठाई चमार,कल्लू धोबी,सीताराम,जौधा चमार रामजैसवार रमई कुरील रमा दुलारे कोरी पूरनमाल जाटव,बलदेव सिंह,आर्यशिल्पाकार,दुर्गा धानुक,हीरालाल धानुक,सकता जाटव,शिवपति पासी गोपीदास,सुरखटीक,कंधई धुसिया,पंचानन्द धुसिया,भोलानाथ खटीक,रामसेवक राउत,मेवाराम धानुक,कन्हैयालालवाल्मिक ,हरिसिंह जाटव, विश्वनाथ प्रसाद कजड,लालजी महार,रामसेवक राउत महावीर हैला आदि अनेक अनजान अमर श्शहीदों अपने जीवन का बलिदान कर दिये आजादी के लिये परन्तु इतिहासकारो ने इनके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार कर अपनी मानसिकता का परिचय दे दिया ।

आजादी के साठ साल के बाद भी दलित वंचित समाज आज भी तरक्की से बहुत दूर है ।सचमुच यह चिन्तन का विपय है एवं दोयम दर्जे का व्यवहार तथाकथित उच्च समाज की घृणित मानसिकता का परिचायक भी है ।

आमजनों की आंखों में चमक देखनी है । आजादी के असली सपने को पूरा करना हैं तो नीजि स्वार्थ से उपर उठना होगा । दायित्वों एवं देश धर्म पर खरा उतरना होगा ।समानता के भाव को विकसित करना होगा । जातिवाद खत्म करना होगा ।गरीबो को रोजगार के साधन उपलब्ध कराना होगा। शिक्षा एवं समुचित रोजगार के बन्दोबस्त करने होगे ।दलित वंचितो शिक्षितो को सरकारी एंव गैर सरकारी संस्थानों में प्राथमिकता के आधार पर रोजगार उपलब्ध कराना होगा । भूमिहीन खेतिहर मजदूरो को खेती की जमीन देना होगा । सामाजिक बुराईयों को एकदम से खत्म करना होगा।सीमा विवाद को खत्म करना होगा ।सत्ताधारियों को बिना किसी भेदभाव के आमजनो की समस्यों का निराकरण करना हो । तभी आमजनो की आंखों में चमक आ सकेगी और अमर श्शहीदों की आत्मायें विहस पडेगी । अगर ऐसा नही हुआ तो वंचितश्दलित शोपित पीडित समाज मूलभूत जरूरतो एवं तरक्की से अलग थलग पडा बार बार सवाल कहता रहेगा आजादी के बिते साठ साल हम दलित वंचित कब तक रहेगे बेहाल .अंग्रेजो के

खूनी जबडेां से हासिल स्वतन्त्रता का हर आमजन गरीबश्शोपित वंचित सम्मान करता हैं । स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार है ।साथ ही वह याचना भरी दृप्टि से सामाजिक एवं आर्थिक स्वतन्त्रता की राह ताक रहा है ।यदि सामाजिक एवं आर्थिक परतन्त्रता से वंचित खेतिहर भूमिहीन मजदूरो को स्वतन्त्रता मिल जाती हैं तो सचमुच भारतीय इतिहास में ही नही हर आमजनों के दिलों यह स्वतन्त्रता अंकित हो जायेगी ।स्वतन्त्रता के इतने बरसों के बाद भी देश में सामाजिक कुव्यवस्था,अंधविश्वास,प्रपंच,सामन्ती श्शोपण वर्ग और वर्ण भेद का भयावह रूप अठखेलियां कर रहा है ।इन बुराइयों के दमन के लिये कोई आगे नही आ रहा है ।सामाजिक कुव्यवस्था से वंचित समाज आज भी झुलस रहा है ।अभिशप्त समाज और आम संघर्परत् आदमी की अर्न्तवेदना को कोई सुनने वाला नही हैं स्वतन्त्रता प्राप्ति के इतने बरसों के बाद भी ।काश वंचित समाज आमजनों/गरीबजनों सामाजिक–आर्थिक अधिकारों के समर्थन में कोई मसीहा अरबों की भीड से उठ खडा हो जाता ।

स्वामी विवेकानन्द ने भी आमजनों की दुर्दशा देखकर पीडा का एहसास किया था उन्ही के शब्दों में–जब मैं गरीबों के बारे में सोचता हूं तो मेरा हृदय पीडा से कराह उठता है ।बचने या उुपर उठने का उनके पास कोई अवसर नही है। वे लोग हर दिन नीचे और नीचे धंसते जाते हैं । वे निर्दशी समाज के वारों को निरन्तर झेलते जाते हैं । वे यह भी नही जानते कि उन पर कौन वार कर रहा हैं,कहां से कर रहा हैं । वे यह भी भूल चुके हैं कि वे स्वयं भी मनुप्य हैं । इन सबका परिणम हैं गुलामी ।दुर्भाग्यबस स्वतन्त्रता के इतने बरसों के बाद भी गरीब वंचित खेतिहर भूमिहीन मजदूरो वही जहर आज भी पीने को मजबूर है ।

हमारा दुर्भाग्य ही है कि आज भी देश मे राप्ट्र क्या है एक दिशाहीन मुद्दा बना हुआ है । यहां के लोग जाति धर्म के नाम से जाने पहचाने जाते हैं ।राप्ट्र तो दोयम दर्जे का होकर रह जाता हैं ।देश बनता हैं संस्कृति ,परम्पराओं और देश के निवासियों की असंदिग्ध निप्ठा से पर देश के निवासियों में सर्वप्रथम निप्ठा तो जाति धर्म के प्रति प्रतीत होती है इसके बाद राप्ट्र का क्रम आता है । इस मनोदशा को बदलना होगा समृध्दशाली और सामर्थ्यवान भारत की रचना करनी होगी ।स्वतन्त्र भारत,आत्मनिर्भर के इतने बरसों के गौरवमयी इतिहास पर खून के छींटे आज भी विराजमान है, कुछ कराहे हैं,शोपित वंचित आमजन आज भी जीवनयापन के साथ आत्म सम्मान के लिये संघर्परत हैं, जिनकी कराह देश की नींद में आज भी दाखिल है । भप्ट्राचार,स्वार्थ, महंगाई,गरीबी जातिवाद धर्मवाद, ,संघर्परत् आमजनो भूमिहीन खेतिहर मजदूरो की दयनीय दशा को देखकर जबान पर बरबस ही आ जाता है– जातिवाद से अभिशापित शोपित पीडित वंचित जनता

से बहुत दूर है आजादी आज भी ।
नन्दलाल भारती

।। धर्म परिवर्तन पाप है .....क्या..... ?।।

धर्मान्तरण पाप है,भ्रम में डालकर किनारा कर लेना क्या पाप नही ध धर्म के नाम पर अत्याचार सहना क्या अपराध नही ध मान सम्मान की अपेक्षा करना पाप है । धर्मान्तरण पाप है का नारा देने वालों की नजरों में सचमुच पाप है तो वे क्या कर रहे हैं बिखण्डित समाज को एकता के सूत्र में बांधने के लिये । क्या वे सामाजिक समरसता स्थापित करने के लिये चौथे दर्जे को सामाजिक समानता का हक दिये है– नहीं न... चौथा दर्जा आज भी सामाजिक समानता के लिये संघर्परत् आर्थिक तंगी से भी जूझ रहा है । क्या चौथे दर्जा मानवीय समानता का हकदार नही है ध क्या उसकी ही किस्मत में ही आंसू से रोटी गीली करना ही लिखा है ध कब तक आबादी के इस बडे हिस्से को अंधेरे में रखा जायेगा , कब तक विकास से दूर रखा जायेगा । धर्म परिवर्तन पाप है कहकर हाथ उपर उठा लेना अथवा इसके खिलाफ कानून बना देना समाधान नही है ।धर्म परिवर्तन आजादी के पहले भी हुआ है, आजादी के बाद भी हो रहा है । धर्म परिवर्तन अन्य धर्मो की बजाया हिन्दू धर्म में अधिक हुआ है । धर्म परिवर्तन से धर्माधीश तनिक विचलित हुए हैं । धर्मान्तरण क्यों हो रहा हैं । समस्या के समाधान के लिये आगे नही आ रहें है । नतीजन सामाजिक असमानता, भेदभाव,रूढिवादिता एवं कुरीतियां की जडे आज भी गहराती जा रही हैं और धर्मान्तरण भी हो रहा है । धर्माधीश/ सत्ताधीश सत्ता सुख का उपभोग करते हुए आरोप प्रत्यारोप लगाने के सिवायकुछ भी नही कर रहे है । धर्म परिवर्तन के लिये वे मिशनरियों को कसूरवार ठहराकर अपने फर्ज की इतिश्री मान लेते है । कुछ कसूर धर्मपरिवर्तन करने वालो के सिर भी मढ दिया जाता है कि वे विदेशो खैरात के लिये धर्म परिवर्तन कर रहे है। जबकि धर्म परिवर्तन का धन की लालच से तनिक भी सम्बन्ध नही है । धर्मपरिवर्तन तो सामाजिक समानता की प्यास है ।

कहा जाता है कि धर्म परिवर्तन हिन्दू संस्कृति और देश के लिये घातक है । धर्मपरिवर्तन की चिन्ता करने वाले धर्माधीश सत्ता सुख के उपभोग के अलावा और क्या किये है धर्म परिवर्तन करने वाले आदिवासियों और दलितों के लिये । क्या धर्म के इतिहास में कोई फेर बदल कर पाये है । देश के संविधान में बार बार संशोधन हो जाता है तो क्या धर्म के संविधान में सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता के लिये संशोधन नही किया जा सकता ध धर्माधीश/ सत्ताधीश धर्मान्तरण के कारणों पर गहन चिन्तन मनन क्यों नही करते ध्धर्मानतरण पर रोक लगाने की बजाय जातिवाद,अत्याचार,शोपण, एवं सामाजिक बिखण्डिता के खिलाफ धार्मिक कानून क्यों

नही लाते । क्या चौथे दर्जे को दास बनाये रखना ही धार्मिक कानून बना रहेगा । क्या इसमें संशोधन की कोई गुंजाईश नही ध मानवाधिकार पर अतिक्रमण आदमियत के खिलाफ है,कानून भी इजाजत नही देता । धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध मानवाधिकार के विरूध्द है। क्या सदियों से सामाजिक पिछडेपन ,भेदभाव का जहर पीने के लिये चौथा दर्जा प्रतिबध्द रहेगा विज्ञान के युग में भी ध सचमुच धर्माधीश धर्मपरिवर्तन से चिन्तित है तो उन्हे सामाजिक असमानता के खिलाफ जंग झेडना होगा । धर्मावलम्बियों के बीच जब तक अन्य धर्मो की तरह सामाजिक समानता स्थापित नही हो जाती तब तक धर्म परिवर्तन पर रोक लग ही नही सकती । चाहे कितने ही कडे कानूनी शिकंजे में कसने की कोशिश की जाये, पीडित मान सम्मान और आत्मिक सुख के

लिये असमानतावादी धर्म की मोटी दीवार फांदकर समानतवादी धर्म की छांव तलाशता रहेगा । गर्व से कहो हम हिन्दू है अथवा धर्मपरिवर्तन पाप है के नारे का चौथे दर्जे के लिये तब तक कोई औचित्य नही है जब तक धर्माधीश उसे समाजिक समानता का पूरा अधिकार नही दे देते । यही वक्त की मांग भी है ।
निश्छल मन से पडताल की जाये तो यह पाया जा सकता है कि चौथे दर्जे को हिन्दू माना ही नही गया उसे तो बस सेवक दास या गुलाम के अतिरिक्त और कुछ नही समझा गया ।उसके साथ अन्याय सदा ही हुआ है । अधिकार वंचित रखा गया यहां तक की धार्मिक अनुप्ठानों से भी दूर रखा गया ।उसे हीनदृप्टि से देखा गया ।इसी वजह ने समाज को बिखण्डित कर दिया है। समाज सवर्ण अवर्ण ,द्विज अद्विज में बिखण्डित हो चुका है । धर्मान्तरण चौथे दर्जे के लोग ही कर रहे है । ना जाने किस युग से जिनके पुरखों की हड्डिडयां देश की माटी में मिलती आ रही है,वही दोयम दर्जे के होकर रह गये है। जरूरत है जातीय एकीकरण की एवं जातिविहीनता की ।जातिविहीनता ही धर्म को मजबूती प्रदान कर सकती है बशर्ते धर्माधीश इस सच्चाई को समझे।

धर्मान्तरण पाप है या धर्म की आड में होने वाले अत्याचार,शोपण,जुल्म,आदमी को बांटने का पणयन्त्र जातिवाद,भेदभाव है । देखना ये है कि धर्मान्तरण को पाप कहने वाले धर्माधीश/सत्ताधीश सर्वसमानता का धार्मिक अध्यादेश कब जारी करते है और कितनी ईमानदारी से पालन करते हैं।
नन्दलाल भारती

।। टूटता परिवार बिखरती आस ।।

इतिहास गवाह है कि आदमी आदिम युग से समूहो में रहता आ रहा है चाहे वे गुफाओं मे रहा हो ,जंगलों में रहा हो या झोपडियों में। सभ्यता के विकास के

साथ आदमी झोपडियों से निकलकर घरों बडे बडे महलनुमा वातानुकुलित घरों में रहने लगा है । समूह में रहने की प्रवृति परिवार की जननी है । भूमण्डलीयकरण एवं सूचनाक्रान्ति के इस युग में देशो के बीच की दूरियां तो कम हुई है परन्तु रिश्तों के बीच दूरियां बढ रही है ,जिसकी वजह से संयुक्त परिवार टूटने लगा हैं और बूढे मां बाप की आंशायें बिखरने लगी है ।वे खुद को असुरक्षित महसूस करने लगे है ।वर्तमान युग में एकल परिवार का प्रचलन तेजी से बढ रहा हैं । पैतृक व्यवसायों का जमाना नही रहा । बच्चे अपनी मर्जी के अनुसार रोजगार अपना रहे है । इसलिये वे पैतृक घर से दूर वे अपना संसार बसाने लगे है,जिससे वे रक्त सम्बन्धियों,इप्ट मित्रो पारिवारिक आत्मीय जनों से दूर होते जा रहे हैं और संयुक्त परिवार टूटने लगा है । संयुक्त परिवार टूटने का खामियाजा बूढे मां बाप और बच्चों को भुगतना पड रहा है । मां बाप तो बेसहारा हो ही रहे है बच्चे भी मानवीय रिश्तों की उप्मा और स्नेह से दूर होते जा रहे है जबकि सयुंक्त परिवार में सहज ही मानवीय गुणों और नैतिक दायित्वों का विकास हो जाता था । आज इन्ही मानवीय एवं नैतिक गुणो के लिये प्रशिक्षण केन्द्रों की मदद ली जा रही है । प्रशिक्षण भी उतना असरकारक नही साबित हो पा रहा है जितना असरकारक संयुक्त परिवार का माहौल होता था । आज का बच्चा दादा–दादी काका–काकी,फुआ–फुफा,नाना–नानी,मामा–मामी आदि रिश्तों के सोधेपन से अपरिचित हो रहा है । उसके कंधे पर भी जिम्मेदारियों का बोझ डाल दिया गया है।स्कूल की छुट्टियां होते ही प्रशिक्षण या समर क्लासेस के लिये भेज दिया जाता है ताकि बच्चा गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज करा ले । संयुक्त परिवार की टूटन की वजह से बच्चों का बचपन खोता जा रहा है जो किसी न किसी अनहोनी का द्योतक है ।संयुक्त परिवार की टूटन से युवाओं की जीवन शैली में अनेकों बुराईयों ने जगह बना लिया है । धूम्रपान मदिरापान अनैतिक सम्बन्धों जैसी बुराईयो के चंगुल में वे फंसने लगे है,आचरण विहीन एवं अमर्यादित रहने लगे है । सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों, परम्पराओं आदर्शो आदि को भूला रहे है,जिससे परिवार जैसी पवित्र एवं प्रतिप्ठित संस्था का दम घूटने लगा है ।आज बुजुर्ग हाशिये पर आ चुके है। मांता पिता का हस्तक्षेत बर्दाश्त नही । पाश्चात्य जीवन श्शैली एवं भौतिकता की चकाचौध ने इस कदर अंधा बना दिया है कि मांता पिता का हस्तक्षेप और मर्यादित जीवन पसन्द नही । उपेक्षा के शिकार मजबूर मां बाप वृध्दाआश्रम/अनाथ आश्रम तक के दरवाजे खटखटाने को मजबूर हो रहे है ।

भारतीय सामाजिक संरचना के अर्न्तगत् परिवार /संयुक्त परिवार का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । भारतीय समाज परिवार पितृ सत्तात्मक एक पवित्र संस्था हैं जो संयुक्त परिवार की नींव पर टिका है । जहां जीवन के हर क्षेत्र में परिवार की निर्णायक भूमिका होती है । परिवार में सभी एक के लिये और एक सभी के लिये होता

होता हैं । परिवार के लोग संगठित रूप से रहते हैं । हरेक दुख सुख में काम आते है । परिवार के बीच आपसी सहयोग,सहानुभूति समर्पण का भाव होता है परन्तु आज वही संयुक्त परिवार टूटन का शिकार है । ना जाने किसकी इस स्वस्थ परम्परा को नजर लग गयी है । संयुक्त परिवार की टूटन के लिये युवाओं को ही दोपी कहना उचित न होगा । अभिभावको का भी नैतिक कर्तव्य बनता है कि वे अपने बच्चो से मित्रवत् व्यवहार करें,नैतिक मूल्यों पारिवारिक मूल्यों,संयुक्त परिवार के महत्व/उपयोगिता ; रिश्तों के
सोधेपन एवं मिठास का अमृतपान कराते रहे । यही अमृतपान मानवीय रिश्तों को प्रगाढता प्रदान करता है । धन सम्पदा का संचय ही जीवन नही है । सच्चा सुख तो सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण,सदाचार,सद्भाव, मर्यादाओं का पालन एवं समानता का भाव और परिवार में मिल बांटकर खाने में है ।सही जीवन मूल्यों से अवगत कराना आज हर मां बाप का परम् कर्तव्य हो गया है । सामाजिक विकास में बाधक परिस्थितियों भ्रप्टाचार, अपराध, झल झूठ, स्वार्थ, उपभेक्तावादी संस्कृति,जातिवाद और धर्मान्धता से दूरी बनाते हुए यदि बाल्यकाल से ही नैतिक, समतावादी, सदाचार एवं संस्कृति के मूल्यों ने बच्चों के हृदय में स्थान पा लिया तो परिवार रूपी पवित्र एवं मर्यादित संस्था को संकट के बादल नही ढंक सकते । आज का आदमी संवेदनाविहीन होता जा रहा है । मां बाप की सेवा से औलादे कतराने लगी है । भाई –भाई में झगडा, स्नेह–सेवाभाव का अभाव परिवार के बीच दरार पड रही है । इसका मुख्य कारण है स्वहित के पिशाच का भयावह रूप धरना है।

हमारे देश में संयुक्त परिवार की प्रथा बहुत पुरानी है । वही पवित्र और सम्वृध्द प्रथा टूट रही है।जिसके परिणाम अच्छे नही आ रहे है । हिंसक प्रवृति, लालच, द्वेप, स्वार्थ,रिश्तों में दरारे आदि परिवार विरोधी मानसिकता में अभिवृध्दि परिवार,समाज एवं देश को सुखी नही बना सकती । संयुक्त परिवार का स्वरूप ग्रामीण भारत में तो आज भी देखने को मिल जाता है परन्तु शहरी भारत में तो जैसे नामो निशान नही बचा है । राप्ट्र की पहचान स्वस्थ एवं सुसुस्कृत परिवार से होती है । जिस परिवार में स्नेह,सेवा,सद्भावना,आदर सम्मान एवं सहयोग की भावना होती है निश्चित रूप से वह उपर उठता है ।संयुक्त परिवार सामाजिक सम्बन्धों और ससख्त न्याय की इकाई के रूप में तथा बुढापे और बेरोजगारी के विपरीत बीमा का भी काम करता है। जरूरत है इस पवित्र संस्था को बचाने की तभी भारतीयता के सोधेपन की रक्षा की जा सकती है । जीवन का चतुर्थ काल गुजार रहे बुजुर्ग भी असुरक्षित नही महसूस करेंगे । वे परिवार के अतमहत्वपूर्ण अंग है । मां बाप को बेसहारा अथवा अनाथ आश्रमों मे पटक कर की गयी तरक्की कभी भी सुखदायी एवं फलदायी नही हो सकती । संयुक्त परिवार के महत्व को समझ कर पूर्वोन्मुखी बने रहने की आवश्यकता है न कि पाश्चात्यमुखी। पूर्वोन्मुखी भाव से हीं परिवार,समाज और देश

सुखी हो सकता है । देश एवं समाज को सुखी एवं सुदृढ बनाये रखने के लिये आवश्यक है कि मौलिक,सार्वभौमिक एवं पवित्र संस्था संयुक्त परिवार को बचाने का अटल प्रयास किया जाये । यकीनन यह प्रयास टूटते परिवार और बुजुर्ग मां बाप की बिखरती आस के लिये प्राणवायु साबित होगा ।

नन्दलाल भारती

।। राष्ट्रीय एकता में जन एवं समाज हित निहित ।।

भारतीय समाज सम्वृध्द एवं अति प्राचीन समाज है परन्तु दिन पर दिन छोटी होती दुनियां के युग में भी सामाजिक बीमारियों से घिरा हुआ है ।सामाजिक कुप्रथाओं को बेअसर करने के लिये जनशिक्षा एवं जनजागृति अभियान की आवश्यकता है जिससे तथाकथित बडे एवं छोटे के भेद के जहर को दिल से निकाल कर, आदमियत रूपी गंगाजल से दिल को साफ कर, समता एंव सद्भावना को हर दिलों में प्रतिप्ठित किया जाये ।जिससे हर आदमी आदमी होने का सुख भोग सके ।

यह तो प्रमाणित ही है कि जाति का वर्गीकरण पूर्व काल में पेशे के अनुसार हुआ है ।पेशे में भिन्नता का होना भी जरूरी है ताकि श्रेणीबध्द और तरीके से कार्य का संचालन होता रहे ।वर्तमान में पूर्व काल का वर्गीकरण जाति बन चुका है और इस जाति ने भयावह रूप धर लिया है । आदमी आदमी में भेदभाव की दीवार खडी हो गयी है । कोई तो इस कदर जातिवाद से अभिशापित हो गया है कि आज भी उसके छूने से आदमी को अपवित्र होने का खतरा है। जातीय विवाद तो विशेपाधिकार की वजह से हो रहा है । कुछ विशेपाधिकार प्राप्त जाति के लोग निम्न कर्म के वावजूद बडे माने जा रहे है। विशेपाधिकर से वंचित लोग श्रेप्ठ कर्म करने के वावजूद निम्न श्रेणी के ही माने जाते है ।ब्राहमण के घर पैदा अशिक्षित व्यक्ति ब्राहमण कैसे हो जाता है । क्षत्रीय के घर पैदा क्षत्रीय कर्म से दूर रहकर क्षत्रीय कैसे बना रहता है अथवा वैश्य के घर पैदा वैश्य का कर्म न कर वैश्य कैसे बना रहता है ।शूद्र के घर पैदा व्यक्ति को ब्राहमण,क्षत्रीय अथवा वैश्य का कर्म करने के बाद भी उसे शूद्र को बनाये रखा जाता है ।वर्तमान युग में जरूरत है अतिप्राचीन जन्म आधारित बंटवारे को जो अब जातीय भेद का दृढ रूप अख्तियार कर चुका है उस जातिगत् स्वरूप को ढहाकर एक स्वस्थ और समतावादी समाज बनाने की । भले ही पेशागत बंटवारा हो पर यह बंटवारा जन्म आधारित अर्थात जाति का रूप ने धरे हर व्यक्ति को नया पेशा चुनने का अधिकार हो जैसाकि आज चलन में भी है । अब तो बस जरूरत हैं जातिवाद के अभेद्य किले को ढहाने की जिससे स्वस्थ,सम्पन्न और समतावादी समाज की स्थापना हो सके । भूमण्लीयकरण के इस युग में जातियता अर्थहीन हो चुका है जाति के नाम पर कुछ बचा है तो वह है अहंकार । हमारा

कर्तव्य हो गया है कि सिमटती दुनिया के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चले,इंसान के साथ इंसानियत का फर्ज निभाये और झूठे अंहकार के मुखौटा नोंचकर फेंक दे ।

वर्तमान समय में स्वार्थ की प्रवृति ने नेताओ को इस कदर घेर लिया है कि उन्हे अपने भला के अलावा देश और समाज की जरा भी चिन्ता नही है ।वे राजनैतिक और सामाजिक मुखौटे का भरपूर दोहन कर रहे है । मुखौटा नोंचकर फेंकने की वजाय वे घडी घडी बदलने लगे है। इस बदलाव से तो देश और समाज का भला तो हो ही नही सकता ।सामाजिक सत्ताधीश भी पीछे नही है । सामाजिक नेता हो या राजनैतिक,नेता का अभिप्राय तो ये होता है कि वे देश और समाज के कल्याण के लिये जीये और मरे ।समाज को बुराईयो से बचाये,मानवीय समानता राष्ट्रीय एकता कायम करे और आमजन के हितार्थ काम करे ।

समाज और देश के उत्थान के लिये ऐसे ही नेताओ की जरूरत है । अवसरवादी अगुवाई चाहे सामाजिक हो या राजनैतिक कभी भी फायदेमंद नही साबित हो सकती ।देश और समाज के उत्थान में अडचने ही खडी कर सकती है ।नैतिक नींव पर राजनीति सफल और हितकर साबित हो सकती है ।जाति भेद या वर्ण भेद उन्नति में बाधक है । बंटवारे,दंगे फंसाद एवं अन्य विकृतियों की जननी है जाति भेद ,वर्ण भेद और धार्मिक उन्माद। सरकार के साथ समाज का भी कर्तव्य बनता है कि वह जनसाधारण के उत्थान के लिये आगे आये ,जिससे गरीब वंचित तरक्की कर सके ।अपने पांव पर खडा हो सके तथा उनके अर्न्तनिहित सम्भावनाओ का सुक्ष्म अध्ययन कर उन्हे व्यापार,वाणिज्य,कृपि तथा अन्य रोजगारोन्मुखी शिक्षा दी जाये ताकि वे आत्म निर्भर बन सके। गरीब वंचित लोग भी विकास की मुख्य धारा से जुड सके ।सहानुभूति,करूणा और मैत्री के वातावरण में समाज और देश तरक्की कर सकता है , आशानुकूल भारत की कल्पना नही की जा सकती ।समय की मांग है सभी को एक साथ निकल पडने की–चाहे वह मजदूर हो मालिक हो अमीर हो गरीब हो सर्व एकता में ही भारत का भविष्य सुरक्षित है । राष्ट्रीय एकता में ही जन एवं समाज हित निहित है । जरूरत है समानता,समाज एवं देश हितार्थ प्रतिबध्द होने की ,तभी समाज और राष्ट्र सबल एवं उन्नति कर सकता है।

नन्दलाल भारती

।। आतंकवाद की जड पर प्रहार।।

इंसानियत के दुश्मन अपने घिनौने मनसूबों को इंजाम देने में कोई कोर कसर नही छोड रहे है । देश आतंकवाद का दंश झेलने को मजबूर है । एक घाव सूखता ही नही तब तक दूसरा हो जाता है । इंसानियत के दुश्मनों के हौशले

बढ जाते है । वे किसी नई दुर्घटना को इंजाम देने में जुट जाते है ।प्रश्न ये उठता है कि क्या खुफिया तन्त्र और सुरक्षा व्यवस्था के लिये जिम्मेदार संस्थाये चौकस क्यो नही होती है , इंसान और इंसानियत का खून बहने के बाद ।कब तक इंसानियत के दुश्मन लहू से नहाते रहेगे ।सभ्य मानव समाज को कब तक भय के आतंक मे रखकर खूनी कारनामों को इंजाम देते रहेगे ।विनाश का पर्याय आतंकवाद कब तक धरती को लाल करता रहेगा ये अब सवाल हल की ओर अग्रसर होने लगा है क्योंकि धर्मगुरूओ ने भी आतंकवादी गतिविधियों के खिलाफ जागरूकता अभियान छेड दिया है ।अल्प संख्यक समुदाय के प्रबुध्द लोग पर आरोप लगता रहा है कि वे आतंकवादी गतिविधियों का विरोध करने में पीछे रहते है । उत्तर प्रदेश के इमाम व धर्मगुरूओं ने आतंकवादियों के खिलाफ जागरूकता अभियान की शुरूवात कर दुनिया को संदेश दे दिया है कि वे भी आतंकवादियों के खिलाफ है ।धर्म के नाम पर आतंकवाद को परिभाषित करने वालों की जबानों पर ताले जड दिये है । वैसे यह काम उन्हे बहुत पहले प्रारम्भ कर देना था खैर यह पहल स्वागतोग्य है ।

उत्तर प्रदेश के इमाम व धर्मगुरूओं ने आतंकवादियों को यह बता दिया है कि वे धर्म के नाम पर देश विरोधी आतंकवादी गतिविधियों का समर्थन नही करते। धर्म को आतंक के साथ जोडकर देखने वालो के लिये धर्मगुरूओ प्रबुध्दजनों का आतंकवाद के खिलाफ यह शंखनाद आतंकवाद की जड पर प्रहार माना जाना चाहिये । उत्तर प्रदेश के इमाम व धर्मगुरूओं का यह संदेश आंतकवादी गतिविधियों के खिलाफ यकीनन मील का पत्थर साबित होगा । प्रबुध्द जनों के आतंकवादी गतिविधियों के खिलाफत से आदमियत विरोधी बौखला तो गये होगे पर लगता नही कि उनकी बौखलाहट अब इमाम व धर्मगुरूओं को पीछे ढकेल सकती है क्योकि इमाम व धर्मगुरूओं ने अपनी मुहिम तेज कर दी है ।उधर सुरक्षा बलों के सहयोग से लश्कर-ए-तोएबा,हिजबुल मुजाहिदीन एवं जैश के कुछ शीर्प कमाण्डरो के सफाया में सफलता पाने वाली जम्मू कश्मीर पुलिस आतंकियों की लाइफ लाइन खत्म करने की रणनीति बना रही है । इस रणनीति के तहत् आतंकियों को उनके सहयोगियों से मिलने वाली मदद को बन्द करने का प्रयास किया जायेगा । यकीनन सुरक्षा बलों की यह रणनीति आतंकवाद से उबरने में मददगार साबित होगी ।

आतंकियों के मददगारो पर काबू पाकर आतंकवाद से निपटा जा सकता है । सुरक्षा बलों का शान्ति की दिशा में यह कार्य सकून तो प्रदान करता है और आतंकवाद की बढती गतिविधियों पर शिंकजा भी कसता है । इस रणनीति से छिपकर आतंकियों का मदद करने वाले हत्तोत्साहित होगे और वे आतंकियों को देश और समाज की तरक्की से जोडने का प्रयास करेगे । जब छिपकर

आतंकियों का सहयोग करने वालो पर लगाम कस जायेगी तो आतंकवादी सरेण्डर कर देगे या सुरक्षा बलों के शिकार बनेगे ।

आंतकवादी गतिविधियां देश के विकास में सबसे बडी बांधक हैं । इन गतिविधियों पर रोक लगाने के लिये जन जागरण की आवश्यकता है । दुनिया का हर अमन पसन्द आदमी आज खौफ में जी रहा है । उसे मौत से डर नही है । मौत का आना तो निश्चित है पर मौत और बर्बादी के तरीकों से वह खौफ मे है । इस खौफ से उबारने के लिये तरूरी है कि दुनिया भर के लोग लामबन्द हो और आतंकवादियों के मुकाबले के लिये आगे आये । धर्म गुरू प्रबुध्द जन आमजनो के साथ खडे हो जनसभाओं के माध्यम से आतंकवाद के विरूध्द मुहिम जारी करे। आतंकवादियों को मदद करने वालो के दोगलेपन पर चोट करें । आतंकवादियों को मुख्यधारा में लौटाने हेतु धार्मिक एवं मार्मिक अपील जारी करे ।इससे आतंकवादियों का हृदय परिवर्तित होगा और वे हथियार से तौबा कर देश एवं समाज की तरक्की के लिये काम करेंगे । आमजन,धर्मगुरूओ,प्रबुध्द जनो, सरकार एवं सुरक्षा बलों की संयुक्त मुहिम से आतंकी गतिविधियों की जडों पर जर्बदस्त प्रहार कर आतंक के पिशाच का दमन किया जा सकता है बशर्ते सभी अपने फर्ज पर खरे उतरे तब ना।

नन्दलाल भारती

।। राष्ट्र–धर्म विकास के लिये आवश्यक ।।

जाति धर्म के नाम बिखण्डित समाज क्या राष्ट्रधर्म को धर्म की भांति नही अपना सकता ६ राष्ट्रीय एकता के नाम पर बडे बडे भाषण और बडे बडे कार्यक्रम तक आयोजित होते रहते है और लोग कसमें भी खाया जाती है परन्तु जहां जाति धर्म की बात आयी सारी कसमें भूल जाती है ।लोग एक दूसरे को अपना दुश्मन समझ बैठते है । खंजर पर धार देने लगते है क्या कोई जाति या कोई धर्म राष्ट्रधर्म से बडा हो सकता है । गौर करने वाली बात है कि राष्ट्रीय एकता में ही धर्म की आत्मा विराजित है,इसके बाद भी देश की अखण्डता तोडने के प्रयास होते है । राष्ट्रीय सम्पति की होली जलाई जा रही है । ट्रेने रोकी जा ररही है पटरियां खोद दी जा रही है क्या यही राष्ट्र के प्रति दायित्वों का निर्वहन है । बिल्कुल नही... पहले हर नागरिक को राष्ट्र धर्म को आत्मसात् करना चाहिये ।यदि देश के उत्थान में स्वहित, धार्मिक मान्यताये अथवा धर्म दीवार खडी करता है तो ऐसी दीवारे ढहा कर राष्ट्रीय एकता की दीवार खडी करनी चाहिये । धर्म दूसरे स्थान पर होना चाहिये प्रथम स्थान पर राष्ट्र धर्म होना चाहिये ।इसी भावना में जनकल्याण निहित है।देश का उत्थान निहित है ।

देखने में आता है है तनिक अनजाने भी किसी धर्मावलम्बी की आस्था को ठेंस पहुंची तो खंजरे खींच जाती है । देश धर्म एक देश का वासी होने के नाते दूसरे के प्रति अपने कर्तव्य भूल जाते है बस याद रह जाता है अपना धर्म अपनी जाति और निकल पडते है देश की सम्पति जन–सम्पति के विनाश की राह पर सिर्फ अपने को बडा साबित करने के लिये ।क्या इसे धर्म के साथ जोडना उचित है । धर्म के प्रति आस्था बनाये रखना अच्छी बात है पर अंध भक्ति तो बुरी है ना...हमें राष्ट्रीय एकता को धर्म मानकर चलना चाहिये । जनकल्याण को धर्म मानकर अपने फर्ज पर खरा उतरना चाहिये । यदि हम देश और जनकल्याण की सद्भावनाओं पर खरे उतरते है तो सचमुच राष्ट्र के उत्थान में सहभागी बन रहे है । हमारे प्रति भी लोग आस्थावान बनेगे ।खुद को दीन दुखियों और देश का सच्चा सपूत बनने के लिये स्वार्थ से उपर उठना होगा । विवेकानन्द ने कहा है–परोपकार ही धर्म है परपीडन पाप ।शक्ति और पौरूष पुण्य है,कमजोरी और कायरता पाप । स्वतन्त्रता पुण्य है पराधीनता पाप । दूसरों से प्रेम करना पुण्य हैं दूसरों से घृणा करना पाप ।परमातम में और अपने आप में विश्वास पुण्य है,संदेह ही पाप है। एकता का ध्यान पुण्य है,अनेकता देखना ही पाप है ।

आजाद देश में रहकर यदि जाति धर्म के मुद्दे पर बिखण्डित रहे एक दूसरे को अपनी राह का कांटा समझे तो यह न तो अपनी धार्मिक आस्था के प्रति समर्पण है और ना ही देश के प्रति । यह बिखण्डन का भाव राष्ट्रीय एकता की गांठे ढीली करता है । हम एकता की राह से भटक कर पाप के भागी बनते है । राष्ट्रधर्म को भूलना बडा पाप है राष्ट्रवासियों के प्रति अन्याय भी ।राष्ट्रीय एकता प्रदशित करने के लिये हमें राष्ट्र धर्म के प्रति आस्थावान बनना होगा । राष्ट्र के प्रति आस्थावान बने बिना न तो धर्म की सुरक्षित रह सकता है और ना आवाम । इस बात का इतिहास भी गवाह है । देश को कितने आतंक झेलने पडे है । देश गुलामी का भी दंश झेला है । धर्म मानवता का पाठ पढता है । बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की भावना से ओत प्रोत होता है । यदि धर्मिक आस्था के साथ राष्ट्रीय आस्था को सम्मान दिया जाये तो इससे नागरिक एक दूसरे के प्रति वफादार होगे और राष्ट्र धर्म की नींव भी मजबूत होगी । मनुष्य और राष्ट्र एक दूसरे से अलग रहकर अपना अस्तित्व कायम नही रख सकते। वर्तमान बढते आतंकवाद को देखते हुए आवश्यक हो गया है कि हम राष्ट्र के प्रति आस्थावान बने । राष्ट्र धर्म को अपनाना देशवाशियों के लिये हितकारी होगा। धार्मिक आस्था के निर्वहन से पहले जरूरी हो गया है कि हर नागरिक सर्वप्रथम राष्ट्रधर्म के प्रति आस्थावान बने धर्म और राष्ट्रीय एकता जैसे अत्यधिक मूल्यवान शब्दों का खजाना जबानी लुटाते रहे तो कुछ नही होगा । इन शब्दों की प्राण प्रतिष्ठा सबसे पहले हमें अपनी अर्न्तरात्मा में करनी होगी । राष्ट्रीय एकता के लिये राष्ट्र धर्म को अपनी आस्था से सींचना होगा। ऐसा मनोभाव राष्ट्रीय एकता में मील का पत्थर साबित हो सकता है तो क्यों न हम धार्मिक मंदिर मस्जिद

और गिरिजाघर की आस्था के साथ बंधे रहकर भी राष्ट्र धर्म के सद्भावना की प्राण प्रतिष्ठा करें जो राष्ट्रीय एकता के लिये जरूरी है राष्ट्र धर्म। अमन शान्ति और चहुमुखी विकास राष्ट्र धर्म में समाहित है तो क्या राष्ट्रीय एकता के लिये धार्मिक दम्भ और रूढियों का परित्याग करने के लिये तैयार है घ्नन्दलाल भारती

।।साहित्य मानवता के विकास यात्रा की गवाह ।।

साहित्यकारों की दशा से भले ही सरकार बेखबर हो, पाठक दूर भाग रहा हो पर साहित्यकार समस्याग्रस्त रहते हुए भी सृजन कर्म से बिमुख नही हुआ है । साहित्य जगत मुश्किलों के दौर से गुजर रहा है और साहित्यकार पेट पर पट्टी बांधकर अपना धर्म निभा रहा है ।टीवी इण्टरनेट आदि आधुनिक संसाधनों ने साहित्य की जमीन पर कब्जा जमा लिये है ।उद्बोधन और प्रबोधन के स्थान पर फुहड और सस्ता मनोरंजन परोसा जा रहा है ।इन मनोरंजन के साधनो ने जनमानस में इतनी गहरी घुसपैठ बना लिये है कि वे तात्कालिकता पर भरोसा कर बैठे है कि कल्पना और सृजन का कोई मोल ही नही रहा । आज का आदमी साहित्य से दूर जाता नजर आ रहा है । टी.वी और इण्टरनेट के मोह में फंसे लोग अच्छी तरह से जानते है कि इनका प्रभाव अस्थायी होता है ।कुछ मामलों हानिकारक भी हो जाता है जबकि साहित्य परम्पराओ का संवाहक है । रचनाशीलता का उद्गम है। दूरदृष्टि है साथ ही स्वस्थ मनोरंजन का भी साधन है ।सभ्यता का परिचायक है ।इतिहास का हस्तान्तरण है । साहित्य भावात्मक जुडाव पैदा करती है । साहित्य में यथार्थ होता है । छलावे और भुलावे का संसार साहित्य नही होता ।साहित्य थकान चिन्ता रूग्णावस्था में दवा का काम करता है ।साहित्य दिल और दिमाग पर कब्जा तो करता है परन्तु विकल्प और चयन के प्र्याप्त अवसर भी सुलभ करवाता है ।वही टीवी पर प्रसारित होने वाले धारावाहिक बेचैनी दे रहे है । घर परविार को तोडने का काम कर रहे है । जबकि इलेक्ट्रानिक माध्यम से प्रभुत्व और दासता की गंध आता है वही दूसरी ओर साहित्य साहचर्य और मैत्री भाव में अभिवृध्दि करती है ।

साहित्य संघर्ष अच्छे बुरे अनुभवों का दस्तावेज है जो व्यक्ति को सदकर्म पथ पर चलने को उत्प्रेरित करता है ।साहित्य एक चिकित्सा प्रणाली है जो व्याक्ति को स्वस्थ मानसिक शक्ति प्रदान करती है शारीरिक स्वास्थ के दृष्टि से भी बहुत उपयोगी है ।आज साहित्य और साहित्यकार संकट के दौर से गुजर रहे है, इसके बाद भी किताबे छप रही है किताबे बिकता है या नही बिकती है इस बात की फिक्र से परे साहित्यकार अपना धर्म निभा रहा है भले ही पाठक न निभाये इलेक्ट्रानिक माध्यमों के मोह में फंसकर । इलेक्ट्रानिक माध्यम को उपयोग करे पर उसकी लत न पडे

इस फिक्र से साहित्यकार जूझ रहा है ।उसे अपनी चिन्ता नही है उसे तो चिन्ता है स्वस्थ समाज की । जो कल को स्वस्थ रख सके । इलेक्ट्रानिक माध्यमो से जो अश्लीलता परोसी जा रही है यकीनन हमारे स्वस्थ समाज को बीमार बना देगी । किताबो बस देती जाती है ।इसके बाद भी पाठक दूर जा रहा है । है। साहित्य मानवता की विकास यात्रा का गवाह होता है पाठकों का किताबो से दूर जाना और साहित्य जगत पर संकट के बादल छाना समाज के लिये शुभ संकेत तो नही कहा जा सकता ।

ज्ञान विज्ञान,सामाजिक, आार्थिक और नैतिक विकास में साहित्य मील का पत्थर साबित हुआ है आज उपेक्षा का शिकार है । यही उपेक्षा बच्चों में संस्कारविहीनता का बीजारोपण कर रही है ।इसके लिये इलेक्ट्रानिक माध्यमों की तडक भडक को ठहराया जा सकता है ।मेरा मकसद इलेक्ट्रानिक माध्यम का बहिष्कार नही है बल्कि तात्कालिक उपयोग करने भर से है क्योंकि इलेक्ट्रानिक माध्यम जो चमक मानव मन पर छोड रहे है । वे लाभकारी तो नही

हानिकारक बहुत अधिक साबित हो रही है । बच्चों का बन्दूक लेकर स्कूल जाना । कत्ल तक कर देना क्रूर हिंसक होते लोग ।देह का खुला प्रदर्शन,अश्लील परिधान एवं अन्य असामाजिक कृतित्व। क्या यह इलेक्ट्रानिक माध्यमों की सीख नही है । सद्साहित्य कभी भी ऐसा सस्ता मनोरंजन नही उपलब्ध करवाता । साहित्यकार अपने नैतिक दायित्वों से बंधा होता है ।जब वह साहित्य सृजन करता है तब वह अपना आर्थिक पक्ष मजबूत करने की नही सोचता वह स्वस्थ समाज का पक्षधर होता है ।उसकी कल्पना शक्ति, उसका लेखन कर्म समाज के हितार्थ समर्पित होता है ।याद रखने वाली बात है इलेक्ट्रानिक माध्यम सिर्फ अपनी तिजोरी भरने के लिये अश्लीलता पर चांदी पर चांदी का ब्रक लगाकर परोस रहे है जो आर्थिक और सामाजिक रूप से घातक साबित हो रहा है ।

समय आ गया है कि इलेक्ट्रानिक माध्यम से परोसे जा रहे मनोरंजन को सभ्यता ,परम्परा बच्चों की हिंसक होती प्रवृति ,स्वस्थ समाज के निार्मण हेतु और सामाजिक आवश्यकताओ को देखते हुए स्वस्थ मानसिकता के तराजू पर तौला जाये । साहित्य जगत भले ही मुश्किलों से गुजर रहा है उसे उम्मीद है संकट के बादल छटेगे । साहित्य से दूर जा इलेक्ट्रानिका माध्यमों की धूप में जा बैठा दर्शक/पाठक साहित्य की छांव में जरूर आयेगा। साहित्यकार अपनी जरूरतों को स्वाहा करते हुए दिन रात स्वस्थ समाज और स्वस्थ कल के लिये सृजनरत् है । भले ही वह पेट में भूख लिये हुए साहित्य सृजन कर रहा है परन्तु वह निराश नही है क्योंकि मानवता की विकास यात्रा आशा और प्रयोगों पर टिकी है। इस यात्रा को सफल और गौरवशाली बनाने के लिये साहित्यकार दृढसंकल्पित है क्या आप है.....

नन्दलाल भाररती

।। आधी आबादी का दर्द ।।

भूमण्डलीयकरण एवं दूरसंचारक्रान्ति के युग में भ्रूणहत्या आधी आबादी के अस्तित्व पर खतरा खडा कर चुकी है । पुत्र मोह में बालिका भ्रूण की हत्या मां की कोख में की जा रही है । भ्रूणहत्या ने लिंगानुपात में असंन्तुलन पैदा कर दिया है। देश में प्रति हजार पुरूष पर 927 महिलाये है।इस हत्या को बढावा दे रही है अल्ट्रासोनोग्राफी तकनीकी और एक्सपर्ट।सरकार लिंग परीक्षण को कानूनन अपराध घोषित कर चुकी है इसके बाद भी धडले से लिंग परीक्षण कर भ्रूणहत्याये हो रही है । भ्रूणहत्या को लेकर बडी बडी चर्चायें–परिचर्चायें होती रही है,अखबारों में बडी बडी खबरे छपती है । भ्रूणहत्या की चिन्ताओ में समाज और सरकार दबी जा रहा है इसके बाद भी लिंग परीक्षण हो रहा है। भ्रूणहत्या हो रही है ।यदि भ्रूणहत्या न होती तो लिंगानुपात में असन्तुलन कैसे होता । कानूनी प्रावधान होने के बाद भी परीक्षण करने अथवा कराने वालों को सजा नही हो पा रही है । आधी आबादी के साथ ऐसा अन्याय होता रहा तो क्या पुरूष समाज दुनिया को आबाद बनाये रख सकेगा ।

जनसंख्या का भय कन्याभ्रूण को उकसाता है ऐसा कदापि नही है। इस हत्या के पीछे पुत्रमोह बंश–परम्पराओं एवं कुप्रथाओं का हाथ है । वर्तमान में दहेजप्रथा रूपी सामाजिक बुराई भी कन्याभ्रूणहत्या के लिये जिम्मेदार है । एक शोध के अनुसार सिर्फ भारत में ही पिछले 20 वर्षो के दौरान एक करोड कन्याभ्रूण का कत्ल में की कोख में कर दिया गया है । आश्चर्य की बात है कि पढे लिखे लोग ही इस तरह की हत्या करवा रहे है और लालची जीवन देने वाले अजन्मे कन्या भ्रूण का बध मां की कोख में कर रहे है । ना जाने किस मजबूरी मे मांतायें विरोध में नही खडी हो रही है । सम्भवतः यह वजह भी भ्रूण हत्या की खामोशी स्वीकृति कही जा सकती है । आधी आबादी की अस्तित्व की रक्षा के लिये आधी आबादी को आगे आना ही होगा बिना आगे आये भ्रूण हत्या जैसे अपराध पर रोक लगना कठिन कार्य होगा ।

सरकार जनसंख्याा नियन्त्रण को प्रोत्साहित कर रही है फिर भी जनसंख्या वृध्दि में विशेष गिरावट नही आ रही है । आज बढती जनसंख्या समस्या नही लग रही है । लगता है समस्या आधी आबादी बन रही है तभी तो भ्रूणहत्या अपराध घोषित होने के बाद भी कन्याभ्रूण हत्या हो रही है और स्त्री–पुरूष लिंग अनुपात के बीच असन्तुलन पैदा हो रहा है । यदि ऐसा असन्तुल बरकारा रहा तो वह दिन दूर नही जब लडके के ब्याह नही हो पायेगे अथवा बहुपतिप्रथा का प्रचलन हो जायेगा । यकीनन यह प्रथा मनुष्य जाति के विनाश का कारण होगी । ऐसे विनाश को रोकने के लिये जनसंख्या नियन्त्रण के अन्य साधनों का उपयोग करते हुए भ्रूण हत्या को रोकना होगा ।नारी –पुरूष अधिकार समानता के लिये काम करना जरूरी होगा ।यदि कन्याभ्रूण हत्या नही रूकी तो पुरूष समाज भी धीरे धीरे अपना अस्तित्व खो देगा ।

लिंगानुपात के सन्तुलन को बनाये रखने के लिये जरूरी है कि भ्रूणहत्या के अपराध पर विराम लगे । मां बाप पुत्र मोह से उपर उठकर सन्तान मोह की लालसा रखे चाहे वह सन्तान पुत्र हो या पुत्री पर भ्रूण हत्या जैसा अपराध न करने की कसम खाये ।जिस घर में बेटी न हो उस घर में बेटी के ब्याह से परहेज करना भी कन्या भ्रूणहत्या रोकने मे मददगार साबित हो सकता है । सम्भवतः कानूनी प्रावधान इसलिये कामयाब नही हो रहे है कि भ्रूण हत्या एकतरफा नही हो रहा है इसमें मां बाप दोनो शामिल है ।यदि मां बाप में से एक भी इस हत्या के विरोध में उतर जाता तो भ्रूण हत्या रूक सकती है । इस हत्या की रोक पर सामाजिक समानता मील का पत्थर साबित हो सकती है यदि समाज आधी आबादी को पुरूष के बराबर का दर्जा प्रदान करे दे । मनुष्य जाति को अपना अस्तित्व कायम रखना है तो आधी आबादी के दर्द को हरना ही होगा और भ्रूण हत्या पर पूर्ण विराम लगाना हो होगा । इसके बिना मनुष्य जाति के अस्तित्व पर संकट के बादल छाये रहेगे।क्यो.... अस्तित्व की रक्षा और भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध को रोकने के लिये हमारी कोई जिम्मेदारी नही बनती ६ नन्दलाल भारती

।। बेटियां स्वामिभान की अभिवृध्दि है ।।

दसवीं के रिजल्ट रहे बारहवीं के या अन्य कक्षाओं के लडकियों ने बाजी मारी है । यकीनन मां बाप का अपनी बेटियों की अच्छी परवरिश के संकेत है ।लडकियां अपने कठोर परिश्रम ,पक्के इरादे और मां बाप के दृढ संकल्प की वजह से उूंची उडाने भर रही है ।मकसद में कामयाब हो रही है ।बेटियों की यही कामयाबी मां बाप के स्वाभिमान में अभिवृध्दि करती है ।

कभी कभी मां बाप बेटी को बेटा सरीखे कहते नही थकते ।हर्ष का विषय है कि मां बाप बेटी बेटा में समानता स्थापित कर रहे है परन्तु इसमें से छनकर एक बात और आती है कि कही लडकी को निम्न तो नही माना जा रहा है । लडकी को लडके सरीखे मानना किसी न किसी रूप में लडकी के प्रति अन्याय तो जरूर है ।आज लडकिया अपने साहस और बुध्दि के बल पर उच्च से उच्च पदो पर पहुंच रही है । विश्व समाज को प्रभावित कर रही है लडकी को लडके जैसा संबोधन निम्नता तो जरूर दर्शाता है।ऐसा विचार तर्कहीनता का परिचायक अवश्य लगता है । लडके लडकी की परवरिश शिक्षा –दीक्षा,सामाजिक और आर्थिक मुद्दों पर विरोधाभास नही होना शुभ संकेत है । लडकी को लडका मानने का भ्रम तो टूटना है । उसे एक न एक दिन यकीन हो जायेगा कि उसके मां बाप के मस्तिष्क में वह मात्र कल्पनामात्र लडका थी।हमारा फर्ज बनता है कि हम अपनी बेटी का मनोबल बढाये और

उसे एहसास कराये कि वह काल्पनिक रूप कां नही असली रूप अर्थात लडकी होने का सुख भोग सके गौरान्वित हो सके ।पांवरवुमन बन सके ।
गौरतलब बात यह है कि बेटी का लालन पालन बेटा मानकर करना उसके कल के लिये खतरा बन सकता है क्योंकि इसी बेटी को आगे और भूमिका निभानी है । बदलते समय के साथ उसकी भूमिका भी बदलने वाली है– पत्नी की भूमिका निभानी है मां की भूमिका निभानी है ।यह सब तो वह लडका के रूप में नही निभा सकती । लडका लडकी के प्रति समानता का रवैया अपनाना अच्छी बात है पर उनमें भ्रम पैदा करना कदापि नही.....हमारा फर्ज बनता है कि हम उनमे सद्गुणों के भाव भरे और उनके अस्तित्व को स्वामिभान के साथ निखारे,निर्णय लेने की ताकत विकसित करे ।जरूरत पडने पर नही कहने का भी जज्बा भरे ताकि उनकी पहचान लडका लडकी के रूप में नही उनके गुण से हो ।यही पहचान हम मां बाप के स्वाभिमान में अभिवृध्दि करेगी ।
इतिहास गवाह है स्त्रियों ने स्त्री की भूमिका में इतिहास रचा है चाहे महारानी लक्ष्मी बाई रही हो या झलकारी बाई,इन्दिरा गांधी रहो हो या कल्पना चावला । उच्च स्थान हासिल करने वाली नारियों ने नारीपन के अस्तित्व की रक्षा करते हुए ही इतिहास रचा है । यदि वे दोहरी मानसिकता की शिकार होती तो श्रेष्ठता के शिखर पर नही पहुंच पाती । कितना अच्छा होगा कि हम अपनी बेटियों को अच्छी परवरिश के साथ उूंच शिक्षा–दीक्षा प्रदान कर,स्वालम्बन,आत्मनिर्भरता, एवं निर्णय लेने के काबिल बनाते जिससे वह खुद लडकी होने पर गौरान्वित होती । यदि हमारी बेटी अपने अस्तित्व पर गौरव का एहसास करती है तो यकीनन हमारे स्वाभिमान में अभिवृध्दि होगी और स्त्री –पुरूष के भेद पर प्रहार भी । पुत्रियों के प्रति मां बाप अपनी नैतिक जिम्मेदारी अच्छी तरह निभाने लगे है, पुत्र मोह के प्रति रूझान कम हुआ है।वह जामना गया जब लडके लडकियों के खानपान तक में भेद होता था । इसके बाद भी हम मां बाप का नैतिक दायित्व बनता है कि हम अपनी बेटियों को वास्तविकता से रूबरू कराये ताकि बेटियेां वास्तविकता को स्वीकारने की ताकत पैदा हों। समय के साथ आगे बढने को प्रोत्साहित करें ।बेटियों के हुनर और गुणों को तराशने के लिये दृढप्रतिज्ञावान बने रहे क्योंकि बेटियां हमारे स्वाभिमान की अभिवृध्दि है ।
नन्दलाल भारती

।। साहित्य सामाजिक परिवर्तन में सक्षम ।।

साहित्य रूढियों एवं विरोधाभास के मुद्दों को उभारकर और उस पर कुठराघात कर सामाजिक परिवर्तन में अहम् भूमिका निभा सकता है परन्तु साहित्य को सामाजिक सरोकार से ओतप्रात होना चाहिये ।साहित्य को शोषित पीडित वर्ग का पक्षधर होना चाहिये । बुराई पर प्रहार करने का सामर्थ्य होना चाहिये और सामाजिक समानता स्थापित करने का माद्दा होना चाहिये । आज कुछ साहित्यकारों में ऐसी चिन्ता झलकने लगी है और समाज की नासूर बन रही कुप्रथाओं को केन्द्र बिन्दु में रखकर साहित्य सृजन होने लगा है । कुछ समाचार पत्र और पत्रिकायें भी भागीदारी निभाने लगे है जिससे बिखण्डित समाज में निकटता आने लगी है । प्रश्न उठता है क्या प्राचीन के साहित्यकारों को तत्कालीन समाजिक बुराईया नही दिखाई देती थी जो आज भी समाज में व्याप्त है । समाज को बिखण्डित किये हुए है।समाज में भेदभाव व्याप्त है । दिखाई देती थी परन्तु उनमे बिखण्डित सामाजिक ताने–बाने को समता के सूत्र में पिरोने का संस्कार नही था,स्थापित सामाजिक कुप्रथाओं एव परम्पराओं के विद्रोह का संकल्प नही ले पाते थे क्योंकि हजारो सालों से भारत में विश्वास जताया जाता रहा है कि किये का फल भोगना पडता है चाहे इस जन्म में या अगले जन्म में ।अमीर गरीब होना सब भाग्य का खेल है ।अच्छे बुरे कुल में जन्म होना अच्छे बुरे कर्म का फल है । इस बात के प्रभाव से साहित्य भी नही बच सका । प्राचीन कवि मनगढन्त और स्थापित मान्यताओं को भेदने से बचते रहे और समुदाय विशेष का यातनाओं को सशख्त भाव से प्रगट नही कर सके परन्तु प्राचीन में भी स्थापित मान्यताओं के प्रति असन्तोष फूटा है उदाहरणार्थ– विश्वामित्र का राजर्षि पद के लिये आजीवन संघर्ष,एकल्व्य का धर्नुविद्या में राजकुमारों जैसा महारथ हासिल करना और शंबूक ऋषि का तप साधना और शोषित पीडित समाज को शिक्षित करना । सिक्ख बौध्द और जैन धर्म का अभ्युदय प्राचीन स्थापति कुपथाओ मान्यताओ के विरोध में और मानतवता की पुर्नस्थापना हेतु तो हुआ । प्राचीन मान्यताओ का त्याग और समानतावादी प्रवृति का अंगीकरण भाषा और साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती है ।

प्राचीन काल में चार्वाक ने परलोक , स्वर्ग की अवधारणा और तत्कालीन धार्मिक मान्यताओं को खारिज कर एक नये युग का सूत्रपात किया था । चार्वाक विद्वान दार्शनिक थे परन्तु आधुनिक काल के महान साहित्यकार की कहानी कफन के पात्र घीसू और माधो अशिक्षित, गंवार थे । लोक–परलोक, स्वर्ग–नरक की स्थापति मान्यताओ रूढिओं के सम्बन्ध में दोनो के विचार कितने मेल खाते है ।घीसू कहता है कफन लगाने से क्या मिलता है आखिर जल ही जाता है । माधो कहता है दुनिया का दस्तूर है। दार्शनिक चार्वक कहते है जब तक जीना है सुखपूर्वक मान सम्मान के साथ जीना चाहिये । श्मशान में शरीर जल जाने के बाद किसी ने लौटते हुए देखा है । यह चार्वाक की सामाजिक कुव्यवस्था के खिलाफ तीव्र प्रतिक्रिया थी

,जबकि इसके पहले आत्मा,पुर्नजन्म,लोक परलोक आदि का भय दिखाकर सुविधा प्राप्त वर्ग समाज अधिसंख्य शोषित पीडित वर्ग को दीनता अन्याय और भेदभाव को चुपचाप सहने को मजबूर करता था । चार्वाक के इस विद्रोह ने सामाजिक परिवर्तन की आंकाक्षा को जन्म दिया जिसे तत्कालीन सन्तो ने भी अपने साहित्य के माध्यम से प्रगट किया है।परिणाम स्वरूप वर्तमान में साहित्य दो धडों में बटने के बावजूद भी सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में कार्य कर रहा है ।

मध्यकाल में सिध्दों ने जातीय भेदभाव धार्मिक रूढियों/ अंधविश्वासो पर तीव्र प्रतिक्रियायें व्यक्त की थी । समाज के शोषित पीडित अछूत जातियों के लिये सामाजिक सम्मान और समता की मांग कर सिध्दों के इस कार्य ने दबे कुचले और घूट घुट कर जी रहे समाज को धार्मिक–सामाजिक कैद की दीवारे तोडने का हौंशला भर दिया । निर्गुण सन्तों कबीर,नामदेव,दादू,रविदास,सैण,नाभादाससधना,धन्ना आदि छोटी समझी जाने वाली जातियों के लोग भक्ति के क्षेत्र में प्रमुख

स्थान बना लिये और जातीय भेदभाव धार्मिक रूढियों अंधविश्वासो धार्मिक–सामाजिक कैद के अस्तित्व को नकारते हुए अपने अस्तित्व का परचम फहरा दिया जिसका प्रतिफल आज है कि सामाजिक समताक्रान्ति के स्वर गूंजने लगे हैं । शोषित पीडित वंचित समाज के साहित्यकारों के साथ ही अन्य समाज के साहित्यकार सामाजिक सम्मान , समता और मानवीय नैतिक मूल्यों की स्थापना के उद्देश्य से साहित्य सृजन कर रहे है। इस साहित्य का प्रभाव विज्ञान के युग में हो भी रहा है । दलितों के लिये खुलेगे त्रिपतिबाली जी के द्वार जिसमें दलितों को पूजापाठ करवाने सम्बन्धित प्रशिक्षण शामिल है ।सामाजिक सम्मान और समता की दिशा में त्रिपतिबालाजी धार्मिक न्यास द्वारा उठाया गया यह कदम ऐतिहासिक है । इस ऐतिहासिक कदम का श्रेय प्राचीन और वर्तमान में साहित्य को अवश्य दिया जाना चाहिये।

साहित्य द्वारा सामाजिक परिवर्तन दूरगामी और प्रभावशाली हो सकता है । कुछ लोग इस धारण पर असमंजस जाहिर कर सकते है परन्तु इतना तो निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि समाज में चाहे जिस भी कारण से परिवर्तन हो रहा है उसे शब्द स्वर दिशा और परिवर्तन के स्वर को दूर दूर तक पहुंचाने का कार्य साहित्य ही कर रहा है । साहित्य ही आने वाली पीढियों के लिये सामाजिक परिवर्तन के लिये किये गये प्रयास और स्वर को जीवित रखता है । यही जीवित प्रयास और स्वर सामाजकि परिवर्तन में अहम् भूमिका निभाते है । अंधविश्वासो,कुप्रथाओ और जातीय भेद मिटा कर सामाजिक परिवर्तन के लिये प्रयास और आवाज बुलन्द करने वाले लोग काल के गाल पर अमरता प्राप्त कर जाते है। है।साहित्य द्वारा सामाजिक परिवर्तन के लिये

किये गये प्रयास प्रभावशाली होते है । साहित्य सामाजिक कुप्रथाओं, रूढिओ, अंधविश्वासों की मजबूत दीवारे ढहाकर सामाजिक परिवर्तन लाने में सक्षम है।
नन्दलाल भारती

।। मानवता–अमरता का स्रोत ।।

मनुष्य सर्वोत्कृष्ठ प्राणी है,इसके बाद भी उसका जीवन कभी आसान नही रहा । प्रकृति की चुनौतियां हमेशा दुस्साध्य बनी रही है । मनुष्य से मनुष्य के अस्तित्व पर खतरा भी मडराता रहा है । अस्तित्व के लिये संघर्षरत् मनुष्य शक्ति संग्रह कर आगे बढता रहा । अस्तित्व की लडाई में मानव मन में दया,करूणा,त्याग,प्रेम और मानवता के प्रति लगाव का बोध हुआ । मानव परिवार जाति और समाज के विकास के साथ अन्य तरक्कियों के सोपान चढा जो कभी स्वप्न मात्र थे ।

इस तरक्की ने मानव को विवेकवान के चरम पर पहुंचा दिया । विवेक की शिखरता ने मानव जीवन में स्व के स्थान पर पर की भावना को प्रष्ठापित कर साधारण मनुष्य के मन में भी देवत्व का भाव जागृत कर दिया था दुर्भाग्यबस वर्तमान में पर पर स्व भारी होने लगा है ,अहंकार और आतंक बढने लगा है जिससे राष्ट्रीय चरित्र पर कुठराघात हुआ है और मानवता आहत हुई है ।
स्व की अति का भाव महाठगिनी का भाव है । महाठगिनी की कैद में आज का आदमी फंसता चला जा रहा है । परिणाम स्वरूप रिश्तों में दरारे आने लगी है,भ्रष्ट्राचार,वैमनस्ता,मानव अंगो की तस्करी जातीय /धार्मिक उन्माद आदि सिर उठाने लगे है । बाजारवाद का विकास तीव्रगति से होने लगा है । बाजारवाद का शैतान मानवता को नकारने और नैतिक मूल्यों का दमन कर रहा है। बाजारवाद लालच और तृष्णा को बढावा दे रहा है । बाजारवाद का मकसद सिर्फ दोहन होकर रह गया है । आदमी के उपर बाजारवाद इताना हावी हो गया है कि वह इंसान को मौत देकर मानव अंग तक बेचने लगा है।कथनी और करनी में जमीन आंसमान सा फर्क दिखने लगा है ।हर क्षेत्र में बाजारवाद की घुसपैठ बढ गयी है । साहित्य जगत में दूसरे अन्य साधनेां ने कब्जा कर लिया है ।उद्बोधन और प्रबोधन की जगह घटिया मनोरंजन परोसा जा रहा है । यह मनोरंजन घर परिवार में बिखराव पैदा कर रहा है । नन्हे नन्हे बच्चे बन्दूकों से खेलने लगे है ।आधुनिकता की परिचायक अश्लीलता की आंधी चल पडी है ।आज कल्पना और स्वप्न को स्थान नही मिल रहा है । साहित्य का काम उस स्वप्न संसार की रचना करना है जो बडे बडे से दुखो के हरण करे । सस्ते और घटिये टी.वी. आदि मनोरंजन के साधन यथार्थ से दूर ले जाते है । छल और भूलावे के दलदल में ले जाकर पटक देते है। इस छल और भूलावे का वशीभूत आदमी

मानवता से दूर चला जा रहा है । भावनात्मक शक्ति से अलग थलग पडता जा रहा है । साहित्य दिल और दिमाग को प्रभावित करता है । विकल्प और चयन हेतु सुअवसर प्रदान करता है । भावात्मक स्तर पर मानव मन पर जमीं धूल को भी छांटता है । साहित्य समाज के लिये चिकित्सा पध्दति है । सस्ते और घटिया मनोरंजन के साधन सामाजिक जीवन के खलनायक है ।चांदी की थाल में बुराईयां परोसने के साधन है। मानव को मानवता से दूर करने के प्रमुख साधन भी ।

कहा जाता है कि धरती पर स्वर्ग वही बसता है जहां मानवता और समता बसती है । जहां शान्ति,सद्भाव और प्रेम की गंगा बहती है। सच्ची मानवता से अनुशासन और आदर्श का निर्माण होता है । मानवता से स्वस्थ समाज में सुख शान्ति और सम्वृध्दि का वातावरण निर्मित होता है । नैतिकता के भाव में अभिवृध्दि होती है । मानवता के धर्म से मानव में परमार्थ के भाव का जागरण हेाता है । पर पीडा का बोध होता है परन्तु स्व हित ने परहित के भाव का दमन करने लगा है । मानवता तार तार होने लगी है । आदमी पर पीडा पर ठहाके लगाने लगा है । मानव जीवन में परमार्थ का अत्याधिक महत्व है । परमार्थ के पथ पर चलकर आदमी आदमी से देवता बन सकता है । यह जानते हुए भी आज का आदमी स्व हित में जीने लगा है। जातीय/धार्मिक उन्माद का प्रर्दशन करने लगा है । स्व की महाठगिनी प्रवृति मानव को समता,ममता और दया से दूर करती है । उध्दार के भाव से विमुख कर पतन के राह ले जा रही है जिसके कुप्रभाव से जीवन कठिन होता जा रहा है ।

हमारे देश के नैतिक मूल्यों की विरासत पूर्व काल से दुनिया सहेज रही है जिस मानवता और मूल्यों को भगवान बुध्द ने अपने नैतिकदायित्वों के निर्वहन से अजर अमर बनाया था । दुनिया के समाजशास्त्री और दार्शनिक आज भी भगवान बुध्द द्वारा स्थापित मानवता एवं नैतिकता के मूल्यों पर सहमत है । दुनिया अनुसरण कर रही है । उन्ही मूल्यों को ठेस पहुंचायी जा रही है स्वहित के भाव के वशीभूत होकर । मानव होने के नाते मानवता के महायज्ञ में सत्कर्मो के आहुति देने की आवश्यकता है । यदि मानवता पर कुठराघात होता रहा है तो मानव और पशु में शायद ही कोई अन्तर शेष बचे । मानवता के पोषण के लिये स्वहितों का त्याग करना आज के मानव का प्रथम दायित्व हो गया है ।जीवन थोडे समय का है जब तक जीये दूसरों के काम आये और नेक उद्देश्य को प्रोत्साहित करें ।परमार्थ के भाव में मानव कल्याण निहित है । जब तक मानव में मानवता के भाव की अभिवृध्दि नही होगी तब तक मानव मानव धर्म और मानवता के फर्ज से दूर ही भागता रहेगा । सभ्य समाज को सभ्य मानव ही जीवन्तता प्रदान कर सकते है।पशुओ में भी प्रेम के भाव दिख जाते है । एक पशु दूसरे पशु को चाटकर अपने स्नेह को प्रर्दशित करता है तो सृष्टि के सिरमौर मानव में वैमनस्ता क्यों घ कहा जाता है

संगठन में शक्ति है । संगठन में मानवता का भाव पोषित है । संगठन में उत्थान है विभाजन में पतन तो क्यों न हम जीवन के चार दिन सुख शान्ति से जीये और दूसरों को भी जीने दें । मानवता कर्म को अमरता एवं जीवन को आदर्शवान बनाने का स्रोत है तो क्यों ना हम मानव धर्म और मानवता के फर्ज को आत्मसात् करने का दृढ संकल्प करें ।

नन्दलाल भारती

।। लेखक मानवता के प्रति प्रतिबध्द होता है ।।

चिन्तन मनन विचारशीलता एवं सामाजिक उत्थान के मनोयोग के बसन्त में ही रचना के अंकुर फूटते है । यही दृढ अंकुर कभी कभी कालजयी कृति बन जाते है। साहित्यकार आस्था विश्वास,सामाजिक न्याय एवं दर्शन को शदियों से हस्तानान्तरित करते आया है। समय के संवाद को शब्द का अमृतपान कराकर मानव कल्याण हेतु लिपिबध्द करते आया है, जो साहित्यकार की वचनबध्दता है । साहित्यकार सामाजिक मूल्यों की स्थापना के लिये प्रतिबध्द होता है क्योंकि साहित्यकार/लेखक के माध्यम से विचार आगे बढता है। पाठकों तक पहुंचते है । रचनाकार के माध्यम से आगे बढे विचार वाद से मुक्त होते हैं । राष्ट्रीय एकता सामाजिक समरसता एवं मानवीय समानता को समर्पित रचनाधर्मिता ही लेखक को लोकप्रयिता के शिखर पहुंचा सकती है ।

लेखक वैचारिक रूप से प्रतिबध्द होता है । वैचारिक प्रतिबध्दता लेखकीय स्वतन्त्रता को बाधित नही करती है । हां यदि विचार कट्टरवादिता के शिकार हो जाते है लेखकीय स्वतन्त्रता पर प्रतिघात होता है । यह प्रतिघात रूढवादिता को द्योतक होता है । विचार रूढवादिता,धर्मान्धता अथवा जातीयता से ओतप्रोत हो जाते है तो वास्तव में ये विचार विचार नही रह जाते । लेखक भी विवाद के घेरे में आ जाता है । यदि रचनाकर अपने दायित्व के प्रति प्रतिबध्द है तो कबीर की भांति उसके विचारों को मूर्त रूप अवश्य मिलेगा ।उसके पाठको/समर्थको/शुभचिन्तको का लम्बी जमात खडी हो जायेगी परन्तु रचनाकार द्वारा दिया गया विचार कल्याणकारी हो,बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का मन्तव्य रखता हो । यदि रचनाकार विषयवस्तु के साथ न्याय करता है तो ऐसे विचार सभ्य समाज के बीच जरूर जगह बना लेते है ।

लेखक/साहित्यकार को सर्वोच्य स्थान प्राप्त है । रचनाकार महज रचनाकार ही नही होता इसके अतिरिक्त भी वह और भी बहुत कुछ होता है । राजनेता सिर्फ राजनेता होता है।राजनेता से कही अधिक लेखक का उत्तरदायित्व समाज के प्रति बनाता है ।इस उत्तरदायित्व का निर्वहन रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से पूरा करता है । लेखक जनसमान्य के लिये भी आदर्श होता है । जनसामान्य लेखक के व्यक्तित्व

को उसकी रचनाओं में ढूढता है । इन्ही जनसामान्य के माध्यम से लेखकीय विचार आगे बढते है । सर्वमंगलकारी मानवमात्र को विचार इतिहास रचते है ।
सच्चा रचनाकार व्यक्ति विशेष को खुश करने अथवा पुरस्कार पाने के लिये नही लिखता । वह तो देश और समाज के हितार्थ लिखता है । चमक दमक से दूर आंकाक्षाओं को खुद के वशीभूत किये हुए सर्वकल्याणार्थ लेखन कर्म में जुटा रहता है । वह अपने विचार को समय की कसौटी पर तराशकर समाज को देता है ।ऐसे विचार जनमानस को काफी सीमा तक प्रभावित करते है ।लेखक का विचार गंगाजल की तरह होता है । उसके विचार समाज देश के भले के लिये होते है । भले ही रचनाकार/साहित्यकार समाज देश के भले की अभिलाषा में रूगणावस्था में पहुंच जाये । लेखक अपनी प्रतिबध्दता से विचलित नही होता । उसे तो बस समाज को कुछ देने की ललक रहती है । यही ललक उसे एक अलग पहचान देती है।समय का पुत्र बना देती है ।
लेखक के विचार रूके हुए नही होते समय के साथ आगे बढते रहते है। लेखक का उद्देश्य होता है कि लेखनकर्म के प्रति उसका समर्पण समाज को ऐसा विचार दे जिससे समाज का हित सध सके ,सामाजिक बुराईया के खिलाफ लामबन्द स्थिति बने जो सामाजिक सद्भावना एवं समरसता स्थापित कर सके । लेखक की प्रतिबध्ता ही उसके विचार की गतिशीलता का परिचायक है । बहुजन हिताय को केन्द्र बिन्दु में रखकर लेखन करने वाले लेखक के विचार तो थमे नही। यदि विचार रूकता है तो वह किसी ना किसी वाद अथवा रूढवादिता का शिकार होता है । ऐसे विचार रूके हुए पानी की तरह होते है जो समाज को स्वस्थ नही कर पाते हां बीमारियां जरूर परोसते है ।सच्चा रचनाकार ऐसे विचारों को कभी भी पर नही लगाता क्योंकि ऐसे विचारों के आघात की नब्ज को वह पहचानता है। सच्चे विचार समाज को दिशा देते है। लेखक पहले एक व्यक्ति होता है जो लेखक/साहित्यकार व्यक्ति बने रहकर रचनाधर्मिता का निर्वहन कर रहे है। ऐसे मानवतावादी कलमकारों को कोटिशः नमन् ।

नन्दलाल भारती

वर्तमान समय में साहित्यकारों की भूमिका

साहित्यकार आस्था विश्वास,सामाजिक न्याय एवं दर्शन को शदियों से हस्तानान्तरित करते एवं समय के संवाद को शब्द का अमृतपान कराकर मानव कल्याण हेतु लिपिबध्द करते आ रहे है । साहित्यकार अपनी भूमिका से नही विचलित हुए हैं । वर्तमान पीढ़ी के साहित्यकार भी समाज एवं राष्ट्र को सच्चें एवं अच्छे विचारों से सुदृढ कर रहे हैं। वर्तमान समय में साहित्याकारों की भूमिका और अधिक विस्तृत हुई है । साहित्यकार, राष्ट्र एवं सामाजोपयोगी चिन्तन के मुद्दे अपनी रचनाओं के माध्यम से

सहज ही उपलब्ध करवा रहे हैं, जो समाज को सुदृढ बनाने में मील के पत्थर साबित हो रहे है ।

साहित्यकार अपनी भूमिका पर तटस्थ है । आजादी के दिनों में साहित्यकारो ने जिम्मेदारी के साथ अपनी भूमिका निभायी । साहित्यकारों की कलमें जातीय–धार्मिक उन्माद,श्रेष्ठता–निम्नता, गरीबी –अमीरी से उपजी सामाजिक पीडा के आक्रोश को कम करने के मुद्दे पर खूब चली है और आज भी थमी नही है । संकट के दौर में भी साहित्यकार, समय की नब्ज को पहचान कर लेखन कर रहे है । साहित्यकार महज रचनाकार ही नही होता । वह सद्भावना सभ्यता संस्कृति लोककथाओं और नेक परम्पराओं को लिपिबध्द कर हस्तान्तरित भी करता है जो समाज राष्ट्र को दिशा निर्देशित करने के लिये जरूरी भी होता है । यही वजह है कि जनसामान्य साहित्यकार के व्यक्तित्व को उसकी रचनाओं में ढूढता है जो साहित्यकार के तटस्थ भूमिका का द्योतक है ।

साहित्यकार वैचारिक रूप से प्रतिबध्द होता है । वैचारिक प्रतिबध्दता लेखकीय स्वतन्त्रता को बाधित नही करती है । यदि विचार कट्टरवादिता / रूढवादिता के शिकार हो जाते है तो लेखकीय स्वतन्त्रता पर प्रतिघात होता है । ऐसे विचार मानवता के प्रति न्याय नही कर पाते । साहित्यकार भी विवाद के घेरे में आ जाता है । साहित्यकार अपनी भूमिका के साथ न्याय करता है तो ऐसे विचार सभ्य समाज के बीच जरूर मान्य होते हैं । साहित्यकार अपनी भूमिका के प्रति प्रतिबध्द है, उनके विचार कल्याणकारी है ,बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का मन्तव्य रखते है तो कबीर की भांति उनके विचार अवश्य स्मरणीय एवं पथप्रदर्शक बन जाते हैं ।

वर्तमान दौर साहित्यकारों के लिये संकट का समय है । वह संघर्षरत् रहकर भी सक्रीय लेखनकर्म से जुडा हुआ है । कुछ सौभाग्यशाली साहित्यकारों को छोड़कर, दूसरे साहित्यकारों के विचार पाठकों तक नही पहुंच पा रहे है। भला हो साहित्यिक पत्र पत्रिकाओं का जो साहित्यकारो / नवोदित साहित्यकारों को आक्सीजन देने का काम कर रहे है । अधिकतर साहित्यिक पत्र–पत्रिकायें भीं संकट के दौर से पीड़ित है परिणाम स्वरूप रचनाकारों को पारिश्रमिक देने में असमर्थ है । हां हौशला जरूर बढा रहे है । हौशले और सम्भावनाओं के उड़नखटोले पर साहित्यकार अपनी भूमिका के प्रति तटस्थ है,जबकि न तो रायल्टी का सहारा है और नही कोई अन्य सरकारी सहयोग । साहित्यकार जरूरतों में कटौती कर अथवा रीन–कर्ज करके किताब छपवाने की हिम्मत जुटा भी लेते है तो उसके लिये बाजार उपलब्ध नही हो पाता, क्योकि वह पुस्तक बेचने का कार्य नही कर सकता । परिणाम स्वरूप किताबे सन्दूकों में बन्द होकर रह जाती है ।

आज चिन्तन का विषय है कि रचनायें पाठको तक पहुंचे कैसे । साहित्यकारों को चाहिये साहित्यिक संस्थाओं के माध्यम से स्वयंसेवी संस्थाओ का निर्माण करें तथा सरकार से अनुदान प्राप्त कर पुस्तक प्रकाशन एवं विक्रय स्वयंसेवी संस्थाओ के माध्यम से करें । सरकार दूसरी अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं को अनुदान दे रहीं है । साहित्यिक–स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद सरकार अनुदान दे कर कर सकती है। संकट के दौर से गुजर रहे साहित्यकारों एवं साहित्यिक संस्थाओं की मदद के लिये सरकार को आगे आना चाहिये । साहित्यकारों के संघर्ष को स्वीकार करें , मूल्यांकन करें और उचित सहयोग दे । आज का पाठक जो किताबों से दूर जा रहे है, उन पाठकों को भी साहित्य के महायज्ञ में आहुति देनी होगी । दुनिया जानती है साहित्यिक एवं किताबी ज्ञान अन्य माध्यमों की तुलना में कही ज्यादा बेहतर और जीवनोपयोगी होता है ।

प्रेमचन्द को उनके सामाजिक न्याय के क्षेत्र में दिये गये योगदान को कभी नहीं भूलाया जा सकता है । सामाजिक कुरीतियों और नारी शोषण पर आधारित उनकी रचनायें कर्तव्यबोध, समाज को जोडने एवं सद्भावनापूर्ण वातावरण निर्मित करने में अहम् भूमिका निभायी हैं । वर्तमान समय में भी सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता के क्षेत्र में अच्छे साहित्य का सृजन हो रहा हैं । परिवर्तन तो वैचारिक क्रान्ति से आता है। वर्तमान दौर में अन्य साधनों की घुसपैठ की वजह से जनमानस किताबों से दूर होता जा रहा है । ऐसे दौर में आवश्यक हो गया है कि लेखको के विचार उनकी रचनायें गांव एवं शहर के पाठकों तक पहुंचे और आवाम के बीच चर्चा का विषय बने। यथार्थ के धरातल पर भारतीय अस्मिता जो हमारे देश के धर्म आध्यात्म,योग विज्ञान और साहित्य के रूप में विराजमान है वह दुनिया के लिये गर्व का विषय है। यह रचनाकारों के परिश्रम की फल है । आज भी उम्मीदों का सोता सूखा नही है,रोजागरोन्मुखी शिक्षा /नैतिक शिक्षा ,सामाजिक समानता एवं न्याय,सामाजिक बुराईयों–दहेज,भ्रूण हत्या ,गरीबी उन्मूलन, राष्ट्र हित,देश–जोड़ो आदि मुद्दों पर साहित्यकार कलम चलाने के लिये प्रतिबध्द हैं । देश और समाज हित में यह जरूरी भी है । आज साहित्यकार संकट के दौर से गुजर रहे है। कब तक वे अपनी जरूरतों की होली जलाकर जहां रोशन करेगे। साहित्यकारों के बारे में भी सरकार को सोचना चाहिये। उनके हितार्थ कदम उठाने चाहिये। सरकारी स्तर पर परिचय पत्र जारी करने चाहिये । उनके आवागमन के लिये न्यूनतम् दरों बस,रेल की टिकट उपलब्ध करायी जानी चाहिये एवं प्रवास के दौरान अन्य आवश्यक सुविधाये सरकार की ओर से न्यूनतम् दर पर मिलनी चाहिये । साहित्यकार की प्रतिबधता पर सरकार को ईमानदारी से विचार कर संरक्षण प्रदान करने का वक्त आ गया है । पाठकों तक साहित्य आसानी से पहुंच सके इसके लिये सरकार और सरकारी अनुदान प्राप्त स्वयंसेवी

संस्थाओं को भी आगे आना चाहिये । पाठकों तक जब साहित्य पहुंचेगे तभी साहित्यकार को सकून मिलेगा और ऐसी पूरी सम्भावना भी है । सच, अंधियारा चाहे जितना भी गहरा क्यों न हो वह सुबह तो जरूर आयेगी जब संकट के दौर खत्म होगे । गर्व की बात है कि साहित्यकार अपनी भूमिका जिम्मेदारी के साथ निभा रहे है, यही दायित्वबोध साहित्यकार को समय का पुत्र बनाता हैं ।

साहित्यकार के विचार रूके हुए नही होते समय के साथ आगे बढते रहते है। साहित्यकार का उद्देश्य होता है कि उसके लेखनकर्म से समाज एवं राष्ट्र का हित सधे ,सामाजिक बुराईया के खिलाफ आवाज उठे । सामाजिक सद्भावना एवं समरसता का वातारण निर्मित हो । साहित्यकार की प्रतिबध्ता ही उसके विचार की गतिशीलता का परिचायक है । बहुजन हिताय बहुजन सुखाय को केन्द्र बिन्दु में रखकर लेखन करने वाले साहित्यकारो के विचार तो कभी थमे नही है । सच्चे और अच्छे विचार समाज को दिशा देते है । ऐसे विचार रचनाकार के हृदय से ही उपजता है । सामाजिक स्तर पर भी साहित्यकार मूल्यों का सजग प्रहरी है। व्यक्ति के स्तर पर साहित्यकार पीड़ा सहने की शक्ति देता है और सम्भावनाओं के साथ जीने की ललक पैदा करता है । आतंक,शोषाण,उत्पीड़न बर्बरता और बुराईयों के खिलाफ साहित्यकार की भूमिका और अधिक तटस्थ हो जाती है । यही तटस्थता लेखन को अमरता प्रदान करती है । वर्तमान समय में साहित्यकार मुश्किलों के दौर से गुजरते हुए भी अपनी भूमिका बड़ी जिम्मेदारी के साथ निभा रहे है । देखना है क्या सरकारें और आज के पाठक अपनी भूमिका जिम्मेदारी के साथ निभा पाते है ?

वक्त गवाह है साहित्यकार तटस्थ है अपनी भूमिका पर आज के इस दौर में भी । वह अपनी भूमिका को नैतिक दायित्व एवं कर्तव्यबोध की तुला पर तौल कर सृजन कार्य कर रहा है क्योंकि वह भौतिकवाद,पाश्चात्य संस्कृति के कुप्रभाव और नैतिक मूल्यों में आ रही गिरावट से आहत है । नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना के लिये व्यग्र है। समय के साथ सामंजस्य बिठाकर स्वामी विवेकानन्द के पद चिन्हों पर चलते हुए गर्जना कर रहा है समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिये ,युवाशक्ति को जागृत करने के लिये । बुराईयों पर कुठराघात करने के लिये । सद्भावनापूर्ण एवं सभ्य समाज के निर्माण के लिये । कर्तव्यबोध एवं नैतिक मूल्यो की पुर्नस्थापना के लिये । अमन शान्ति के लिये और सुरक्षित कल के लिये । यही वक्त की मांग है और वर्तमान समय में साहित्यकार की भूमिका भी ।

नन्दलाल भारती

।। धौंस आतंक का पर्याय है।।

धौंस सुनने में भले ही प्रलयकारी नही लगता हो पर आतंक का पर्याय है । कमजोर का दमन,भविष्य की कागदृष्टि कर्तव्यपरायणता पर कुठराघात,नेक मन्तव्य की बाधा, योग्यता के दामन आंसू ,भविष्य के साथ खिलवाड़ और भी बहुत भयावह है धौंस । धौंस के धमाके भले ही गगन भेदी न हो पर कमजोर व्यक्ति को मुंह के बल जरूर गिरा देता है। उसे उठने और सम्भलने में बहुत वक्त लग जाता है और इस वक्त में वह बहुत पीछे छूट जाता है । पद–दौलत के अभिमान में कुछ लोग कूचलने की साजिशे रचते रहते है । दहश्त पैदा करते रहते है ताकि दीन तरक्की की दौड़ में पिछड़ा,कर्मयोगी, हर मायने में योग्य होकर भी अभिमानियों के सामने सिर लटकाये खड़ा रहे । ये अभिमानी हिटलरशाही चलाते रहे । इन हिटलरों के पिछलगू भी आग में घी डालने से तनिक भी परहेज नही करते चाहे वे गुलाम ही क्यों न हो हिटलरों के । ये जी–हजुरी करने वाले, हर तरह से गुलामी लोग हिटलर आकाओं की सह पर सच्चे कर्मयोगियों की राह में भी कांटे बिछाते रहते है । आकाओं से धौंस दिलवाते रहते है ताकि आकाओं को खुदा मानने वाले छुट भइये भी सीधे साधे अपनी राह पर चलने वाले परमार्थ का विचार रखने वाले, जो सचमुच में सम्मान के पात्र होते है । इनहे ये अमानुष लोग खुद धमकाते है यदि उनकी धौंस काम नही करती है तो आकाओं से धमकवाते है । आकाओं के सह में चापलूस / मवाली किस्म के लोगों के धौंस से उपजे तूफान से कमजोर आदमी के सपने तहस नही हो जाते है। प्रतिभाओ के दमन हो जाते है । भविष्य बर्बाद हो जाता है । सम्मान का पात्र होकर भी नेक आदमी अपमानित होता रहता है हिटलरों की महफिलों में । सच धौंस आतंक है,तूफान है जो अहंकारियों द्वारा उत्पन्न किया जाता है गरीबी,शोषण उत्पीड़न का दंश झेल रहे पद–दौलत से कोसो दूर पड़े व्यक्तियों को काबू में रखने के लिये ।

धौंस, आतंक का पर्याय है। किलर है जान–माल और मान मार्यादा का भी। धौंस से उपजे भय से अदना सभ्य समाज के साथ चलने वाला और नेक सपने बोने वाला राह बदलने के बारे में सोचने लगता है । धौंस शब्दभेदी बाण है जो अंहकारी लोग अपना दबदबा बनाये रखने के लिये छोडते है । यह बाण दीनहीन कमजोर वर्ग और ऐसे प्रतिभावानों को निगलता रहता है । लतियाता रहता है ताकि ये लोग सिर न उठा सके। धौंस शब्दों का जूता भी है जो दबे कुचले लोगों पर प्रहार तो करता ही है आदमियत की हत्या भी करता है ।

अम्बेडकर जयन्ती की पूर्व सन्ध्या पर मिस्टर.एन के साथ धौंस का नंगा खेल खेला गया। मि.एन.के माथे धौंस के जो धमाके हुए, उसकी पडताल प्रस्तुत करने से पहले मि.एन के बारे में जानना भी जरूरी होगा । मि.एन मानवतावादी और एक अच्छे पढे लिखे इसांन थे जो ऊंची पहुंच न होने के कारण नौकरी की दौड़ में काफी पिछड़ गये ।उन्हे कई बरसों की बेरोजगारी का दंश झेलने के बाद एक नन्हे से कर्मचारी की

हैसियत से सेवा का मौका मिला तो जरूर पर उत्पीड़न शोषण और धौंस के आतंक का शिकार बार बार होते रहे और तरक्की उनसे दूर कर दी जाती रही। कम्पनी में उनकी अहमियत एक हारे हुए सिपाही से कमतर थी । हिटलर किस्म के लोग ही नहीं अदने लोग भी खून के आंसू रह–रह कर देने से तनिक भी नही चूकते थे । हिटलरों की सह में छोटे मुंह लगे और गुलामी की मानसिकता रखने वाले लोग भी मि.एन को घाव दे ही देते थे ।

अम्बेडकर जयन्ती की पूर्व सन्ध्या पर अधिकारी मि.जेड जैसे कालबेल पर बैठ गये थे । प्यून,मि.जे. मि.जेड के कक्ष से जो सम्भवतः मि. एन की शिकायत कर बाहर ही निकला था कि पुनः हाजिर हुआ । अधिकारी महोदय ने मि.एन.को तुरन्त हाजिर होने का हुक्म दिया । मि.जे. जीते हुए आतंकी की तरह आंखें तरेरते हुआ बद्तमीजी से बोला वो मि.एन बुला रहे है । मि.एन. मि.जेड साहब के सामने हाजिर हुआ । मि.जेड साहब ने मि.एन को उपर नीचे देखा जैसे एक थानेदार अपराधी को देखता है । मन ही मन कुछ विचार कर बैठने का हुक्म दिये । फिर बोले मि.एन.क्यों मि.जे को गाली देते रहते हो । बार–बार तुम्हारी शिकायत लेकर आता है । पहले भी तुम उसके साथ बदतमीजी कर चुके हो । अभी भी नही मान रहे हो । मि.एन सफाई में कुछ कहते उसके पहले मि.जेड ने धौंस का जूता मारना शुरू कर दिया । पहला जूता मि.जेड ने इस तरह मारते हएु बोले– मि.एन.तुमको पता है इस कम्पनी में तुम जैसे कई लोग तीस मार खा बनते है जिस दिन पहिया लग गया अर्थात ट्रान्स्फर हो गया ना घूमते रह जाओगे । कोई हाथ नही लगाने वाला मिलेगा । दूसरा जूता– मि.बी.को तो जानते ही हो बड़ा तुरमखान बनता था । इा.ए. साहब ने सारी हेकड़ी निकाल कर रख दी थी । छत्तीसगढ भेज दिया ।काले पानी की सजा मिल गयी थी उसे। वह भी ऐसी हालत में कि हाथ टूटा हुआ था । हाथ में राड पड़ी थी। वहां भी ऐसी फजीहता हुई की खून के आंसू बहे जबकि के मि.बी. के पक्षधर तो नीचे से लेकर उपर तक बड़े–बड़े अधिकारी थे । डा. ए.साहब के आगे किसी की एक न चली थी। । तीसरा धौंस का जूता–मि.टी.को भी जानते हो । वह भी समझता था कि उसके बिना कम्पनी नही चलेगी । भेज दिया , आदिवासी इलाके में अब पागल हो गया है । क्या चाहते हो तुम ? अपने दफतर में भी कई तीसमारखां मौजूद है, जो समझते है वही कम्पनी चला रहे है । वे गलतफहमी में जी रहे है जिस दिन पहिया लग गया हवा में झूलते नजर आयेगे । यह थी दैनिककर्मी मि.जे.की झूठी शिकायत का असर सिर्फ इसलिये की मि.एन.उसे दफतर के काम के लिये न कहे और उससे भयभीत रहे क्योकि मि. जे. मि.जेड साहब का खास था और उसका कुनबा बेगारी में लगा हुआ था । न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता के बाद भी पी.एच.डी.होल्डर्स के कान कान चुके कई बार मि.एन को खून के आंसू रूला चुके मौकापरस्त मि.जेड साहब ने 25 साल से कम्पनी में कार्यरत मि.एन. के साथ हिटलरी कार्रवाई सिर्फ स्वार्थसिध्दि के लिये की। धौंस से उपजी आतंक

के शोले गली–गुचों से लेकर सीमाओ पर पहले भी देखे जा रहे थे और आज भी देखे जा रहे हैं। ऐसे हालात में क्या प्रश्न नही उठता कि पद–दौलत के अहंकार / अभिमान अथवा सामाजिक बिखण्डिता की आड़ में मतलबवस मि.जेड जैसे लोग वफदार,कर्मयोगी निरापद/ प्रतिभावान आदमियत की राह चलने वाले मि.एन. जैसे कमजोर लोगों को धौंस के आतंक से भयभीत कर अपना मतलब कब तक साधते रहेगे । क्या पीड़ित वर्ग धौंस के आतंक की पीड़ा से उपजे आक्रोश से आतंक का पर्याय बने हिटलरो का मुकाबला नही कर सकता ? क्या आतंक की पीड़ा से उपजे आक्रोश से आज के हिटलर उबर पायेगे यदि भुगतभोगी छाती तानकर खड़े हो जाये तो । ऐसी स्थिति बने उससे पहले

रूतबे के अहंकार से धौंस का आतंक मचाने वाले लोग आदमियत का सबूत दे वरना वह दिन दूर नही जब पीड़ित विरोध का ऐलान कर दे । यदि ऐसा न भी हुआ तो एक दिन समय समूल उखाड़ फेकेगा अथवा वे खुद हिटलर की तरह आत्मदाह कर लेगे । दीन–दुखियों,वफदार,कर्मयोगी निरापद/ प्रतिभावान आदमियत की राह चलने वालों का सब्र धौंस देने वालो का सम्भलने का मौंका अभी भी दे रहा है । खौफ पैदाकर अपना मतलब पूरा करने वाले,दीन दुखियों का शोषण,उत्पीड़न करने वाले कब आदमियत का दामन थामते है । देखना है वर्तमान के हिटलर कब अपने पापों का प्रायश्चित कर योग्य,कमजोर,दीन–दुखियों पीड़ितों शोषितों को सम्मानजनक स्थिति में जीने का मौका कब देते है ? अथवा धौंस के बारूद पर एक बड़े वर्ग का हक छिन कर तबाह करने की साजिश रचते रहते है ? कब तक मानवाधिकारों को लतियाते रहेगे ?

आशा तो की जा सकती है कि अंगुलीमाल के तरह मौकापरस्त लोग आदमियत के महत्व को समझेगे और धौस जैसे आतंक को त्याग कर अगला जन्म अच्छा हो विचार करेगे । यदि इंसान को आसूं देने वाले, दीन दुखियों दुख के समन्दर मे ढकेलने वाले और दूसरों के हक छिनने वाले, धौंस के शोले उगलने वाले, अमानुष लोग मानवता का दामन नही थामें तो यकीनन वे अपना कई जन्म बिगाड़ लेगे क्योंकि कमजोर दीन दुखियों की आहे बेकार नही जाती । देर से ही सही पर असरकारी होती है। तानाशाह हिटलर पर भी तो हुई थी। तंग आकर आत्मदाह कर लिया था दुनिया का सबसे बड़ा दमनकारी । अरे दीन–दुखियों को आसूं देने वाले अब तो चेतो ।

नन्दलाल भारती

।। पुस्तक पढने की आदत स्वाभिमान की अभिवृध्दि है।।

वैश्वीकरण एवं भूमण्डलीयकरण के वर्तमान दौर में सामाजिक ,सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्य झंझावतों के शिकार हो गये है । छात्र नैतिक मूल्यो एवं पढने की आदत से दूर अनिश्चितता तथा बेचैनी के दौर से गुजर रहे है । सामाजिक तथा चारित्रिक मापदण्डों में भी बदलाव आने लगे है । ऐसे समय में हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र–निर्माण हो,मानसिक शक्ति बढ़े, बुध्दि विकसित हो और मनुष्य अपने पैरो पर खड़ा होना सीखे । स्वामी विवेकानन्द के उक्त विचार को आत्मसात् करने की अत्यन्त आवश्यकता है ।

सच शिक्षा भी ऐसी ही होनी चाहिये परन्तु दुर्भाग्यवस आज छात्र पाश्चात्य संस्कृति एवं चकाचौंध की अंधी दौड़ में साहित्यिक और चारित्रिक निर्माण की पुस्तकों से दूर होते जा रहे हैं । अनिश्चितता तथा बेचैनी के दौर में छात्रों में हिंसक प्रवृति घर करने लगी है । छात्र द्वारा स्कूल परिसर में गोलीबारी और साथी छात्र की हत्या ऐसी खबरें ज्वलन्त उदाहरण है । आज भले ही आर्थिक उन्नति के शिखर पर आज का युवा पहुंच गया हो पर इतना तो यकीन के साथ कहां जा सकता है कि नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों में गिरावट आयी है,जो चिन्ता का विषय है । इस गिरावट को रोकने के लिये साहित्यिक पुस्तकों का अध्ययन जरूरी हो गया है । साहित्यिक पुस्तकों का अध्ययन नैतिक मल्यों के पोषण एवं चरित्र निर्माण मे महत्वपर्ण भूमिका निभा सकते है बशर्ते छात्रों में पुस्तक पढने की दृढ इच्छा विकसित हो ।

वर्तमान समय के सामाजिक ताने बाने पर दृष्टिपात किया जो तो यह उभर कर आता है कि छात्रों को साहित्यिक पुस्तकों से दूर रखने में संयुक्त परिवार की टूटन और रिश्तों में सिकुडन काफी हद तक जिम्मेदार हैं। कुछ दशक पूर्व बच्चे दादी–दादी,नाना–नानी एवं नजदीकी रिश्तेदारों के सानिध्य में पलते बढते और पढते थे। आज बच्चों को न लोककथाओं पर आधारित कहानी किस्से एवं लोरियां सुनने को मिल रहे है और ना ही पारम्परिक खेल खिलौने की वस्तुये। .....

खेल खिलौने के नाम पर बच्चों के हाथ आ रही है बन्दूकें, अन्य ऐसे खिलौने,टी.वी ,हारर मारधाड़,खून–खराबे एवं एक्शन वाली फिल्मों एवां पाश्चत्य संस्कृति ने नैतिकदायित्व,चारित्रिक एवं सांस्कृतिक निर्माण में सहायक कथा साहित्यों पर जैसे डाका डाल दिया है । आज बच्चों के सामने एकल परिवार का रेगिस्तान पसरा है जहां से रिश्ते का सोंधापन गायब हो चुका है । जिसकी वजह से लोककथाओं एवं

सद्साहित्य को पढने की अभिरूचि कम होती जा रही है । लेखकों एवं छात्रो के परस्पर सहयोग से पढने की प्रवृति में अभिवृध्दि की पूरी गुंजाइस है बशर्ते लोककथाओं एवं साहित्य को छात्रो के सामने ज्ञानवर्ध्दक एवं मनोरंजक अन्दाज में प्रस्तुत किया जाये ,जिससे छात्रो में साहित्य के उपयोगिता के बारे में सोचने समझने की शक्ति विकसित हो तथा पढने की आदत में अभिवृध्दि हो । इसके लिये लेखको के साथ समाज को मिलकर जागरूकता अभियान चलाना होगा ।

पुस्तक देती है सर्वोत्तम ज्ञान ऊचाईयों का शिखर और स्वाभिमान में अभिवृध्दि भी । लेती है क्या ? कुछ भी नहीं । संस्कारवान समाज की अभिलाषा में चारित्रिक निर्माण एवं बुध्दि के विकास के लिये साहित्यिक किताबे पढना हेागा । पढने की आदत में अभिवृध्दि कर नैतिक मूल्यों सास्कृतिक धरोहरो एवं सस्कारों की रक्षा की जा सकी है । साहित्यिक पुस्तकों का अध्ययन प्रार्थना अथवा पूजा की भांति करना होगा। । इस काम को लेखको ने तो आत्मसात् कर रखा है । जिसकी वजह से संघर्षरत् रहकर भी इस पुस्तक लेखन और पढने की आदत को पुष्पित करने के लिये प्रतिबध्द है । लेखको के त्याग का प्रतिफल है कि आज भी नैतिकता और सदाचार का सोधापन कुसुमित है । इसमें अभिवृध्दि की पूरी सम्भावनाये है । इस बेचैनी और अनिश्चितता के झंझावत से साहित्यिक पुस्तकें और साहित्यकार उबार सकते है परन्तु जरूरत है साहित्यकारों के संघर्ष को समझने की, साहित्य एवं साहित्यिक किताबों कहानी संग्रह,काव्य सग्रह,उपन्यासो एवं लोक कथाओं को मान देने की । नैतिक मूल्यों को पोषित करने की ।

सर्व विदित है कि साहित्यिक पुस्तकें पढने से न केवल सामाजिक बदलावों की जानकरी मिलती है बल्कि चरित्र निर्माण बुध्दि विकास के साथ भाषा को अच्छी तरह से जानने समझने की समझ भी विकसित होती है । छात्रों को चाहिये कि साहित्यिक पुस्तके एकाग्रता के साथ पढे तथा पढते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखें ।

- साहित्य रचना काल खण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करे, इससे ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में जानकारी बढेगी। जानकारी की पिपासा पुस्तकें पढने को उत्प्रेरित करेगी । साहित्य रचना काल खण्ड की जानकारी जीवन में काफी

उपयोगी साबित हो सकती है क्योंकि सभ्यता,संस्कृति सदाचार ,नैतिक मूल्यों के पोषण के आदर्श तो कालखण्ड की कोख से उपजते है । यही जीवन के आदर्श निर्मित करते है । इसलिये रचना के कालखण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त कर सभ्यता और सस्कृति के बारे में ज्ञान अर्जित किया जा सकता है ।

- पुस्तकों का अध्ययन करते समय साहित्य की विभिन्न विधाओं का तुलनात्मक दृष्टि से समझे ।

- कोर्स की विषयों के साथ साहित्यिक पुस्तके भी पढें ,मूल तथों को लिखे और साथियो के से चर्चा भी करें ।इससे पढने की आदत में विकास तो होगा ही विचार मंथन की प्रेरणा भी मिलेगी ।

- पुस्तकालयों में बैठकर पढने की आदत डाले, वहां मनचाही साहित्यिक पुस्तके मिल सकती है । सम्भव हो सके तो छात्र / पाठक भी अपने कमरे को लघु पुस्कालय के रूप में विकसित करे । यह लघु पुस्तकालय चमत्कारिक परिवर्तन ला सकता है ।

- लक्ष्य निर्धारित कर समय प्रबन्धन का ध्यान रखें जिससे पाठ्यक्रम भी प्रभावित न हो । छात्र कोर्स की पुस्तके खूब पढे पर साहित्यिक पुस्तकों को नजरअंदाज न करे । ऐसी समयसाारिणी बनाये जिसमें साहित्यिक पस्तकों को उचित समय मिले । ये साहित्यिक पुस्तक नैतिक चारित्रिक उन्नति में सहायक तो होती ही है बुध्दि विकास में भी सहायक हाती है ।

- साहित्यिक पुस्तकों से रोज कुछ नये शब्द लेकर उनका व्यावहारिक प्रयोग करें । इस तरह का व्यावहारिक प्रयोग छात्रों के शब्दकोष के साथ स्वाभिमान को भी बढाता है ।

समकालीन साहित्य को समझने के साथ गोष्ठियों,कार्यशालाओं एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन पढनें की आदत को पाषित करने में मील के पत्थर साबित हो सकते है । छात्रों का चाहिये कि वे पाठय-पुस्तकों के अतिरिक्त अपनी पढाई में साहित्यिक पुस्तके,साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं को शामिल करें । पत्र सम्पादक के नाम अपने आसपास की समस्याओं को लिखकर भेजे । छपने के बाद उन्हे पढे । देखे कि उनके लिखे पत्र को कितना संशोधित कर छापा गया है । अपनी गलतियों को सुधारने का प्रयास करे । पाठ्य पुस्तकों के साथ साथ साहित्यिक पुस्तके पढना सोने पर सुहागा साबित होगा । छात्रों को अधिक से अधिक साहित्यिक पुस्तके पढना चाहिये क्योंकि साहित्यिक पुस्तके चारित्रिक निर्माण

की पाठशाला होती है। साहित्यिक पुस्तकें भरपूर उपलब्ध है,पुस्तकालय भरे पड़े है । वर्तमान में खूब लिखा भी जा रहा है । जरूरत है पढने की आदत विकसित करने की । बेचैनी और अनिश्चितता से फुर्सत पाने की । साहित्यिक पुस्तकों के पाठन कर्म अर्थात प्रार्थना से जीवन सुवासित करने की ।

सभी आदतें खराब नही होती । यदि साहित्यिक पुस्तक पढने की आदत विकसित हो जाये तो इससे अच्छी बात कुछ हो नही सकती । बच्चों को पढने के लिये उत्प्रेरित करने के लिये बड़ों को भी अपने पुस्तक प्रेम को दर्शाना होगा । बच्चों का साथ देना होगा । साहित्यिक किताबों को अपने संग्रह में शामिल कर पढना होगाा यकीनन बड़ो के साहित्य प्रेम को देखकर बच्चे आर्कषित होगे क्योंकि प्रथमपाठशाला तो घर ही होता है तो हम क्यो ना अजमाये ? बच्चो को इक्ट्ठा कर उन्हे कहानी कविता सुनाये अथवा समसामयिक विषयों पर वार्ता करें । प्रारभ्मिक दौर में बच्चे पसन्द तो नही करेगे पर धीरे धीरे उन्हे भी आनन्द आने लगेगा और वे साहित्यिक पुस्तको को पढने को उत्सुक होगे । अन्ततः उनमें साहित्यिक पुस्तके पढने की आदत विकसित होगी । बच्चों को लेखकों से मिलवाना,कविगोष्ठी एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम में ले जाना तथा उन्हे भाग लेने के लिये उकसाना भी पुस्तक मोह को बढावा देगा । अभिभावक उपहार तो बच्चों को उनके जन्म दिन अथवा अन्य खुशी के मौके पर देते रहते है। यदि इन उपहारों मे साहित्यिक पुस्तके शामिल कर ली जाये तो चरित्र निर्माण में ये पुस्तकें अधिक मददगार साबित हो सकती है ।
लेखक अपनी प्रतिबध्दता पर अटल है । वह मीठ–कड़वे अनुभवों के बाद भी साहित्यिक महायज्ञ में ईमानदारी के साथ आहुति दे रहा है । लेखक निरन्तर अपने साहित्य कर्म से समाज सेवा के यज्ञ की परम्परा का निर्वहन कर रहे है । हां इस यज्ञ में हाथ भी जल जाते है, इसके बाद भी वह साहित्य की मशाल से जहां को रोशन करने को आतुर है । नैतिक मूल्यो,सदाचारो, सस्कारों को साहित्य के रूप में कुसुमित किये हुए है । जरूरत है जीवन का जरूरी अंग समझने की । साहित्यिक पुस्तकें पढने की आदत डालने की क्योंकि साहित्यिक पुस्तकें पढने की आदत स्वाभिमान भी तो बढाती है ।

छात्रो में / युवावर्ग में साहित्यिक पुस्तक पढने की आदत विकसित करने के लिये जागरूकता अभियान चलाना होगा । चकाचौंध,पाश्चात्य संस्कृति की अंधीदौड़,हारर मारधाड़ की फिल्मों के दुश्परिणाम से परिचित कराकर साहित्य से जोड़ना होगा । साहित्यिक पुस्तके पढना प्रार्थना अथवा पूजा कर्म के बराबर है इस रहस्य से छात्रो को अवगत कराना होगा । इस जागरूकता अभियान में लेखकों के साथ अभिभावकों को भी आगे आना होगा क्योकि– हमें बच्चों को ऐसी शिक्षा देना है,

जिससे चरित्र–निर्माण हो,मानसिक शक्ति बढ़े, बुध्दि विकसित हो ,संस्कारवान हो और वे अपने पैरो पर खड़ा होना सीखे.....तो क्यो न हम आज से ही अपने घर से इस अभियान की शुरूआत करें । अब तो सर्वमान्य हो गया है कि साहित्यिक पुस्तके पढने की आदत स्वाभिमान की अभिवृध्दि है । नन्दलाल भारती

।। मतदान महायज्ञ है ।।

मतदान महायज्ञ है जो देश और समाज की तरक्की के लिये किया जाता है । यही सच्चे लोकतन्त्र का उजला चरित्र है । दुर्भाग्यबस हमारे नेता देश और समाज से मुद्दों को नजरअन्दाज कर प्रतिद्वन्दियों पर कीचड़ उछालने में लगे हुए है । कोई बुढिया कोई गुड़िया कोई दूसरे को कमजोर खुद को सबल,उजला चरित्र दोहरा चरित्र आदि ऐसे आरोप प्रत्यारोप एक दूसरे पर लगा रहे है । नेता लोग यह बागडोर सम्भालने की दौड़ में सबसे आगे निकलने के लिये ये सब कह रहे । दुख तो इस बात का है कि नेता लोग अपनी ही छवि नही खराब कर रहे है राजनीति दूसरे शब्दों में लोकतन्त्र की छवि खराब कर रहे है । ऐसे वक्तव्य पार्टी विशेष की वफादारी भले ही इंगित करते हो पर देश और समाज के प्रति वफादारी तो नही करते । यह लोकतन्त्र का सम्मान भी नही है और नही मतदाता का।

आजादी के छ' दशक बित जाने के बाद भी बिजली पानी सड़क के मुद्दे पर घड़ियाली आंसू । अरे कब तक इन्ही मुद्दो पर कुर्सी हथियाती जाती रहेगी । हमारा देश कृषि प्रधान है । आज भी हमारा देश गांवों का देश है । गांव तक आज भी मूलभूत जरूरते नही पूरी हो रही है । अस्पताल/ दवा के अभाव में कितने गरीब दम तोड़ दे रहे है । भूमिहीनता अभिशाप बनी हुई है । खेतिहर मजदूरों का जीवन नारकीय बना हुआ है। सामाजिक विषमता आज भी रौद्र रूप में है । सफेदपोश वंचित समाज को भ्रम में रखकर सत्ता के शीर्ष पर तो पहुंच जाते है पर उपेक्षितों, शोषितों,वंचितों को भूल जाते है,फलतः उसी का नतीजा है कि आज विज्ञान के युग में भी मानवीय भेद–भाव है,छूआछूत है, जातीयता का अभिमान सिर चढकर बोल रहा है । समानतावाद के लिये ये सत्ताधारी क्या कर रहे है । कोई ऐसा सत्ताधारी है जिसे बतौर उदाहरण जनता के सामने लाया जा सकता है जिसने जातीय भेदभाव की समाप्ति के लिये संघर्ष किया हो या वंचितों के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ मोर्चा खोला हो अथवा सामाजिक समानता के अर्न्तजातीय विवाह किया हो अथववा जातिवाद के कोढ से ग्रसित भारतीय समाज की मुक्ति के लिये जाति तोड़ो आन्दोलन को बल दिया हो शायद ऐसा कोई नही । उन्हे तो देश की चिन्ता

है ना समाज की बस चिन्ता है तो कुर्सी न खिसकने पाये । धार्मिक उन्माद भी कम नही है। क्या इन समस्याओं के समाधान की पहल राजनैतिक पार्टियों / प्रत्याशियों के लिये मुद्दे बन सकते। यदि ईमानदारी बरती गयी होती तो कम से कम जातीय और धार्मिक उन्माद के ज्वालामुखी नही फूटा करते । मतदान करने से पहले हमें इन मुद्दों के बारे में भी सोचना चाहिये क्योंकि आन्तरिक कलह की मूल जड़े भी तो यही है । देखना होगा कि कौन नेता अथवा कौन सी पार्टी वास्तविक राष्ट्रीय एकता के लिये समानता और सद्भावना की स्थापना करने मे सक्षम साबित हो सकती है ।

लोकतन्त्र के सबसे बड़े प्रहरी का दम भरने वाले देश के नेतृत्व से युवावर्ग गायब है, जबकि कहा तो यहा तक जा रहा है कि भारत युवाओं का देश है । युवाओं का दुर्भाग्य हो गया है कि उनहे दूध की मक्खी के समान दूर रखा जा रहा है । क्या मतदान करने से पहले हमें इस विषय पर नही सोचना चाहिये ? बेरोजगारी के बादल नही छंट रहे है । पढे लिख बेरोजगारी का दशं झेलने को मजबूर है । चपरासी तक की नौकरी के लिये शैक्षणिक योग्यताये सुनिश्चित है । वहीं दूसरी ओर कुछ सत्ता का सुख भोगने वाले कम पढे लिखे अथवा अनपढ है तो क्या यह शिक्षित युवावर्ग के मरते सपनों का प्रतीक नही । क्या हम कुर्सी पर चिपके लोगों को इसका जिम्मेदार नही ठहरा सकते ? देश में अशिक्षा और कुपोषण क्यो कुण्डली मारे बैठी है क्योंकि भ्रष्ट्राचार को आश्रय है इस देश में । भ्रष्ट्राचारी कौन है देश की जनता जान चुकी है । जनता के प्रतिनिधि करोड़ों में खेल रहे है और जनता पेट में भूख ढो रही है । हम मतदाताओं को अब तो सम्भल जाना चाहिये । मतदान करने से पहले हम आत्म मंथन करना होगा । इसके बाद सही प्रत्याशी का चुनाव । हमारा वोट हमारी प्रगति में कहीं बाधक न बने इस बारे में भी तहकीकात करनी होगी ।

आजादी के छः दशक बाद भी सीमा विवाद के मुद्दे नही सुलझे है । हमारे पड़ोस मुल्क रह रहकर गरजते रहते है । सत्ताधीश इन मुद्दे के निराकरण पर ठोस कदम नही उठाते । हां सत्ता मिलने के सौ दिन पूरे होने पर जश्न जरूर मनाते है । यह नही सोचा जाता कि ये जश्न कब तक ? चिन्ता तो उन्हे पांच साल पूरा करने की रहती है । वे भूल जाते है चुनाव पूर्व किये गये वादे और जुट जाते है । पांच साल के बाद फिर हाजिर हो जाते है मतदाताओं के सामने उसी मुद्दो लेकर । जनता से किये गये वादे की नाकामयाबी विरोधी के सिर मढते है । आखिर कब तक ऐसा चलेगा । आज का मतदाता भी सब समझने लगा है । उसे देश और समाज की समस्याये डराने लगी है

। उसकी भी आंखे अब राष्ट्रीय मुद्दो की ओर जाने लगी है । आखिर कब तक वह भूलावे में आता रहेगा ? वह जान गया है मतदान महायज्ञ है पर इस महायज्ञ का प्रतिफल उस तक तो पहुंचे । वह अब देश की खुशहाली के लिये मतदान करेगा । वोट के नाम पर उसके लिये जाति / बिरादरी के कोई मायने नही रहे क्योंकि वह कई बार इस भ्रम में ठगा जा चुका है । अब वह नहीं ठगाना चाहता । वह चाहता है देश की तरक्की । इसी तरक्की में उसकी भी तो तरक्की निहित है । आम आदमी असली आजादी का अनुभव करना चाहता है । यह अनुभव उसे तभी होगा जब बेदाग,ईमानदार,मानवतावादी सच्चे राष्ट्रसेवक संसद तक पहुंचेगे ।

आज मतदादा का मौन प्रत्याशियों के लिये बौखलाहट बना हुआ है ।इसी का परिणाम है कि राजनैतिक पार्टियों को खुद पर विश्वास नही है कि वे सरकार बना पायेगी । ये राजनैतिक पार्टियां गठजोड़ सरकार बनाने की सम्भावना तलाशने लगी है । यह मतदाताओ के जागरूकता का ही परिचायक है । गठजोड़ सरकारें पार्टियों के लिये सबक बनेगी । वह दिन जरूर आयेगा जब ये पार्टियां घडियाली आंसू न बहाकर राष्ट्रहित और मानवतावाद के मुद्दो पर चुनाव लडेगी । यही आज का मतदाता चाहता है ताकि देश में सुख शान्ति हो, देश और समाज तरक्की करे, जाति–धर्म के नाम चौड़ी होती खाईंया पटे, युवावर्ग को रोजगार मिले, आश्रितों को पुख्ता सहारा,डाक्टरो, वैज्ञानिको, इंजीनियरों, मार्गदर्शन करने वालों बुध्दिजीवियों को उचित मान मिले । आज मतदाता सामाजिक,आर्थिक एवं राजनैतिक मुद्दो को देखते हुए राष्ट्रहित में मतदाना करना चाहता है क्योकि **मतदान महायज्ञ है इसका प्रतिफल मतदाताओं को तो मिलना चाहिये । कब तक वह असली आजादी से दूर बैठा रहेगा । मतदाता अब राष्ट्रहित में अपने मताधिकार का प्रयोग करने को प्रतिबध्द है । आज के मतदाताओं के मौन को देखकर यह यकीन से तो कहा ही जा सकता है । भारतीय लोकतन्त्र में यह क्रान्तिकारी कदम होगा ।**

नन्दलाल भारती